ॐ

संस्कृत अनुवाद-शिक्षक

A GUIDE TO SANSKRIT TRANSLATION

Containiug Full Treatment of Sanskrit Syntax in Hindi, useful lists of Hindi-Sanskrit Proverbs and words of every-day use, and Hindi-Sanskrit Glossary.

BY

Prof. RAMCHANDRA SHARMA, M. A.,

HEAD OF SANSKRIT DEPARTMENT,

D. A. V. COLLEGE, JULLUNDUR.

Published by

MOTI LAL BANARSI DASS

Book-sellers & Publishers

Saidmitha, LAHORE.

Second Edition] **1941** *Price 1/8/-*

प्रकाशक
सुन्दरलाल जैन, मैनेजिंग
प्रोप्राइटर, मोतीलाल बनारसीदास
सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर ।

मुद्रक
शान्ति लाल जैन
बम्बई संस्कृत प्रेस,
शाही मुहल्ला, लाहौर ।

ॐ

इदं पुस्तकं

व्याकरणाचार्यस्य श्रीमन्महर्षेः

पाणिनिमुनेः

स्मृतौ

सादरं समर्पयामि

रामचन्द्रः

भूमिका

अनुवाद, मातृ-भाषा के अतिरिक्त, किसी अन्य भाषा को सीखने का एक मुख्य साधन है। संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए संस्कृत व्याकरण का व्यवहार-ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। जब तक विद्यार्थी को अनुवाद द्वारा सरल और शुद्ध संस्कृत लिखने का अभ्यास न हो, तब तक उसके लिए प्रौढ़ संस्कृत लिखना और समझना अत्यन्त कठिन है। वस्तुतः किसी भाषा का यथार्थ परिचय उस भाषा को शुद्धरूप से लिखने के अभ्यास द्वारा ही हो सकता है। सम्भवतः इसी कारण से यूनिवर्सिटी ने भी अनुवाद को प्रधानता दी है। परन्तु अनुवाद को नियमानुसार न करने के कारण विद्यार्थियों को संस्कृत का यथेष्ट बोध नहीं होता। प्रायः देखा गया है कि बहुत से विद्यार्थी, जिन्होंने संस्कृत के साथ मेट्रिकुलेशन की परीक्षा पास की होती है, संस्कृत में साधारण वाक्य शुद्ध लिखने में असमर्थ होते हैं। अनुवाद विषयक पुस्तक का अभाव भी किसी अंश तक इसका कारण है। जो संस्कृत-व्याकरण आजकल स्कूलों में पढ़ाए जाते हैं, उनमें अनुवाद के लिए गौण रूप से कुछ-कुछ वाक्य दिए गए हैं। परन्तु इस कमी को वस्तुतः वही पुस्तक पूरा कर सकता है, जिसका अनुवाद प्रधान विषय हो।

अतः इस अभाव को अनुभव करके स्कूलों की हाई क्लासों के लिए विशेषतः और संस्कृतप्रेमी जनता के लिए सामान्यतः मैं ने इस 'संस्कृत अनुवाद-शिक्षक' को लिखा है। जहां इसमें अनुवाद के लिए आदर्श-वाक्य दिए गए हैं वहां अनुवाद करने के नियमों का भी उदाहरणों सहित वर्णन

किया गया है, क्योंकि नव छात्रों के लिए नियमों के बिना अभ्यास के वाक्यों का देना लाभदायक नहीं हो सकता।

जैसा विषयसूची से विदित होगा, सारा पुस्तक सात अध्यायों में विभक्त है। पहले चार अध्यायों में क्रमशः वाक्य-रचना और समता, कारक, सर्वनाम और कृदन्त, और लकारों का विषय है। पांचवें अध्याय में समास, विशेषणतुलना, प्रत्ययान्तधातु और निपातों का विधान है। छठे में आत्मनेपद और परस्मैपद पर विचार है, कि कैसे उपसर्ग के आगम से धातु का पद बदल जाता है। आगे इसी अध्याय में उन प्रधान धातुओं का उल्लेख है, जिनके रूप साधारण नियमों के अनुसार नहीं बनते। इसके लिए मैं डा० लक्ष्मणस्वरूप एम० ए०, डि० फिल० (आक्सन) जिनकी प्रेरणा से ये पाठ लिखे गए, का अनुगृहीत हूँ। सातवें अध्याय में कुछ सरल हिन्दी कहानियां, जो प्रायः संस्कृत साहित्य के आधार पर हैं, अभ्यास के लिए दी गई हैं। और साथ ही मेट्रिकुलेशन के यूनिवर्सिटी संस्कृत-परीक्षा-पत्रों से अनुवाद भाग भी उद्धृत किए गए हैं। इस अध्याय का अन्त में अभ्यास करना लाभ-प्रद होगा। इससे आगे दो अत्यन्त उपयोगी परिशिष्ट भी दिए गए हैं। वर्णोच्चारण की ओर आजकल यथा-योग्य ध्यान नहीं दिया जाता। मेरे विचार में इसके विना व्याकरण के तत्त्वों का ज्ञान होना अत्यन्त कठिन है। अतएव आचार्य लोग सब से पहले विद्यार्थी को वर्णोच्चारण की शिक्षा दिया करते थे। अत: विद्यार्थी को उचित है, कि सबसे पूर्व इस परिशिष्ट का ध्यानपूर्वक अध्ययन करे और अभ्यास द्वारा संस्कृत के शुद्ध वर्णोच्चारण को सीखने का यत्न करे, और साथ ही संस्कृत के वर्णोच्चारण और पंजाबी के वर्णोच्चारण के भेद को भली भांति जान ले; क्योंकि प्राय: देखा जाता है, कि विद्वान् लोग भी इस बात पर ध्यान नहीं देते। दूसरे परिशिष्ट में कुछ कहावतें आदि दी गई हैं, ताकि विद्यार्थियों को संस्कृत कहावतों का भी थोड़ा सा ज्ञान हो जाए। अन्तत: एक संक्षिप्त शब्द-कोश के साथ ग्रन्थ समाप्त हो जाता है।

साधारणतया प्राचीन प्रणाली को ही नवीन रूप में दिया गया है।

जहां-जहां आवश्यक समझा गया है, वहां-वहां पाणिनि के सूत्र आदि भी फुट-नोट्स में दिए गए हैं । संस्कृत पारिभाषिक शब्दों का ब्रेकेट्स में अंगरेज़ी अनुवाद भी दे दिया गया है, ताकि समझने में आसानी रहे। अनुवाद के वाक्यों की भाषा सरल और मेट्रिकुलेशन स्टेंडर्ड के अनुसार है और इस बात का पूर्ण यत्न किया गया है, कि अनुवाद क्रमशः सरल से कठिन होता जाए। अध्यायों को पाठों में विभक्त किया गया है। प्रत्येक पाठ में पहले नियमों और उदाहरणों को भली भाँति समझ लेना चाहिए और फिर अनुवाद करना चाहिए ताकि पूर्ण लाभ हो सके।

इस प्रकार मैंने पूर्ण यत्न किया है, कि मेट्रिकुलेशन के विद्यार्थियों तथा अन्य संस्कृत सीखने के इच्छुकों की इस विषय में सब ज़रूरतों को पूरा किया जाए और मैं आशा करता हूँ, कि यह 'शिक्षक' जिनके लिए लिखा गया है, उनको अत्यन्त उपयोगी होगा।

प्राचीन संस्कृत व्याकरण ग्रन्थों के अतिरिक्त, मुझे स्वर्गीय श्रीयुत आपटे, तथा प्रो० मेकडोनल और काले प्रभृति विद्वानों के ग्रन्थों से भी सहायता मिली है। कई स्थलों पर इनकी पुस्तकों के अन्तर्गत उदाहरण 'शिक्षक' में उद्धृत किए गए हैं। अतः मैं इन महानुभावों का अत्यन्त धन्यवाद करता हूँ। डा० लक्ष्मणस्वरूप एम० ए०, डी० फिल० (ऑक्सन), लाहौर; प्रो० चरणदास शास्त्री एम० ए०, एम० ओ० एल०, लाहौर, तथा पण्डित मेलाराम शास्त्री, जालन्धर, का भी धन्यवाद करता हूं, कि उन्होंने इस पुस्तक का प्रकाशित होने से पूर्व अवलोकन करके मुझे अनुगृहीत किया। मैं अपने मित्र ला० प्राणनाथ बी० ए० का भी धन्यवाद करता हूं, कि उन्होंने कष्ट उठाकर भी इस पुस्तक को कलकत्ते छपाने में मेरी सर्व प्रकार से सहायता की। साथ ही त्यागमूर्ति श्रीयुक्त पंडित मेहरचन्द्र, प्रिंसिपल, दयानन्द कालेज, जालन्धर, जिनकी उत्तेजना और कृपाकटाक्ष से मैंने इस पुस्तक को तैयार किया, का भी धन्यवाद करता हूं।

अन्त में पाठकों से निवेदन है कि वे प्रूफरीडिंग की अशुद्धियों के लिए क्षमा करके तथा अन्य न्यूनताओं आदि से सूचित करके अनुगृहीत करें, ताकि अगले संस्करण में उनको दूर करने का यत्न किया जाए।

शिमला,
२५ अगस्त, १९२३। } रामचन्द्र

———

दूसरे संस्करण की भूमिका।

संस्कृत अनुवाद शिक्षक का पहला संस्करण बहुत शीघ्र ही समाप्त हो गया था। निरन्तर दश वर्ष से हमारे मित्र इसका नया संस्करण निकालने को मजबूर कर रहे थे। परन्तु अनेक कारणों से ऐसा करना संभव न हुआ। इस वर्ष पंजाब यूनिवर्सिटी ने 'इन्टरमीडिएट' और 'बी० ए०' में संस्कृत की परीक्षाओं का हिंदी को वैकल्पिक माध्यम नियत कर दिया। इसलिए इस शिक्षक की मांग और भी बढ़ गई और हमें इसका नया संस्करण अन्य काम छोड़ कर भी प्रकाशित करना पड़ा।

संस्कृत अनुवाद-शिक्षक इस विषय में हिन्दी में सब से पहली पुस्तक है। इसके पीछे अनुवाद की कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं परन्तु इसकी उपयोगिता को न पा सकीं। अनुवाद-शिक्षक का प्रचार न केवल पंजाब में ही रहा प्रत्युत अन्य प्रान्तों में भी इसे अपनाया गया। दिल्ली और नागपूर की यूनिवर्सिटियों ने इसे पाठ्यपुस्तक (Text book) नियत करने की कृपा की है। पंजाब, संयुक्त प्रान्त, विहार आदि प्रान्तों के शिक्षा विभागों ने इसे स्वीकार किया। इसके लिए हम इनके आभारी हैं।

'शिक्षक' की रचना आरंभ से ही पूर्णरूप से हुई थी, इसलिए इसमें कोई विशेष परिवर्तन की आवश्यकता नहीं थी। अभ्यासों में उचित परिवर्तन सर्वत्र किए गए हैं। अनुवाद के वाक्य घटा-बढ़ाकर और भी उपयोगी बना दिए गए हैं। मिश्रित अभ्यासों में कई अभ्यास बदल दिए गए हैं जिससे इन्टरमीडिएट स्टेंडर्ड की आवश्यकता भी पूरी हो जाएगी। कहावतों और शब्द-कोश में यथोचित वृद्धि की गई है।

अन्त में कुछ नई उपयोगी सूचियां बढ़ा दी गई हैं। इनमें, फल, फूल, अनाज तथा अन्य उपयोगी प्रतिदिन व्यवहार में आने वाले शब्दों के संस्कृत पर्यायवाचक दिए गए हैं। विद्यार्थियों को अनुवाद में इन सूचियों से अत्यन्त सहायता मिलेगी।

इसलिए यह संस्करण पहले से और भी उपयोगी सिद्ध होगा। जो कोई त्रुटियां किसी कारण इसमें रह गई हों उनके लिए हम अपने मित्र अध्यापक गण से क्षमा चाहते हैं और आशा करते हैं यह संस्करण संस्कृत के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा और उन्हें संस्कृत का व्यावहारिक और स्थायी ज्ञान देने में समर्थ होगा।

दयानंद ऐंगलो वैदिक कालेज,
जालन्धर।
अक्टूबर १९४१.

रामचन्द्र शर्मा

विषय-सूची

पाठ	पृष्ठ
१—वाक्यरचना विचार	१
लिंग, वचन	२
Exercise 1	३
२—समता	४
कर्त्ता की क्रिया से समता	४
Exercise 2	५
३—विशेषण और विशेष्य की समता	६
नाम और सर्वनाम की समता	७
Exercise 3	७
४—कारकप्रकरणम्	८
कर्म	८
Exercise 4	१०
५—द्विकर्मक धातु	११
Exercise 5	१२
६—प्रेरणार्थकक्रिया	१३
Exercise 6	१५
७—करण	१६
Exercise 7	१८
८—सम्प्रदान	१६
Exercise 8	२२
९—अपादान	२३
Exercise 9	२५
१०—सम्बन्ध	२६
Exercise 10	२८
११—अधिकरण	३०
Exercise 11	३२
१२—Genetive and Locative absolutes	३३
Exercise 12	३५
१३—सर्वनाम	३५
Exercise 13	३७
१४—कृदन्त	३८
शत्रन्त, स्यदन्त	३८
Exercise 14	३९
१५—क्तान्त विधिकृदन्त क्त्वान्त	४०
Exercise 15	४२
१६—तुमुन्नन्त	४३
Exercise 16	४४

१७—Tenses and Moods
वर्त्तमान ४५
Exercise 17 ४६
१८—भूतकाल ४७
Exercise 18 ४८
१९—भविष्यत्, लृङ् ४९
Exercise 19 ५०
२०—लोट् आशीर्लिङ् ५०
Exercise 20 ५२
२१—विधिलिङ् ५२
Exercise 21 ५४
२२—समास-प्रकरणम् ५४
Exercise 22 ५६
२३—बहुव्रीहि समास ५७
Exercise 23 ५७
२४—विशेषण-तुलना ५८
Exercise 24 ५८
२५—प्रत्ययान्तधातवः ५९
Exercise 25 ६०
२६—निपाताः अपि, इति, इव, किं. किल, खलु, च ६१
Exercise 26 ६३
२७—तावत्, ननु, नाम यथा यावत् येन, वा, हि ६३
Exercise 27 ६५
२८—Irregularities of the Present stem
भ्वादयः, दिवादयः, तुदादय ६६
Exercise 28 ६७
२९—Continued अदादय: ६८
Exercise 29 ६९
३०—जुहोत्यादयः ७०
Exercise 30 ७१
३१—परस्मैपद आत्मनेपद ७२
Exercise 31 ७३
३२—Continued ७४
Exercise 32 ७५
Miscellaneous Exercises ७६
Idioms & Proverbs ९२
हिन्दी-संस्कृत कोश— ९६
३३—Sanskrit Synonyms of Common Hindi or English words. १०५

अथ

संस्कृत

अनुवाद-शिक्षक

प्रथमः पाठः

वाक्यरचना-विचारः

१—हिन्दी और अंगरेज़ी की भाँति संस्कृत में किसी शब्द का अर्थ वाक्य में उसके स्थान पर निर्भर नहीं, क्योंकि संस्कृत में शब्दों के सम्बन्ध को विभक्ति आदि प्रकाशित करते हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी के वाक्य "राम ने रावण को मारा" को लीजिए। यदि 'राम' और 'रावण' के क्रम (order) को बदल दिया जाए तो अर्थ सर्वथा बदल जाता है। जैसे "रावण ने राम को मारा"। परन्तु संस्कृत वाक्य "रामः रावणं जघान" में यदि शब्द-क्रम (order of words) को बदल भी दिया जाए तो भी अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे "रावणं रामो जघान" या "जघान रामः रावणं" सबका अर्थ एक ही है। यद्यपि व्याकरण के अनुसार किसी शब्द-क्रम की आवश्यकता नहीं तो भी 'अन्वय के हेतु' कोई क्रम अवश्य होना चाहिए। प्राचीन संस्कृत साहित्य के अवलोकन से पता लगता है कि वाक्य के शब्दों में ऐसा क्रम होना चाहिए:—प्रथम **कर्त्ता** (subject) और उसके विशेषण (attributes), दूसरे **कर्म** (object) और उसके विशेषण और अन्त में **क्रिया** (Verb)।

२—**क्रियाविशेषण** (adverbs) अन्त के अतिरिक्त कहीं आ सकते हैं, और **समुच्चयवाचक निपात** (conjunctives) प्रायः

कर्त्ता से भी पूर्व वाक्य के आदि में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, किंतु करट-कादयोऽप्याश्वास्यन्ताम्।

३—**सम्बोधन** (vocative) वाक्य के आदि में प्रयुक्त होता है। जैसे, देव, पृच्छामि किंचित् 'महाराज! मैं आप से कुछ पूछता हूं।'

४—कथाओं में 'अस्'(to be) और प्रायः भू वाक्य के आदि में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, अस्ति मगधदेशे चम्पकवती नामारण्यानी 'मगध-देश में चम्पकवती नाम एक बड़ा जंगल है।' अभूद् राजा चिन्तामणि-र्नाम 'पहिले चिन्तामणि नाम एक राजा था।'

५—समुच्चयवाचक निपात (conjunctives) 'च, वा, तु, हि, चेत्' कभी वाक्य के आदि में प्रयुक्त नहीं होते।

लिंग (Gender)

६—हिन्दी तथा अंगरेज़ी भाषाओं की भांति संस्कृत में भी तीन ही लिंग होते हैं। उन नामों को छोड़ कर, जो स्त्री और पुरुष के वाचक हैं, जैसे 'हंसः' और 'हंसी', संस्कृत में अन्य भाषाओं की तरह अर्थों से लिंग का ज्ञान नहीं हो सकता। जैसे, दार (पुँ०), भार्या (स्त्री०) और कलत्र (नपुं०) तीनों एक अर्थ के वाचक होते हुए भी भिन्न भिन्न लिंग रखते हैं।

वचन (Number)

७—हिन्दी और अँगरेज़ी में केवल दो वचन हैं, 'एकवचन' और 'बहुवचन'। परन्तु संस्कृत में एक तीसरा 'द्विवचन' भी है। संस्कृत में एकवचन हिन्दी और अंगरेजी की तरह प्रायः जाति का बोधक भी होता है।' जैसे, सिंहः सर्वश्वापदेषु बलिष्ठः 'शेर सारे जानवरों से बलवान् है।' ब्राह्मणो न हन्तव्यः 'ब्राह्मण को नहीं मारना चाहिए।'

८—'द्विवचन' दो का वाचक है। जैसे, पुरुषौ 'दो आदमी।'

(क) उन शब्दों का अनुवाद, जो कि हिन्दी आदि में बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं, और जो दो का अर्थ रखते हैं, संस्कृत में द्विवचन

से करना चाहिए। जैसे, 'राम अपने हाथ पाओं धोता है' रामः हस्तौ पादौ च प्रक्षालयति।

६—कई शब्द संस्कृत में बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं, परन्तु अर्थ एकवचन का देते हैं। जैसे, दाराः, आपः, वर्षाः, सिकताः, अक्षताः, प्राणाः और गृहाः।

(क) कभी कभी बहुवचन 'आदर के लिए' प्रयुक्त होता है। जैसे, इति श्रीशङ्कराचार्याः 'ऐसे श्री शंकराचार्य कहते हैं।'

(ख) उत्तम पुरुष में प्रायः बहुवचन का प्रयोग होता है (*cf.* English editorial 'we'.) जैसे, वयमपि किंचित्पृच्छामः 'हम (=मैं) भी कुछ पूछते हैं।'

(ग) **देशों के नाम** सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। क्योंकि ये देशवासिओं के नाम से प्रसिद्ध होते हैं। जैसे, अहं गतः कदाचित् कलिंगान् 'मैं एक वार कलिंग (देश) को गया।'

(घ) व्यक्तिनाम (Proper Noun) बहुवचन में उस **वंश** का बोधक होता है। जैसे, रघूणामन्वयं वक्ष्ये 'अब मैं रघु के वंश का वर्णन करूंगा।'

Exercise 1.

सब जीवों में मनुष्य श्रेष्ठ है। बंदर सब वनचरों में बुद्धिमान् है। ब्राह्मण पूजा के योग्य हैं। माता और पिता अपने पुत्र की यत्न से रक्षा करते हैं। मैंने अपनी आंखों से उस सारे दृश्य को देखा है। सेवक ने अपने स्वामी की रक्षा में अपने प्राण भी दे दिए। आज वर्षा के कारण रेत नहीं तपेगा। उसने पानी से अपने हाथ और पाओं धोए। हर एक को माता पिता की सेवा करनी चाहिए ऐसा आचार्य लोग कहते हैं। अब हमें क्या करना चाहिए। रघु की सेना विदर्भ (देश) को गई। जनक का वंश ब्रह्मविद्या के लिए विख्यात था।

द्वितीयः पाठः

समता (Concord)

१०—जिन सम्बन्धी शब्दों में 'लिंग' 'वचन' और 'विभक्ति' समान हों, उन में **समता** कहलाती है।

कर्त्ता की क्रिया से समता।

११—कर्त्ता का जो 'पुरुष' और 'वचन' होगा वही क्रिया का भी होगा। जैसे, मृगाः सस्यं खादन्ति 'मृग खेती को खाते हैं।' आपत्स्वपि न मुह्यन्ति नराः पण्डितबुद्धयः 'बुद्धिमान् लोग दुःखों में भी मोह को प्राप्त नहीं होते।'

१२—क्रिया के स्थान में 'कृदन्त' 'विशेषण' वा 'विशेष्य' भी प्रयुक्त हो सकते हैं। 'कृदन्त' की भी समता 'कर्त्ता' के साथ होती है। जैसे, स कृतवान्, सा कृतवती, तेन कृतम्।

(क) ऐसे ही विशेषण और विशेष्य की भी कर्त्ता के साथ समता होती है। जैसे, सुभृत्यः दुर्लभः 'अच्छा नौकर मिलना कठिन है।'

(ख) परन्तु यदि 'पात्र, आस्पद, स्थान, पद, प्रमाण और भाजन', आदि शब्द क्रिया के स्थान में प्रयुक्त हों तो उनमें केवल 'नपुंसकलिंग' और प्रायः 'एकवचन' प्रयुक्त होता है। क्योंकि इन अवस्थाओं में अध्याहृत (understood) क्रिया की समता कर्त्ता के साथ होती है, इन शब्दों से नहीं। जैसे, गुणाः पूजास्थानं गुणिषु 'गुणवालों में गुण पूजा का स्थान हैं।' अत्रभवन्तः प्रमाणम् 'यहाँ आप प्रमाण हैं।' संपदः पदमापदाम् 'धन दुःखों का घर है।' अर्थात् 'संपदः पदमापदां सन्ति' न तु 'अस्ति'।

१३—जब भिन्न भिन्न वचनों के दो या अधिक च से सम्बद्ध कर्त्ता प्रयुक्त हों तो क्रिया में **बहुवचन** होता है। जैसे, द्रौपदी पाण्डवाश्च वनं जग्मुः 'द्रौपदी और पांडव वन को गए।'

(क) परन्तु जब वे **एकभाव** (oneness) को दर्शाते हों तो क्रिया में 'एकवचन' होता है। **पृथक्त्व** (separateness) में भी एक-

वचन ही होता है। जैसे, पटुत्वं सत्यवादित्वं कथायोगेन बुध्यते 'चतुराई और सचाई बोल चाल से जानी जाती है।' न मां त्रातुं तातः प्रभवति न चाम्बा 'मेरा पिता मेरी रक्षा नहीं कर सकता और नहीं मेरी माता।'

(ग) कभी कभी क्रिया की **समीपवर्ती** कर्त्ता से समता होती है। जैसे, अहश्च रात्रिश्च उभे च संध्ये धर्मोऽपि जानाति नरस्य वृत्तम् 'दिन, रात, दोनों संध्याएँ और धर्म भी मनुष्य के काम को जानता है।'

१४—यदि दो या अधिक कर्त्ता वा से युक्त हों तो क्रिया की समता **समीपवर्ती** कर्त्ता से सर्वथा होती है। जैसे, रामो लक्ष्मणो वा गच्छतु 'राम या लक्ष्मण जाए।' स वा इमे बालका वा फलानि गृह्णन्तु 'वह या ये बालक फलों को लें।' इमे बालका वा स वा फलानि गृह्णातु 'ये बालक या वह फलों को ले।'

१५—यदि दो या अधिक **भिन्न पुरुषों** के कर्त्ता 'च' से मिलाए जाएँ तो क्रिया की समता **उत्तम** पुरुष के कर्त्ता से होगी; उत्तम पुरुष के अभाव में **मध्यम** पुरुष से और मध्यम पुरुष के अभाव में **प्रथम** पुरुष से होगी। जैसे, त्वञ्चाहञ्च रामश्च पाठशालां गच्छामः। त्वं गोपालश्च तत्रास्ताम्।

१६—यदि दो या अधिक कर्त्ता किसी 'सर्वनाम' (Pronoun) या 'नाम' के साथ समानाधिकरण (case in apposition) हों तो विधेय (Predicate) की समता नाम या सर्वनाम से होती है। जैसे, माता मित्रं पिता चेति स्वभावात् त्रितयं हितम् 'माता' मित्र और पिता तीनों (नपुं०) स्वभाव से ही हित के करने वाले (नपुं०) होते हैं।'

Exercise 2.

संसार के सब जीव मनुष्य की दया के पात्र हैं। सुपुत्र अपने माता पिता के गर्व का आस्पद हैं। राम, लक्ष्मण और हनुमान् ने रावण की सेना को नष्ट किया। सच और चतुराई बोल-चाल से जानी जाती है। जब वर्षा होने लगी तो गोपाल, तुम और हम दोनों पाठशाला में थे। आप तो मानो उसके प्राण ही हैं। तुम और तुम्हारा भ्राता अपने पाठ को क्यों

नहीं पढ़ते। तुमने, देवदत्त ने और मैंने कल खूब आम खाए। वे या हम इस कठिन कार्य को कर सकते हैं। हरि ने या तुमने इस बालक को मारा है। तुम दोनों, कृष्ण के तीनों भ्राता और हमारे दो नौकर कल गाँव को जायँगे। आप और हरि या मैं और गोपाल इस काम को करेंगे। हे राम तुम मेरे जीवन हो, तुम मेरे दूसरे हृदय हो, और तुम ही मेरी आंखों की ज्योति हो। छत्र और दोनों चाँवरें तीन ही ऐसी वस्तुएं थीं जो वह भूपति नहीं दे सकता था। सत्योपदेश, सच बोलना, सरलता और प्रेम, ये मित्र के लक्षण हैं।

तृतीयः पाठः

विशेषण और विशेष्य की समता।

१७—संस्कृत में विशेषण का वही 'लिंग', 'विभक्ति' और 'वचन' होते हैं जो विशेष्य के हों। जैसे, रूपवान् पुरुषः; रूपवती स्त्री; तानि पुस्तकानि; तेभ्यो जनेभ्यः।

परन्तु **संख्यावाचक विशेषण** अपने नियत लिंग और वचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, शतं ब्राह्मणाः, शतं स्त्रियः, विंशतिः मित्राणि।

१८—यदि एक विशेषण का दो या अधिक विशेष्यों के साथ सम्बन्ध हो तो विशेषण उस **वचन** में प्रयुक्त होता है जो सब विशेषणों को **मिला कर** हो। यदि विशेष्य 'पुँल्लिंग' और 'स्त्रीलिंग' हों तो विशेषण **पुँल्लिंग** में प्रयुक्त होता है और यदि पुँल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग तीनों हों तो विशेषण **नपुंसकलिंग** में प्रयुक्त होता है। जैसे, राजा राज्ञी च स्तुत्यचरितौ स्तः 'राजा (पुं०) और रानी (स्त्री०) प्रशंसनीय चरित्र वाले (पुँ०) हैं।' मृगयाक्षास्तथा पानं गर्हितानि महीभुजाम् 'शिकार (स्त्री०) जुआ (पुँ०) और (शराब) पीना (नपुं०) राजाओं के लिए त्याज्य (नपुं०) हैं।' अक्षास्तथा पानं गर्हिते।

१९—प्रायः विशेषण की समता उसके 'समीपवर्त्ती' विशेष्य के साथ भी होती है। जैसे, उद्वेगः कलहः कण्डूः सेव्यमाना च वर्धते 'चिन्ता (पुँ०)

कलह (पुँ०) और खुजली (स्त्री०) ध्यान दी हुई (स्त्री०) बढ़ती हैं ।'

नाम और सर्वनाम की समता ।

२०—सम्बन्धबोधक सर्वनाम (Relative Pronouns) की समता 'लिंग' और 'वचन' में अपने 'पूर्वकथित नाम' (antecedent noun) के साथ होती है । परन्तु 'विभक्ति' उनके अपने अपने वाक्यों (clauses) के सम्बन्ध से निर्दिष्ट होती है । जैसे, यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः 'जिसके पास धन है वही नर कुलीन है ।'

२१—यदि सम्बन्धबोधक सर्वनाम का विधेय (Predicate) कोई ऐसा नाम हो जिसका लिंग 'पूर्वकथित नाम के लिंग' से 'भिन्न' हो, तो सम्बन्धबोधक सर्वनाम 'पूर्वकथित नाम के लिंग' ही में प्रयुक्त होता है और निर्देशक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun) उस नाम के लिंग में प्रयुक्त होता है जिसका वह विशेषण है । जैसे, शैत्यं हि यत्सा प्रकृतिर्जलस्य 'जो (Rel. नपुं०) शीतता (Antec. नपुं०) है वह (Demo. स्त्री०) जल का स्वभाव (स्त्री०) है ।'

२२—यदि सम्बन्धबोधक सर्वनाम (यत्) पूर्ण वाक्य के स्थान में प्रयुक्त हो, जैसे अंगरेजी में 'that', तो वह 'नपुंसकलिंग' और 'एकवचन' में होता है । जैसे, ननु वज्रिण एव वीर्यमेतद्विजयन्ते द्विषतो यदस्य पक्ष्याः 'निश्चय यह इन्द्र का ही बल है कि (Rel. नपुं० एकव०) उसके मित्र शत्रुओं पर विजय पाते हैं ।'

Exercise 3

भद्र पुरुष दीनों पर सदा दया करते हैं । राम ने गर्म पानी से अपने हाथ और पाओं धोए । तपस्वी राम और सीता १४ वर्ष बन में रहे । राम और सीता दोनों अत्यन्त दयावान् हैं । धर्म, काम, हर्ष, अहंकार, क्रोध और सुख ये सब धन से उत्पन्न होते हैं । उसका रूप और वाणी अति-सुन्दर हैं । चमकीले कपड़े और आभूषण सबको प्यारे हैं । बिना परों के पक्षी, सूखा वृक्ष, जल से शून्य तालाब, दांतों से हीन सर्प और धनहीन मनुष्य इस संसार में समान हैं । झूठ बोलना, अन्याय और अहिंसा मनुष्य के लिए त्याज्य हैं । यज्ञ में राजा ने बीस ब्राह्मणों को सौ गौएं, चालीस घोड़े, और आठ सहस्र रुपए दिए । वह ईश्वर जिसकी दया से

हम आनन्द पाते हैं, और तीनों लोक भी, इस संसार का कर्त्ता है। आपकी चिन्ता करते हुए हम सब दुःख में निमग्न हैं। पुत्र वह है जो भक्तिवाला हो और नौकर वह है जो आज्ञाकारी हो। (जो) दूसरों के गुणों का सहन न करना (है) वह दुर्जनों का स्वभाव ही है। यह सब विद्वानों का मत है कि जीव मृत्यु के पश्चात् फिर अनेक वार जन्म लेता है। ये फल मेरे छोटे भाई ने उपहार रूप से भेजे हैं।

चतुर्थः पाठः

कारकप्रकरणम् (Government).

२३—वाक्य में 'क्रिया' के साथ नाम के सम्बन्ध को **कारक** कहते हैं। संस्कृत में छः कारक हैं। कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण। सम्बन्ध (Genetive) कारक नहीं गिना जाता क्योंकि इससे क्रिया के साथ सम्बन्ध का ज्ञान नहीं होता। इनको 'कारक विभक्ति' (Cases governed by verbs) भी कहते हैं।

२४—जो आप ही क्रिया के करने में प्रधान हो उसको **कर्ता**[1] कहते हैं। कर्मवाच्य (Passive Voice) में कर्म प्रथमा विभक्ति में प्रयुक्त होता है। जैसे रामो गच्छति; घटः क्रियते।

कर्म (Accusative).

२५—वह वस्तु या मनुष्य जिस पर क्रिया के व्यापार का फल (effect) होता है **कर्म** कहलाता है। जैसे, हरिं सेवते। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

२६—समस्त 'सकर्मक धातुओं' के साथ कर्म अवश्य प्रयुक्त होता है। और कई सकर्मक धातुओं के साथ प्रधान कर्म के अतिरिक्त एक **विधेय कर्म** (Factitive object) भी प्रयुक्त होता है। जैसे कुमारं

1. स्वतन्त्रः कर्ता। अ० १। पा० ४। सू० ५५।

नेतारं कृत्वा 'कुमारको (acc.) नेता (fact. ob.) बना कर।'

२७—'अकर्मक' धातुओं के साथ भी कर्म प्रयुक्त होता है यदि कर्म व्यवधानरहित काल या मार्ग का बोधक हो।[1] जैसे, देवो द्वादशवर्षाणि न ववर्ष 'बारह वर्ष (acc.) तक वर्षा न हुई।' क्रोशं कुटिला नदी 'नदी एक कोस तक (acc.) टेढ़ी है।' मासं गुडधानाः 'एक मास के लिए गुड़ और धान'।

२८—गत्यर्थक धातुओं के साथ स्थानबोधक शब्दों में द्वितीया का प्रयोग होता है। जैसे ग्रामं गच्छति 'गाँव को जाता है'। विषादमगच्छत् 'दुःख को प्राप्त हुआ'।

२९—शी (to lie down), स्था (to stand), और अस् (to be) के साथ अधि के योग से अधिकरण में 'द्वितीया' का प्रयोग होता है।[2] जैसे, शय्यामधिशेते, 'शय्या पर सोता है' हरि वैकुण्ठमधितिष्ठति 'हरि वैकुंठ में रहता है।' और आसनमध्यास्ते 'आसन पर बैठा है।'

३०—विश् के साथ 'अभिनि' के योग से इसी प्रकार द्वितीया प्रयुक्त होती है।[3] जैसे, अभिनिविशते सन्मार्गम् 'वह अच्छे मार्ग (acc.) पर चलता है।'

३१—वस् के साथ 'उप', 'अनु', अधि' या 'आ' के योग में द्वितीया का प्रयोग होता है[4]। जैसे, उप-अनु-अधि-आ- वसति वैकुण्ठं हरिः 'हरि वैकुण्ठ में (acc) रहता है।'

३२—उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अधोधः, अध्यधि (nearness) शब्दों के योग में द्वितीया का प्रयोग होता है।[5] जैसे, उभयतः

---

१ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे। २. ३. ५.।

२. अधिशीङ्स्थासां कर्म। १. ४. ४६.।

३. अभिनिविशश्च। १. ४. ४७। ४. उपान्वध्याङ्वसः। १. ४. ४८।

५. उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते॥ वा०।

कृष्णं गोपाः 'गोप कृष्ण के (acc.) दोनों ओर हैं ।' सर्वतः कृष्णम् 'कृष्ण के (acc.) चारों ओर ।' धिग्जाल्मान् 'धूर्तों (acc.) को धिक्कार है ।' उपर्युपरि लोकं हरिः 'हरि संसार के (acc.) ठीक ऊपर है ।' अधोधो लोकं पातालः 'पाताल पृथ्वी के (acc.) ठीक नीचे है ।'

३३—अभितः, परितः (round); समया, निकषा (near); हा (woe to be); और प्रति (to) के योग में भी द्वितीया प्रयुक्त होती है[1] । जैसे, परिजनो राजानम् अभितः—परितः—स्थितः 'नौकर राजा के (acc.) चारों ओर खड़े थे ।' ग्रामं समया—निकषा 'गाँव के निकट' । हा वेदनिन्दकम् 'वेदनिन्दक के (acc.) लिए शोक हो ।'

३४—अन्तरेण (without, regarding) और अन्तरा (between) के योग में भी द्वितीया का प्रयोग होता है ।[2] जैसे, कोऽन्यस्त्वामन्तरेण शक्तः 'तुम्हारे (acc.) बिना और किसकी शक्ति है ।' देवीं वसुमतीमन्तरेण 'रानी वसुमती (acc) के विषय में ।' अन्तरा त्वां च मां च 'तुम्हारे और मेरे बीच में ।'

३५—अनु (after, resembling) कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया प्रयुक्त होती है ।[3] जैसे, जपमनुप्रावर्षत् 'जपके (acc.) पश्चात् वर्षा हुई ।' सर्वं मामनु ते 'तेरा सब कुछ मेरे (acc.) से मिलता है ।'

'अभि' 'प्रति', और 'उप' कर्मप्रवचनीय भी ऐसे ही प्रयुक्त होते हैं ।

(क) अकर्मक धातुओं के साथ भी उपसर्गों (Prepositions) के योग में कर्म प्रयुक्त होता है । जैसे, प्रभुचित्तमेव हि जनोऽनुवर्तते 'निश्चय-लोग अपने स्वामी की इच्छा (acc.) के अनुसार वर्तते हैं ।'

Exercise 4.

प्रजा ने राम को युवराज बनाया । जनक ने अपनी लड़की का

---

१. अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि । वा० ।

२. अन्तरान्तरेण युक्ते । २. ३. ४.

३. कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया । २. ३. ८. ।

नाम सीता रक्खा। गोविन्द ने दो मास तक व्याकरण पढ़ा। यह घोड़ा दिन में सौ कोस जाता है। यह धन एक मास के लिए काफी है। हरि काशी गया और थोड़े ही काल में मशहूर हो गया (कीर्ति या)। तपस्वी लोग प्रायः भूमि पर सोते हैं (अधि-शी)। मुसाफिर प्यास से पीड़ित होकर हरी घास पर बैठ गया (अधि-आस्)। राजा सिंहासन पर बैठा है (अधि-स्था)। राम दंडक वन में १२ वर्ष रहा (अधि-वस्)। छात्र अपने अध्यापक के दोनों ओर बैठे हैं। स्कूल के चारों ओर सुन्दर फुलवाड़ी है। धिक्कार है उन बालकों पर जो बिना कारण दूसरों को दुःख देते हैं। हमें (प्रति) यह उचित प्रतीत होता है कि हम अपने माता पिता की इच्छा के अनुसार वर्तें (अनु-वृत्)। हा दुर्भाग्य! हम ऐसे महापुरुष के उपदेश से वंचित रहे। शिष्य अध्ययन के लिए (अन्तरेण) गुरु के पास आता है। योगी के सिवा (अन्तरेण) भविष्य को कौन जान सकता है। पंजाब और संयुक्त प्रान्त के बीच में (अन्तरा) यमुना नदी है। चन्द्रमा के अस्त होने के पीछे (अनु) आकाश शोभाहीन हो जाता है।

पञ्चमः पाठः

द्विकर्मकधातु (Verbs governing two accusatives.)

३६—संस्कृत में कुछ ऐसी भी धातु हैं जिनके साथ 'दो कर्म' प्रयुक्त होते हैं, एक **मुख्य** या **प्रधान** (direct) और दूसरा **गौण** या **अकथित** (indirect) ऐसे धातुओं को 'द्विकर्मक' धातु कहते हैं। 'अकथित' कर्म में भी 'द्वितीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे, 'धेनुं (ind.) दोग्धि पयः (dir.)' वक्ता की इच्छा के अनुसार 'धेन्वाः (abl.) पयो दोग्धि' के स्थान में प्रयुक्त हुआ है।

३७—अधोलिखित कारिका में कही हुई और इनकी पर्य्याय-वाचक अन्य धातुएँ द्विकर्मक हैं:—

दुह्याच्पच्दण्ड्रुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमन्थमुषाम्।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्॥

जैसे, गां दोग्धि पयः 'गौ से (ind.) दूध (dir.) दुहता है।' बलिं याचते वसुधां 'बलि से (ind.) पृथिवी (dir.) मांगता है।' तण्डुलानोदनं पचति 'चावलों से (ind.) भात (dir.) पकाता है।' चौरं शतं दण्डयति 'चोर को (ind.) सौ रुपये (dir.) दंड देता है।' व्रजमवरुणद्धि गाम् 'बाड़े में (ind.) गौ को (dir.) बंद करता है।' नरं पन्थानं पृच्छति 'आदमी से (ind.) मार्ग (dir.) पूछता है।' वृक्षमवचिनोति फलानि 'वृक्ष से (ind.) फलोंको (dir.) तोड़ता है।' छात्रं (ind.) धर्मं (dir) ब्रूते शास्ति वा। देवदत्तं (ind) शतं (dir) जयति। क्षीरनिधिं (ind.) सुधां (dir.) मथ्नाति। देवदत्तं (ind.) शतं (dir.) मुष्णाति। ग्रामम् (ind.) अजां (dir.) नयति, हरति, कर्षति, वहति वा।

३८—उपरिलिखित उदाहरणों से प्रतीत होगा कि क्रिया को पूर्ण करने के लिए जो कर्म द्वितीया विभक्ति में प्रयुक्त होता है वह 'मुख्य' या 'प्रधान' (Principal.) कर्म है, और जो वक्ता की इच्छानुसार द्वितीया में प्रयुक्त होता है वह 'गौण' या 'अकथित' (secondary) कर्म है।

३९—द्विकर्मक धातुओं के **कर्मवाच्य** (passive) में उपरिलिखित पहिली 'बारह' धातुओं का द्वितीयान्त **गौण** कर्म, और अन्त की 'चार' धातुओं का **प्रधान** कर्म 'प्रथमान्त' में बदल जाता है[1]। और दूसरा कर्म कर्तृवाच्य की भाँति वैसा ही बना रहता है। जैसे,

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
स धेनुं (ind) पयो (dir) दोग्धि।	तेन धेनुः (nom) पयो (acc) दुह्यते।
देवाः समुद्रं (ind) सुधां (dir) ममन्थुः	देवैः समुद्रः (nom) सुधां (acc) ममन्थे
सोऽजां (dir) ग्रामं (ind) नयति, हरति, कर्षति, वहति वा।	तेन अजा (nom) ग्रामं (acc) नीयते, ह्रियते, कृष्यते, उह्यते वा।

Exercise 5.

अध्यापक विद्यार्थिओं से प्रश्न पूछता है। गोपाल हरि के सौ रुपये चुराता है। याचक धनी से अन्न मांगता है। दुर्योधन ने पांडवों से राज को जुए (द्यूत) में जीता। राजा ने ब्राह्मण को सौ गौओं का दंड दिया।

१—गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम्।.......लादयो मताः। सि० कौ० (पा० ७।१।६९)

ब्राह्मण राजा के पुत्रों को नीति के तत्वों का उपदेश करता है (शास्)। लताओं से बालक फूलों को तोड़ता है। नौकर भार को बाजार में ले जाता है।

N. B. Use Passive construction also in the following:—

दुर्योधन ने कृष्ण से उसकी सेना मांगी। कृष्ण ने अर्जुन से पांडवों की क्षेम और कुशल पूछी। कृष्ण ने अर्जुन को कुरुक्षेत्र के पवित्र मैदान में आत्मतत्त्व का उपदेश दिया। चमकदार रत्न और औषधियां पृथिवी से निकाली गईं (दुह् Pass.)। मैले कपड़ों को धोबी नदी पर ले जाता है। बलभद्र देवदत्त से पुस्तक चुराता है।

षष्ठः पाठः

प्रेरणार्थक-क्रिया, णिजन्त (Causals)

४०—'णिजन्त' क्रियाओं का अर्थ यह है कि कोई मनुष्य या पदार्थ किसी अन्य मनुष्य या पदार्थ को किसी कर्म के करने को प्रेरित करता है। जैसे, अश् से अश्नाति 'खाता है।' आशयति 'खिलाता है।'

४१—'गणपठित' (Primitive) क्रिया का कर्ता 'णिजन्त' में 'तृतीयान्त' हो जाता है। 'प्रेरक' णिजन्त क्रिया का कर्ता होता है। और 'कर्म' वैसा ही बना रहता है। जैसे,

गणपठित	णिजन्त
देवदत्तः (nom.) ओदनं पचति।	(स) देवदत्तेन (ins.) ओदनं पाचयति।
रामः (nom.) भार्यां त्यजति।	(स) रामेण (ins.) भार्यां त्याजयति।

४२—जिन धातुओं का अर्थ 'गति' (motion), 'बुद्धि' (knowledge), या 'भक्षण' (eating) हो, और जिनका कर्म कोई 'शास्त्र' (literary work) हो, या जो 'अकर्मक' धातु हों, उनका 'असली' (primitive) कर्ता णिजन्त में द्वितीयान्त हो जाता है।[1] जैसे,

१. गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ। १. ४. ५२।

गणपठित	णिजन्त
शत्रवः स्वर्गमगच्छन् ।	शत्रून् (acc.) स्वर्गमगमयत् ।
शिष्याः वेदार्थं विदुः ।	शिष्यान् (acc.) वेदार्थमवेदयत् ।
बालका मोदकमश्नन् ।	बालकान् (acc.) मोदकमाशयत् ।
छात्रः वेदान् अधीते ।	छात्रं (acc.) वेदानध्यापयति ।
पृथ्वी सलिले आस्ते ।	पृथ्वीं (acc.) सलिले आसयत् ।

४३—उपरिलिखित नियम के कई अपवाद (exceptions) भी हैं:-

(क) नी और वह् धातुओं का असली कर्ता णिजन्त में द्वितीयान्त नहीं होता किन्तु तृतीयान्त होता है[1]। जैसे,

भृत्यो भारं नयति वहति वा । | भृत्येन (ins.) भारं नाययति वाहयति वा ।

परन्तु जब वह् का 'णिजन्त' कर्ता वाहक (briver) का वाचक हो तो णिजन्त में साधारण नियमानुसार 'द्वितीयान्त' का ही प्रयोग होता है।[2] जैसे—

वाहा रथं वहन्ति । | सूतो वाहान् (acc.) रथं वाहयति ।
वहन्ति यवान् बलीवर्दाः । | (स) वाहयति यवान् बलीवर्दान् (acc.)।

(ख) अद् और खाद् (to eat) का कर्ता भी 'णिजन्त' में 'तृतीयान्त' होता है[3]। जैसे,

बालोऽन्नमत्ति खादति वा | बालेन (ins.) अन्नमादयति खादयति वा ।

(ग) दृश् धातु के साथ णिजन्त में 'द्वितीया' का प्रयोग होता है[4]। 'भक्ताः हरिं पश्यन्ति' से '(गुरुः) हरिं भक्तान् (acc.) दर्शयति ।'

४४—णिजन्त क्रियाओं को 'कर्मवाच्य' में बदलने के लिए णिजन्त क्रिया का प्रधान कर्म, जो गणपठित (primitive) क्रिया का कर्ता है, प्रथमान्त होता है, और दूसरा कर्म वैसा ही बना रहता है। जैसे,

१. नीवह्योर्न । वार्तिक । २. नियन्तृकर्तृकस्य वहेरनिषेधः । वा० ।
३. आदिखाद्योर्न । वा० । ४. दृशेश्च । वा० ।

गणप०	णिजन्त	णि० कर्मवा०
रामो ग्रामं गच्छति ।	(स) रामं (dir.) ग्रामं गमयति	(तेन) रामो (nom.) ग्रामं गम्यते ।
भृत्यः कटं करोति ।	(स) भृत्येन भृत्यं (dir) वा कटं कारयति	(तेन) भृत्यः (nom.) कटं कार्यते ।
गोविन्दो मासमास्ते ।	(स) गोविन्दं (dir.) मासमासयति ।	(तेन) गोविन्दो (nom.) मासमास्यते ।
छात्रः वेदानधीते	छात्रं वेदानध्यापयति	(तेन) छात्रः वेदानधीयते ।

(ख) उन णिजन्त धातुओं का, जिनका अर्थ 'बुद्धि' (knowledge) और 'भक्षण' (eating) हो या जिनका कर्म 'शास्त्र' (literary work) हो, 'प्रधान' या 'गौण' दोनों में से प्रत्येक कर्मवाच्य का 'कर्ता' हो सकता है । जैसे, माणवकं धर्मं बोधयति' से 'माणवको धर्मं बोध्यते' या 'माणवकं धर्मो बोध्यते' दोनों हो सकते हैं ।

४५—'द्विकर्मक' धातु भी ४१ और ४२ का अनुसरण करते हैं । अर्थात् जिन धातुओं का अर्थ गति आदि है उनके साथ गणपठित क्रिया का कर्ता 'द्वितीया' में प्रयुक्त होता है । और अन्य धातुओं के साथ ४३ के अधीन 'तृतीया' में प्रयुक्त होता है । जैसे, 'वामनो बलिं वसुधां याचते' से '(स) वामनेन बलिं वसुधां याचयति' । गोपोऽजां नगरं हरति' से 'गोपं गोपेन वाऽजां नगरं हारयति' ।

Excrcise 6.

कृष्ण ने अर्जुन को क्षात्रधर्म जतलाया (विद्c.) । गुरु शिष्य को घर भेजता है (प्र-स्थाc.) । पिता पुत्र से दुष्टमार्ग को छुड़ाता है (त्यज्c.) । महाराज अपने शत्रुओं को जीत कर उनसे कर लेता है (दाc.) । राम अपने नौकर से कुँवे से जल मंगाता है (नी c. or हृ c.) । गीदड़ ने बैल को शेर से मरवा दिया । अध्यापक शिष्या से चित्र बनवाता है (कृ c.) । माता पुत्र को बड़े प्रेम से खाना खिलाती है (अद् c. or खाद् c.) । वेद मनुष्यमात्र को मुक्ति का मार्ग दिखाता है (दृश् c.) । ऋषिओं ने अन्य लोगों को वेद पढ़ाया (अधि-इc.) । सुमन्त ने घोड़ों से रथ को शीघ्र

चलवाया (वह् c.) और राम, लक्ष्मण और सीता को तमसा नदी के तट पर पहुंचाया।

N. B. Use the Passive of the causals.

गोविन्द ने अपने नौकर से अपना भार स्टेशन पर पहुंचाया (वह् c.)। अध्यापक बालकों को पढ़ने के लिए घंटा भर तक बिठाता है (आस् c.)। राजा अपनी प्रजा से अपने हुक्म को मनवाता है।

सप्तमः पाठः

करण (Instrumental)

४६—संस्कृत में करण प्रधानतया किसी क्रिया के **कर्त्ता** (agent) या **साधन** (instrument) का बोधक है[1]। यह क्रिया की सिद्धि में मुख्य साधक होता है।[2] जैसे, तेनोक्तं, स खड्गेन व्यापादितः 'वह तलवार से मारा गया'।

४७—अधोलिखित अर्थों में भी करण प्रयुक्त होता है:—

(क) **हेतुवाची** (reason) शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है।[3] जैसे, तेनापराधेन त्वां दण्डयामि 'उस अपराध के कारण मैं तुम्हें दंड देता हूँ।' विद्यया यशः 'विद्या से कीर्ति होती है।' अध्ययनेन वसति 'पढ़ने को रहता है।'

(ख) **प्रकृति** आदि शब्दों के साथ भी तृतीया प्रयुक्त होती है।[4] जैसे, प्रकृत्या दर्शनीयः 'स्वभाव से ही देखने योग्य।' जात्या ब्राह्मणः 'जन्म से ब्राह्मण।'

१. कर्तृकरणयोस्तृतीया। २. ३. १८। २. साधकतमं करणम्। १. ४.४२। ३. हेतौ। २. ३. २३। फलमपि इह हेतुः। द्रव्यादिसाधारणं निर्व्यापारसाधारणं च हेतुत्वम्। सि० कौ०। ४. प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्। वा०।

(ग) किसी वस्तु के **मूल्य** (Price) में । जैसे, रूप्यकशतेन विक्रीयमाणं पुस्तकम् 'सौ रुपए को बिकती हुई पुस्तक ।' आत्मानं सततं रक्षेद् दारैरपि धनैरपि 'आत्मा की स्त्री और धन (ख़रच करने) से भी सदा रक्षा करे ।'

(घ) गत्यर्थक धातुओं के साथ **वाहन** (vehicle), **मार्ग** या **दशा** (route or direction), और क्रियासाधक **शरीरांग** (part of body) वाचक शब्दों में भी तृतीया प्रयुक्त होती है । जैसे, वाजिना चरति 'घोड़े (vehicle) पर जाता है ।' कतमेन मार्गेण गतः 'वह किस मार्ग (route) से गया ।' स श्वानं स्कन्धेनोवाह 'वह कुत्ते को कंधे (part of body) पर उठा कर ले गया ।'

(ङ) **शपथ** अर्थवाली धातुओं के योग में । जैसे, आत्मनाहं शपे 'मैं अपनी कसम खाता हूं ।'

४८—**मार्ग** (place) या **समय** (time) वाचक शब्दों में यदि कार्य समाप्त हो गया हो तो तृतीया विभक्ति होती है[1] । जैसे, द्वादशभिर्वर्षैर्व्याकरणं श्रूयते 'बारह वर्ष (time) में व्याकरण पढ़ा जाता है ।' क्रोशेन पाठस्तेनाधीतः 'कोस में उसने पाठ याद कर लिया ।'

४९—**उत्कृष्टता** (excelling) और **समता** (resembling) वाचक धातुओं के साथ उन शब्दों में तृतीया होती है जिनके कारण उत्कृष्टता और समता है । जैसे, पूर्वान् महाभाग तयातिशेषे 'हे महाभाग, उस (भक्ति) में तुम अपने पूर्वजों से बढ़ गए हो ।' स्वरेण राममनुहरति 'स्वर में वह राम से मिलता है ।'

५०—जिस **विकृत अंग** (limb) से अंगवाले का 'अंगविकार' (defect of body) जाना जाए उस में तृतीया विभक्ति होती है[2] । जैसे, अक्ष्णा काणः 'आँख से काना ।' पादेन खंजः 'पाँओं से लंगड़ा' ।

(क) किसी व्यक्ति की विशेष **दशा** (state) या **अवस्था**

---

१. अपवर्गे तृतीया । २. ३. ६ । २. येनाङ्गविकारः । २. ३. २० ।

(conditiou) के बोधक लक्षण-वाचक शब्दों में तृतीया होती है[1]। जैसे, जटाभिस्तापसः 'जटाओं से तपस्वी।'

५१—'अर्थः', 'प्रयोजनं', 'कार्यं' (need, use) 'किं' (what ?) (कृ धातु के साथ और विना) शब्दों के योग में तृतीया होती है। जैसे, को मे जीवितेनार्थः 'मेरे लिए (gen.) जीवन का क्या प्रयोजन है।' देवपादानां सेवकैर्न प्रयोजनम् 'महाराज को सेवकों की कोई आवश्यकता नहीं।' तृणेन कार्यं भवतीश्वराणाम् 'धनवालों का काम तृण से भी सिद्ध होता है।' किं तया क्रियते धेन्वा 'उस गौ से क्या करना।'

(क) कृतं (away with) और अलं (enough) के साथ भी तृतीया प्रयुक्त होती है। जैसे, कृतमभ्युत्थानेन 'मत उठिए'। अलमतिविस्तरेण 'अधिक विस्तार न कीजिए।'

५२—सह, साकं, सार्धं और समं (with) के योग में तृतीया होती है[2]। जैसे, पुत्रेण सह पिता गतः 'पुत्र के साथ पिता गया।'

(क) 'हीन', 'ऊन', 'न्यून' आदि शब्दों के साथ भी तृतीया होती है। धर्मेण हीनाः 'धर्म से हीन।'

(ख) सम, समान, सदृश और तुल्य के योग में भी तृतीया होती है। जैसे, शक्रेण समः 'इन्द्र के समान।' अनेन सदृशः 'उसके तुल्य।' रजसा तुल्यः 'धूल के बराबर।'

Exercise 7.

सुख की भ्रान्ति से मनुष्य इस संसार में रहने की इच्छा करता है। सुख मुक्ति से प्राप्त होता है। महापुरुष स्वभाव से ही उदारचित्त होते हैं। गोविंद ने सौ रुपए में घोड़ा खरीदा और सवा सौ रुपए में बेच दिया। सीता, राम और लक्ष्मण लंका को जीत कर विमान पर अयोध्या को वापिस आए। वह भार को सिर पर उठा कर राजमार्ग से ग्राम को ले गया। मैं आप की कसम खाती हूँ (शप्) कि मैं अवश्य आप के साथ वन को जाऊँगी। पढ़ने को गोपाल प्रतिदिन यहाँ आता है।

---

१. इत्थंभूतलक्षणे। २. ३. २१। २. सहयुक्तेऽप्रधने। २. ३. १८६।

दो वर्ष में उसने परीक्षा पास की। बारह वर्ष में चारों वेद अंगों सहित पढ़े जाते हैं। ब्राह्मण सब वर्णों से विद्या में उत्कृष्ट है (अति-शी)। यह बालक आज्ञा पालन में राम से मिलता है। यह पुरुष टांग से लंगड़ा है, अतः इसके साथ चलने में क्या लाभ। वह लड़की किस मार्ग से गई। यह बालक मेखला के कारण ब्रह्मचारी है। हे अंधे दीपक से तुम्हारा क्या प्रयोजन है। ब्रह्मचारी को धन से क्या, उसका तो विद्याध्ययन से ही प्रयोजन है। रूप में यह अपने भाई से मिलता है। हे मातः! दुःखित मत हो (अलं), मैं अपने जीवन से भी आपके दुःख को दूर करूंगा। इस गौ का तुम क्या करोगे। राम ने रावण के साथ युद्ध किया। जाति से तो वह वैश्य है पर स्वभाव से शूद्र जान पड़ता है। आचार से हीन पुरुष पशु के समान है। तुम्हें मेरी कसम है यदि सच सच न कहो। बहुत कहने से क्या, दासता मृत्यु के तुल्य है। वह भीम के सदृश बलवान् है।

अष्टम: पाठः

सम्प्रदान (Dative)

५३—अत्यन्त इष्ट पदार्थ समझ कर जिसके लिए देने का अभिप्राय किया जाए वह कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है।[1] सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त होती है।[2] जैसे, शिष्याय विद्यां ददाति 'शिष्य को विद्या देता है।' यहां शिष्य (dat.) गौण कर्म है।

५४—जिन धातुओं का अर्थ **देना** (दा, अर्पय) **कहना** (चक्ष् शंस्, कथ्, ख्या, निवेदय) **प्रतिज्ञा करना** (प्रति-आ-श्रु, प्रति-ज्ञा) और **दिखाना** (दर्शय) हो उनके **गौण** (ind.) कर्म में चतुर्थी प्रयुक्त होती है। जैसे विप्राय गां ददाति 'ब्राह्मण को गौ देता है।' कथयामि ते भूतार्थम् 'मैं तुमसे (dat.) सत्य कहता हूं।' विप्राय गां प्रतिशृणोति

---

१. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। १. ४. ३२। २. चतुर्थी संप्रदाने। २. ३. १३।

ब्राह्मण से (dat.) गौ की प्रतिज्ञा करता है।'

(क) भेजना और फेंकना (casting) अर्थ वाली धातुओं के 'गौण' कर्म में चतुर्थी प्रयुक्त होती है। जैसे, भोजेन दूतो रघवे विसृष्टः 'भोज ने रघु के पास दूत भेजा।' ते रामाय शरान् क्षिपन्ति 'वे राम पर तीर फेंकते हैं।'

५५—रुच्यर्थक धातुओं के योग में चाहने वाले का सम्प्रदान कारक होता है।[1] जैसे, ब्रह्मचारिणे रोचते विद्या 'ब्रह्मचारी को विद्या भाती है।'

५६—धृ (owe) धातु के योग में उत्तमर्ण (creditor) में चतुर्थी होती है।[2] जैसे, देवदत्ताय शतं धारयति 'वह देवदत्त के सौ रुपए धराता है।'

५७—स्पृह् (desire) धातु के योग में ईप्सित अर्थात् जिस पदार्थ के ग्रहण की इच्छा होती है वह सम्प्रदान-संज्ञक होता है[3]। जैसे, धनाय स्पृहयति 'वह धन की इच्छा करता है।'

५८—'क्रुध्', 'द्रुह्', 'ईर्ष्य्', 'असूय्' और इनके पर्यायवाचक धातुओं के योग में 'जिसके प्रति कोप किया जाए', वह सम्प्रदान-संज्ञक होता है।[4] जैसे, राजा दुष्टाय क्रुध्यति 'राजा दुष्ट पर क्रोध करता करता है।' शत्रवे द्रुह्यति 'शत्रु से द्रोह करता है।' हरये ईर्ष्यति असूययति वा।

(क) 'उपसर्गयुक्त' क्रुध् और द्रुह् के साथ चतुर्थी के स्थान में द्वितीया प्रयुक्त होती है।[5] जैसे, दुष्टम्-अभिक्रुध्यति, अभिद्रुह्यति वा 'दुष्ट पर क्रोध करता है या द्रोह करता है।'

५९—जिस कार्य के लिए कारणवाची शब्द का प्रयोग किया हो उस कार्यवाची शब्द में चतुर्थी विभक्ति होती है।[6] जैसे, यूपाय दारु, 'खंभे के लिए काठ।' कुण्डलाय हिरण्यम् 'कुंडल के लिए सोना।'

---

१. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः। १. ४. ३३। २. धारेरुत्तमर्णः। १. ४. ३५। ३. स्पृहेरीप्सितः। १. ४. ३६। ४. क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः। १. ४. ३७। ५. क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म। १. ४. ३८। ६. तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या। वा०।

(क) *अप्रयुज्यमान **तुमुन्नन्त** (Infinitive) के कर्म में चतुर्थी विभक्ति होती है।[1] जैसे, फलेभ्यो (=फलान्याहर्तुं) याति 'फल लाने को जाता है।' युद्धाय (योद्धुं) प्रस्थितः 'लड़ने को गया।'

६०—**क्लृप्, सं-पद्** (be fit for, tend or conduce to) और इनके पर्य्यायवाचक **जन्, प्र-भू** आदि धातुओं के योग में **फल** (result) वाचक शब्दों में चतुर्थी विभक्ति होती है।[2] जैसे, भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते 'भक्ति ज्ञान को उत्पन्न करने में समर्थ है।' रक्षणाय संपद्यते प्रभवति वा 'रक्षा के लिए समर्थ है।'

(क) **अस्** और **भू** (प्रयुक्त और अप्रयुक्त) का भी ऐसे ही प्रयोग होता है। जैसे, लघूनामपि संश्रयो रक्षायै भवति 'क्षुद्रों की एकता भी रक्षा के लिए समर्थ होती है।'

(ख) **उत्पात** (portentous phenomenon) अर्थात् बिजली के चमकने और ओले आदि के गिरने से जो बात जानी जाए उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।[3] जैसे, वाताय कपिला विद्युत् 'पीली बिजली आंधी को सूचित करती है।'

(ग) **हित** और **सुख** के योग में भी चतुर्थी होती है। जैसे, ब्राह्मणाय हितं—सुखम् 'ब्राह्मण के लिए हितकारी।

६१—'नमः', 'स्वस्ति', 'स्वाहा', 'स्वधा', 'अलं' (equal to) और और 'वषट्' के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।[4] जैसे, स्वस्ति भवते, अग्नये स्वाहा, नमो ब्रह्मणे।

(क) 'कुशलं', 'स्वागतं' आदि भी ऐसे ही प्रयुक्त होते हैं। कुशलन्ते (dat.), स्वागतं देव्यै।

(ख) **अलम्** (sufficient, match for), और इसके पर्य्याय-

१. तुमर्थाच्च भाववचनात्। २. ३. १५। २. क्लृपि संपद्यमाने च। वा०। ३. उत्पातेन ज्ञापिते च। वा०। ४. नमःस्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च। २. ३. १६।

वाचक प्रभु और शक्त के योग में भी चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे, दैत्येभ्यो हरिरलम् 'हरि दैत्यों के लिए काफ़ी है।' प्रभुः, शक्तः मल्लो मल्लाय 'एक मल्ल के (मुक़ाबले में) दूसरा मल्ल काफ़ी है।'

Exercise 8.

देवदत्त यज्ञदत्त को धन देता है (अर्पय)। गोपाल ने अपने गुरु से सत्य बोलने की प्रतिज्ञा की, और सारा वृत्तान्त गुरु को सुना दिया (निवेदय)। पांडवों ने अपना आधा राज मांगने के लिए कृष्ण को कौरवों के पास भेजा। प्रत्येक मनुष्य धन की इच्छा करता है (स्पृह्)। कौरवों ने चारों ओर से अर्जुन पर तीर चलाए, परन्तु वह अकेला सब शत्रुओं के लिए काफ़ी था (अलम्)। गोपाल को खेल पसंद है परन्तु गोविन्द को सदा विद्याध्ययन रुचिकर है (रुच्)। हरी घास गौ को हितकर है (हितम्)। हे सखि! तुम मेरे पर क्यों कोप करती हो अभी तो मेरे दो वृक्षों का सींचना आपके जिम्मे है (धृ)। घृत आयु के लिए हितकर है, अतः प्रत्येक मनुष्य इसकी इच्छा करता है। दुर्योधन अर्जुन से द्रोह करता था। गुरु दुष्ट बालकों पर क्रोध करता है (अभि-क्रुध्)। गोपाल अपने सहपाठियों से ईर्ष्या करता है। ब्रह्मचारी प्रातःकाल ही फूलों के लिए वाटिका को जाता है। भले लोगों की संगत आनन्द के देने वाली होती है (क्लृप्)। हे मूर्ख! यह तेरा दोष नहीं, अच्छे आदमी की शिक्षा गुण देने वाली होती है (सं-पद्) बुरे आदमी की नहीं। हे राजन्! आपका शस्त्र पीडितों की रक्षा के लिए है। पीत बिजली अनाज को और सुफेद दुर्भिक्ष को सूचित करती है। हे ब्राह्मण, आपको नमस्कार है, आप मेरे पुत्रों की नीतिशिक्षा के लिए योग्य हैं। सीता के लिए स्वस्ति! लक्ष्मण के लिए कुशल! राम के लिए स्वागत! इस प्रकार सीता, राम और लक्ष्मण को नमस्कार कर के अयोध्या-वासिओं ने आनन्द को अनुभव किया।

नवमः पाठः

अपादान (Ablative)

६२--जिससे वियोग हो उसे 'अपादान' कहते हैं।[1] अपादान में 'पंचमी' विभक्ति होती है।[2] जैसे, ग्रामादागच्छति 'गांव से आता है।'

६३—अपादान कारण और हेतु (Cause, reason, or motive) को भी दर्शाता है। जैसे, लोभाद्धनं गृह्णाति 'लोभ से (कारण) धन लेता है।' पर्वतोऽग्निमान् धूमवत्त्वात् 'धुएँ वाला होने के कारण पर्वत अग्नि वाला है।'

६४—तुलना (Comparison) बोधक शब्दों के योग में जिससे तुलना की जाए उसमें पंचमी विभक्ति होती है।[3] जैसे, गोविन्दाद् रामो विद्वत्तरः 'गोविन्द से राम अधिक विद्वान् है।' अनृतात् सत्यं श्रेयः 'झूठ से सत्य बढ़ कर है।'

६५—जहां ल्यबन्त क्रिया (absolutive) का लोप हो वहां उसके कर्म में पंचमी विभक्ति होती है।[4] जैसे, प्रासादात्प्रेक्षते (प्रासादमारुह्य) 'महल से देखता है।'

(क) प्रश्न (Question) और उत्तर (Answer) वाची शब्दों में पंचमी विभक्ति होती है।[5] जैसे, कुतो भवान् ? पाटलिपुत्रात् 'आप कहां से आए हैं ? पाटलिपुत्र से।'

६६—जुगुप्सा (Abbhorance), विराम (Cessation) और प्रमाद (Swerving) अर्थ वाले धातुओं के योग में पंचमी होती है।[6] जैसे, पापात् जुगुप्सते, विरमते 'पाप से घृणा करता है, हटता है।'

---

१. ध्रुवमपायेऽपादानम्। १. ४. २४। २. अपादाने पंचमी। २. ३. २८। ३. पञ्चमी विभक्तेः। २. ३ ४२। ४. ल्यब्लोपे कर्मण्युपसंख्यानम्। वा०। ५. प्रश्नाख्यानयोश्च। वा०। ६. जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्। वा०।

६७—नियमपूर्वक पढ़ने वाले का कारक अपादान संज्ञक होता है।[1] जैसे, उपाध्यायादधीते 'उपाध्याय से पढ़ता है।'

(क) जन् (to be born) धातु के कर्ता की प्रकृति (Prime cause) में पंचमी विभक्ति होती है।[2] जैसे, अग्नेर्धूमो जायते 'आग से धुआँ उत्पन्न होता है।'

(ख) भू धातु के कर्ता के प्रभव (Source) में पंचमी होती है।[3] जैसे, हिमवतो गङ्गा प्रभवति 'हिमालय से गंगा निकलती है।'

६८—भय (fear) और रक्षा (protection) अर्थ वाले धातुओं के योग में भय के हेतु में पंचमी विभक्ति होती है।[4] जैसे, वृकेभ्यो बिभेति 'भेड़ियों से डरता है।' चोरेभ्यो रक्षति 'चोरों से रक्षा करता है।'

(क) वारण (Preventing) अर्थ वाले धातुओं के योग में अत्यन्त इष्ट कारक में पंचमी होती है।[5] जैसे, सस्येभ्यो गां वारयति 'धान्य (खेतों) से गौ को हटाता है।'

(ख) परा पूर्वक जी धातु के प्रयोग में असोढ (unbearable) अर्थात् जिसको न सह सके उसमें पंचमी विभक्ति होती है।[6] जैसे, अध्ययनात् पराजयते 'अध्ययन को सह नहीं सकता।'

६९—जहाँ से मार्ग और काल का परिमाण (measure) किया जाए वहां पंचमी विभक्ति होती है।[7] जैसे, समुद्रात् पुरी क्रोशौ 'समुद्र से पुरी दो कोस है।' सप्ताहात् 'सप्ताह के पीछे।'

७०—'अन्य', 'पर', 'इतर' (other than); 'आरात्' (near, remote); 'ऋते' (without); और दिशावाची शब्दों (direction)

---

१. आख्यातोपयोगे। १. ४. २९। २. जनिकर्तुः प्रकृतिः। १. ४. ३०। ३. भुवः प्रभवः। १. ४. ३१। ४. भीत्रार्थानां भयहेतुः। १. ४. २४। ५. वारणार्थानामीप्सितः। १. ४. २७। ६. पराजेरसोढः। १. ४. २६। ७. यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पंचमी। वा०।

के साथ पंचमी विभक्ति होती है[1] । जैसे, कृष्णाद्-अन्यो-भिन्न-इतरो-वा । आराद्वनात् 'वन से निकट या दूर ।' ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः 'ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं ।'

(क) 'प्रभृति', 'आरभ्य', 'बहिः', ऊर्ध्व', 'परं', 'अनन्तरं' के योग में भी पंचमी होती है । जैसे, शैशवात् प्रभृति-आरभ्य 'बचपन से लेकर ।' पुराद्बहिः 'शहर से बाहर ।'

(ख) 'पृथक्' (different) 'बिना', 'नाना' अव्ययों के योग में विकल्प से द्वितीया, तृतीया और पंचमी होती है[2] । जैसे, रामाद्, रामेण, रामं वा विना-पृथक्-नाना ।'

(क) आ (till, as far as) उपसर्ग के योग में पंचमी विभक्ति होती है । जैसे, आकैलासात् 'कैलास तक ।'

७१—प्रतिनिधि (representative, exchange) के अर्थ में प्रति उपसर्ग के योग में पंचमी प्रयुक्त होती है[3] । जैसे, प्रद्युम्नः कृष्णात्प्रति 'प्रद्युम्न कृष्ण का प्रतिनिधि है ।' तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान् 'उड़दों को तिलों से बदलता है ।'

Exercise 9.

वह अपने निश्चय से नहीं हटा (चल्) । प्रेम के कारण लक्ष्मण राम के साथ बन को गया । वेद ईश्वरीय ज्ञान है, क्योंकि मनुष्यों का ज्ञान बदलने वाला है । सत्य सब गुणों से अच्छा है । ज्ञान कर्म से बढ़ कर है (अति-रिच्) । वह पर्वत के शिखर से नीचे बहती हुई नदियों को देखता है । अच्छे लड़के अपने प्रतिदिन के कार्य से प्रमाद नहीं करते । भद्र पुरुष सदैव झूठ से डरते हैं । प्राचीन काल में ब्राह्मण अपने आश्रमों से राजा जनक के पास जाते थे, और उनसे ब्रह्मविद्या पढ़ते थे । गंगा हिमालय से निकलती है । विषयों के संग से काम उत्पन्न होता है (जन्), और काम

---

१. अन्यारादितरर्ते दिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाज्जाहियुक्ते । २. ३. ६ । २. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् । २. ३. ३२ । ३. प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् । २. ३. ११ ।

से क्रोध पैदा होता है (उद्-भू)। ब्राह्मण सन्मान से सदैव डरता है (उद्-विज्) और पाप से अपनी रक्षा करता है। मैं गुरु से व्याकरण पढ़ता हूँ। जो पाप से हटाए (निवार्य) और हित में लगाए (युज्) वह सच्चा मित्र है। वह गणित को सह नहीं सकता (परा-जी)। एक सप्ताह के पश्चात् आज मैं इस बाग में आया हूँ। जब से शकुन्तला ने दुष्यन्त को देखा है, तब से उसने भोजन भी छोड़ दिया है। कोई विद्यार्थी परिश्रम के बिना (ऋते) परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकता है। दर्प आत्म-सम्मान से भिन्न है। इस गाँव से दूर पूर्व को एक बड़ा पहाड़ है। पढ़ने के पीछे (अनन्तरं) कुछ आराम भी करना चाहिए। मैं इस कहानी को आरंभ से सुनना चाहता हूं। उसने घोड़े के बदले गौ ली, जिसका मोल घोड़े के मोल से पांच गुणा है। चंद्रगुप्त का राज्य काबुल तक था। ब्राह्मण को विद्या संसार से भी अधिक प्रिय होती है।

दशमः पाठः

सम्बन्ध (Genetive)

७२—जहां कर्म आदि कारक संज्ञा की विवक्षा न हो वह शेष कहलाता है। इसमें षष्ठी विभक्ति होती है।[1] यह एक वस्तु के दूसरी वस्तु के साथ सम्बन्ध को दर्शाता है। जैसे, वृक्षस्य शाखा 'वृक्ष की शाखा।' मृत्तिकायाः घटः 'मिट्टी का घड़ा।'

७३—कई धातुओं (verbs) के साथ षष्ठी प्रयुक्त होती है :—

(क) ईश्, प्र-भू (be master of, have power over) अस्, भू (be), और विद्यते आदि के योग में षष्ठी प्रयुक्त होती है।[2] जैसे, ग्रामस्येष्टे 'वह ग्राम का मालिक है।' आत्मनः प्रभविष्यामि 'मैं अपने आप को वश में रक्खूंगा।' मम पुस्तकं विद्यते 'मेरे पास पुस्तक है।'

---

१. षष्ठी शेषे । २. ३. ५०। कारकप्रातिपदिकार्थव्यतिरिक्तः स्वस्वामिभावादिसम्बन्धः शेषः। सि० कौ०। २. अधीगर्थदयेशां कर्मणि। १. ३. ५२।

(ख) 'दय' (have mercy) ; 'अधि-ई', 'स्मृ' (remember) ; और 'अनु-कृ' (imitate) धातुओं के योग में अनभिहित कर्म में विकल्प से (द्वितीया के साथ) षष्ठी प्रयुक्त होती है। जैसे, मातुः स्मरति बालः 'बालक माता का स्मरण करता है।' भीमस्यानुकरिष्यामि 'मैं भीम का अनुकरण करूंगा।'

(ग) 'उप-कृ', 'प्र-सद्' (do good) ; 'अप-कृ', 'अप-राध्' (do harm) 'वि-श्वस्' (trust in), 'क्षम्' (forbear with) के साथ कर्म में (सप्तमी के विकल्प से) षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, मित्राणामुपकरोति 'वह मित्रों का भला करता है।' किं मया तस्यापकृतम् 'मैंने उसका क्या बुरा किया।' क्षमस्व मे (gen.) 'मेरे पर क्षमा करो।'

(घ) 'वद्' (speak of) या 'सम्भावना' अर्थ वाले धातुओं के साथ। जैसे, स मम एवं वदति 'वह मेरे विषय में ऐसा कहता है।'

(ङ) ज्ञा (have incorrect knowledge,suppose) और व्यव-हृ (transact business) के साथ। जैसे, तैले सर्पिषो जानाति 'तेल में घी की भूल करता है।' शतस्य व्यवहरति 'सौ रुपया व्यापार में लगाता है।'

(च) कभी 'देना', 'कहना' आदि अर्थ वाली धातुओं के साथ (cf. ५४) गौण कर्म में चतुर्थी के स्थान में षष्ठी होती है। जैसे, मया तस्याभयं प्रदत्तम् 'मैंने उसको अभय प्रदान किया।' ममानतिक्रुद्धो मुनिः 'मुनि मुझसे (gen.) बहुत कुपित नहीं है।'

७४—षष्ठी विभक्ति प्रायः विशेषणों (adjectives) के साथ भी प्रयुक्त होती है:—

(क) आयत्त (dependent on) प्रिय (dear to) आदि के पर्य्यायवाचक और संबन्ध (belonging) बोधक विशेषणों के साथ। जैसे, तवायत्तः स प्रतिकारः 'वह प्रतिकार तेरे अधीन है'। राज्ञां प्रियः। तस्य धनम्।

(ख) अभिज्ञ (acquainted with) कोविद (skilled in)

उचित (accustomed to) और इनके पर्य्यायवाचकों के साथ (सप्तमी के विकल्प से)। जैसे, लोकव्यहाराणामभिज्ञोऽसि 'आप संसार के व्यवहारों को जानने वाले हैं।' संग्रामाणां कोविदः 'युद्ध में चतुर।' शोणितस्य उचितः सिंहः 'रक्त (पीने) की आदत वाला शेर।'

(ग) तुल्य (like, equal to) और इसके पर्यायवाची शब्दों के योग में (तृतीया के विकल्प से)।[1] जैसे, कृष्णस्य तुल्यः 'कृष्ण के बराबर।'

७५—कृदन्त सम्बन्धी कर्ता (agent) और कर्म-कारक (object) में षष्ठी विभक्ति होती है।[2] जैसे, कूपस्य खनिता 'कुँवे के खोदने वाला।' दुःखायेदानीं रामस्य सुहृदां दर्शनम् 'राम का अपने मित्रों का देखना अब दुःख को देने वाला है।'

(क) विधि-कृदन्त (Potential passive participles) के योग में तृतीया के साथ विकल्प से षष्ठी होती है।[3] जैसे, मम (मया) सेव्यो हरिः 'मुझे हरि की सेवा करनी चाहिए।'

(ख) क्तान्त-कृदन्त (past pass. participles) के योग में वर्तमान काल के अर्थ में षष्ठी होती है।[4] जैसे, विदितं मे भुवनत्रयम् 'मैं तीनों लोकों को जानता हूं।' तस्या गतम् 'उसकी चाल।'

७६—दिग्वाची 'तस्' अन्तवाले क्रिया-विशेषणों और 'उपरि, अधः, पुरः, पश्चात्, अग्रे, पुरस्तात्' आदि के साथ भी षष्ठी प्रयुक्त होती है।[5] जैसे, ग्रामस्य दक्षिणतः 'ग्राम के दक्षिण में।' पुरस्ताद्यतीनां 'यतियों में आगे।'

(क) एनान्त दिग्वाची क्रिया-विशेषणों के साथ द्वितीया के विकल्प

१. तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्। २. ३. ७२। २. कर्तृकर्मणोः कृति। २. ३. ६५। ३. कृत्यानां कर्तरि वा। २. ३. ७१। ४. क्तस्य च वर्तमाने। २, ३, ६७। ५. षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन। २. ३. ३०।

से षष्ठी होती है।[1] जैसे, उत्तरेणास्य 'इस (स्थान) के उत्तर को।'

७७—कृत्वः और इसके समानार्थ प्रत्ययान्त शब्दों (multiplicatives) जैसे, द्वि, त्रिः, अष्टकृत्वः इत्यादि, के योग में जो **कालवाची** शब्द है उससे अधिकरण कारक (locative sense) में षष्ठी विभक्ति होती है।[2] जैसे, दिवसस्य पञ्चकृत्वो भुङ्क्ते बालः 'यह बालक दिन में पांच बार खाता है।' दिवसस्य द्विरधीते 'दिन में दो बार पढ़ता है।'

७८—दो वस्तुओं में **भेद** (difference) या **विकल्प** (option) को दर्शाने के लिए भी षष्ठी प्रयुक्त होती है। जैसे, एतावानेव तव इन्द्रस्य च विशेषः 'तुम्हारे और इन्द्र में केवल इतना ही भेद है।' व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते 'पाप में और मृत्यु में पाप अधिक बुरा कहा जाता है।'

(क) हेतु (cause, reason) और इसके पर्यायवाचक शब्दों के साथ षष्ठी प्रयुक्त होती है। जैसे, अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छन् 'थोड़े के कारण से बहुत छोड़ने की इच्छा करता हुआ।'

(ख) दूर और अन्तिक (near) आदि के साथ पंचमी के साथ विकल्प से षष्ठी प्रयुक्त होती है। जैसे, ग्रामस्य दूरम् अन्तिकं वा।

Exercise 10.

जो लोग अपने आपको वश में रखते हैं (प्र-भू), वही दूसरों पर शासन करते हैं (ईश्)। मेरे पास व्याकरण का एक बड़ा उपयोगी पुस्तक है। यह राजा अपने पूर्वजों का अनुकरण करके अपने शत्रुओं पर दया करता है। अपने नौकर के उपकार को याद कर के (स्मृ) वह उस पर विश्वास करता है। हे राजन्! मैंने आपका बड़ा अपकार किया है, आप मुझे क्षमा कीजिए। इस मूर्ख से सब सम्भव है (संभाव्यते) सो इसमें कोई

---

१. एनपा द्वितीया। २. ३. ३१। २. कृत्वोर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे। २. ३. ६४।

आश्चर्य नहीं यदि वह आप के विषय में ऐसा कहता है। बैल पर प्रसन्न हो कर, सिंह ने उसको अभय प्रदान किया। राम को सीता स्वभाव से ही प्रिया थी। इस राजा का सारा राज्य मंत्रियों के अधीन है। जो गुणों को नहीं जानता (अनभिज्ञः) अच्छे पुरुष उसको छोड़ देते हैं। कष्ट सहने की आदतवाले (उचित) मनुष्य इस संसार में सिद्धि को प्राप्त करते हैं। कूप के खोदने वाले के सदृश पाप के करने वाला इस संसार में नीचे ही नीचे जाता है। प्रत्येक बालक को अपने माता पिता की पूजा करनी चाहिए। मैं यह जानता हूं (use क्तान्त) कि भद्र पुरुष सत्यवादी का सन्मान करते हैं। इस नगर के उत्तर में (उत्तरतः) एक ऊंचा पहाड़ है जिसके ऊपर (उपरि) सदैव बरफ़ रहती है। हर एक द्विज को दिन में दो बार सन्ध्या करनी चाहिए, और एक बार बलिवैश्वदेव यज्ञ। कुछ दिनों के पीछे वह दिन में चार बार पढ़ने लगा। शरीर का और गुणों का बड़ा अन्तर है,शरीर शीघ्र नष्ट होता है और गुण देर तक रहते हैं। अपमान और मृत्यु में विद्वान् अपमान को बुरा समझते हैं। पाठशाला मेरे घर के निकट है। हजार रुपया मैंने व्यापार में लगाया। मूर्खता के हेतु लोगों ने उसका अपमान किया। उसने भूल से रस्सी को साँप समझा।

एकादशः पाठः

अधिकरण (Locative)

७६—'जिस में पदार्थ धरे जाते हैं' या जिस 'में' या 'पर' कर्ता अपना व्यापार करता है उसे 'आधार' कहते हैं।[1] आधार में 'अधिकरण' कारक होता है, और उस में 'सप्तमी' विभक्ति होती है[2]। जैसे, तिलेषु तैलम्; कटे शेते; धर्मे तिष्ठति।

(क) किसी क्रिया के समय को निर्दिष्ट करने के लिए सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, आषाढस्य प्रथमे दिवसे 'आषाढ (मास) के पहिले दिन को।'

---

१. आधारोऽधिकरणम्। १. ४. ४५। २. सप्तम्यधिकरणे च। २. ३. ३६।

८०—**अतिशयवाचक** (superlative) विशेषणों के साथ, और समुदाय में किसी वस्तु या व्यक्ति के **निर्धारण** (selection, distinction) में **समुदायवाचक** शब्द में (षष्ठी के विकल्प से) सप्तमी होती है[1] (cf. 'of' or 'among in English)। जैसे, नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः। गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा 'गौओं में काली गौ अधिक दूध देती है।'

८१—**कर्म-संयोग** में जिस निमित्त के लिए वह कर्म किया जाता है उस **निमित्त वोल** शब्द में सप्तमी विभक्ति होती है[2]। जैसे, चर्मणि द्वीपिनं हन्ति 'खाल के लिए गैंडे को मारता है।'

८२—'स्निह्' 'अनुरञ्ज्', 'अभिलष्', 'रम्', और इनके पर्य्याय-वाचक धातुओं के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, बालेऽस्मिन् स्निह्यति मे मनः 'मेरा मन इस बालक में स्नेह रखता है। 'राजनि अनुरक्ताः प्रजाः 'प्रजा राजा से प्रेम करती है।' श्रेयसि रतः 'श्रेयस में लगा हुआ।'

८३—**कारण** (cause) या इसके पर्य्यायवाची शब्दों के योग में **कार्य्य** (effect) में सप्तमी प्रयुक्त होती है। जैसे, दैवमेव हि नृणां वृद्धौ क्षये कारणम् 'निश्चय मनुष्यों की वृद्धि और क्षय का कारण दैव

८४—युज् धातु के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, कर्मणि नियुङ्क्ते 'काम पर नियत करता है।'

(क) **योग्यता** (fitness, suitableness) बोधक शब्दों के योग में 'जिन नामों से योग्यता निर्दिष्ट हो' उनमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, युक्तमिदं त्वयि 'यह तुम्हारे योग्य है।' त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं तस्मिन्

---

१. यतश्च निर्धारणम्। २. ३. ४१। जातिगुणक्रियासंज्ञाभिः समुदायादेकदेशस्य पृथक्करणं निर्धारणम्। सि० कौ०। २. निमित्तात्कर्मयोगे। वा०।

युज्यते 'तीन लोक का राज्य भी उसके योग्य है।' ते गुणाः परस्मिन् ब्रह्मणि उपपद्यन्ते 'ये गुण परब्रह्म के योग्य हैं।'

८५—'ग्रह्' (seize), 'बन्ध्' (fasten), 'लग्', 'श्लिष्', 'सञ्ज्' (cling), वि-श्वस् (believe in) और इनके पर्य्यायवाची धातुओं के योग में सप्तमी होती है। जैसे, केशेषु गृहीत्वा 'केशों से पकड़ कर।' वृक्षे बबन्ध 'वृक्ष में बांधा।' व्यसनेष्वासक्तः 'व्यसनों में फंसा हुआ।' शत्रुषु विश्वसिति 'शत्रुओं पर विश्वास करता है।'

(क) 'क्षिप्', 'मुच्', प्र-हृ 'अस्' (throw or dart) के योग में 'जिस की ओर कुछ फैंका जाए' उस में सप्तमी होती है। जैसे, अरौ बाणान् क्षिपति 'शत्रु पर बाण चलाता है।' मृगेषु शरान् मुमोच 'उसने मृगों पर तीर चलाए।' अनागसि प्रहरति 'निर्दोष पर प्रहार करता है।'

८६—पूजा (adoration) अर्थात् सत्कारपूर्वक सेवा करने के अर्थ में वर्त्तमान (used) साधु और निपुण शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है[1]। जैसे, पितरि साधुः, मातरि निपुणः।

८७—व्यापृत, आसक्त, व्यग्र, तत्पर (engaged in, intent on); कुशल, निपुण, शौण्ड, पटु, प्रवीण, पण्डित (skilfull); और धूर्त, कितव (rogue) के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, गृह-कर्मणि व्यापृता व्यग्रा वा 'घर के काम में लगी हुई।' अक्षद्यूते निपुणः प्रवीणः, 'जूए में निपुण।'

Exercise 11.

जिन वृक्षों पर तुमने फल देखे हैं, उन पर पक्षी रहते हैं। दशरथ को पुत्रों में राम सब से प्यारा था। सब प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है और मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है। इस मास की पहली तारीख को मैं आप का रुपया दे दूँगा। लोग बालों के लिए चमरी को मारते हैं। दुर्जन प्रायः अपने ही सुख में सदा लगे रहते हैं। राजा के लड़के राजनीति में कोई अभिलाषा नहीं रखते थे। नल ने दमयन्ती को कहा कि मैं तुमसे स्नेह

१. साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः। २. ३. ४३।

नहीं करता। परन्तु उसने नल का विश्वास नहीं किया। चन्द्रमा के बढ़ने और घटने का कारण सूर्य ही है। युधिष्ठिर ने यज्ञ में भिन्न भिन्न राजाओं को भिन्न भिन्न कार्यों पर नियत किया (नि-युज्)। कैकेयी रामचन्द्र के बनवास का कारण थी। संसार के सुख-दुःखों में निःस्पृह मनुष्य राज्य करने के योग्य है। वन के मृगों पर प्रहार मत करो। झूठ बोलना अच्छे बालकों के योग्य नहीं है। राजपुरुष ने चोर को बाँहों से पकड़ कर वृक्ष की शाखा से बाँध दिया। जो लोग विषयों में फंसे हुए हैं, वे सदा इस संसार में और मृत्यु के पीछे भी दुःख ही भोगते हैं। शस्त्र-विद्या में निपुण अर्जुन पर शत्रुओं ने तीर चलाए। जो विद्यार्थी अपने गुरु की पूजा करते हैं (साधु or निपुण) वे दिन प्रतिदिन यश को प्राप्त करते हैं। वह भले लोगों पर दुराचारी है (असाधु)। यद्यपि नल जुए के खेल में निपुण था तो भी पुष्कर ने उसे छल से जीत लिया। गुरु भले विद्यार्थियों को प्यार करता है(स्निह्)। इसके सिर पर मत मारो, क्योंकि भले लोगों को सब पर दया करनी चाहिए।

द्वादशः पाठः

Genetive and Locative Absolutes.

८८—जब कृदन्त (participle) की समता एक ऐसे कर्त्ता के साथ हो जो कि प्रधान क्रिया (Principal verb) के कर्त्ता से भिन्न हो तो वह वाक्य absolute construction में होता है।

यदि अप्रधान वाक्य (Subordinate clause) का 'कर्त्ता' या उसके स्थान में प्रयुक्त कोई 'सर्वनाम' प्रधान वाक्य (Principal clause) में न पाया जाए, तो 'अप्रधान वाक्य' में यह रचना प्रयुक्त होती है। उदाहरण के लिए इस वाक्य को लो:—'राम, जब उसने लंका को ले लिया, अयोध्या को वापिस आया।' यहां दोनों वाक्यों का कर्त्ता एक ही है अतः यहां absolute construction नहीं हो सकती। इसका अनुवाद यह होगाः—'लङ्कां गृहीत्वा रामोऽयोध्यां निववृते।' परन्तु इस वाक्य 'राम,

जब लक्ष्मण ने लंका को ले लिया, अयोध्या को वापिस आया' के अनुवाद में absolute प्रयुक्त हो सकता है। जैसे, 'लक्ष्मणेन गृहीतायां लङ्कायां रामोऽयोध्यां निववृते।'

Locative Absolute.

८९—(क) जिस क्रिया से 'क्रियान्तर' का लक्षण किया जाए, अर्थात् जिस क्रिया का काल उससे भिन्न दूसरी क्रिया के काल से जाना जाए, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।[1] जैसे, गोषु दुह्यमानासु स गतः 'गौओं के दुहे जाने पर वह गया।' यहां दोहन क्रिया से गमन क्रिया का लक्षण किया जाता है, अतः 'दोहन' क्रिया में सप्तमी हुई।

(ख) इस रचना का विधेय (predicate) कृदन्त होता है और उसकी अपने कर्त्ता के साथ 'लिंग' और 'वचन' में समता होती है। जैसे, गोषु दुह्यमानासु।

(ग) 'ज्यों ही', 'अभी मुशकिल से—जब', 'उसी समय जब' (*cf.* Eng. 'as soon as', 'scarcely—when' etc.) के अर्थ में 'एव' और 'मात्र' absolute कृदन्त के पीछे प्रयुक्त होते हैं। जैसे, प्रभातायामेव रजन्याम् 'अभी मुशकिल से दिन निकला ही था जब।' प्रविष्टमात्र एव तत्रभवति नः कर्माणि निरुपप्लवानि संवृत्तानि 'ज्यों ही महाराज ने प्रवेश किया त्यों ही हमारे काम निर्विघ्न होगए।'

(घ) 'एवं', 'इत्थं', 'तथा', 'इति' अव्यय यदि कृदन्त के साथ प्रयुक्त हों तो 'कर्त्ता' उपेक्षित (omitted) होता है। जैसे, एवं गते, तथानुष्ठिते 'ऐसा होने पर।'

९०—Genetive Absolute—**अनादर** (contempt or disregard) में जिस क्रिया से क्रियान्तर का लक्षण किया जाए वहां (सप्तमी के विकल्प से) षष्ठी विभक्ति होती है।[2] 'यद्यपि' आदि के अर्थों में भी षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, पश्यतो राज्ञः सिंहो गां चकर्ष 'राजा के देखते हुए भी शेर ने गौ को खींचा।'

१.—यस्य च भावेन भावलक्षणम्। २. १. ३७। यस्य क्रियया क्रियान्तरं लक्ष्यते ततः सप्तमी स्यात्। सि० कौ०। २ षष्ठी चानादरे। २. ३. ३८।

Exercise 12.

N. B. Translate by using the absolute construction only.

दीपक का क्या लाभ है जब कि चांद की ज्योति सारे फैल रही है। जब सूरज चमक रहा हो तो अंधेरा संसार को कैसे ढक सकता है। जब अध्यापक बोलता है तो बालक कान लगा कर पाठ सुनते हैं। जब आप हमारे रक्षक हैं तो हमारी धर्मक्रियाओं में कैसे विघ्न हो सकता है। ऐसा होने पर सब लोग प्रसन्न हुए। ज्यों ही रामचन्द्र ने रावण को मारा त्यों ही आकाश से फूलों की वर्षा हुई। जब काम समाप्त हो जाएगा उसी समय तुम्हें छुट्टी हो जाएगी। मुशकिल से अभी सूर्य उदय ही हुआ था जब कि हम बाहर सैर को गए। अभी वह सोच ही रहा था कि उसे सड़क पर दो आदमी दिखाई दिए। यद्यपि गुरु देखता है तो भी विद्यार्थी आपस में लड़ रहे हैं। ज्यों ज्यों समय व्यतीत होता गया त्यों त्यों विद्यार्थी को व्याकरण का अधिक ज्ञान होता गया। धीर पुरुष वे हैं जिनके चित्त में विकार का हेतु होने पर भी विकार नहीं होता। जब विपत्तियां आती हैं तो सभी शत्रु बन जाते हैं। यद्यपि ईश्वर सबको देखता है तो भी मनुष्य पाप करते हैं।

त्रयोदशः पाठः

सर्वनाम (Pronouns).

१६—संस्कृत में प्रायः पुरुषवाचक (personal) सर्वनाम का

प्रयुक्त होते हैं, क्योंकि वे क्रिया के अन्तर्गत होते हैं। जैसे, गच्छति=स गच्छति 'वह जाता है।' अस्मद् और युष्मद् सब लिंगों में सामन रहते हैं।

९२—'अस्मद्' और 'युष्मद्' के आदेश 'मा, मे, नौ, नः' और 'त्वा, ते, वां, वः, कभी 'वाक्य' या 'पद' के आरंभ में 'च, वा, एव, हि' के पहिले और 'सम्बोधन' के पीछे नहीं प्रयुक्त होते। मम (not मे) मित्रम्। देव! अस्मान् (not नः) पाहि। तस्य वा मम वा गृहम् (not मे)।

(क) 'भवत्' अस्मद् और युष्मद् से भिन्न होने के कारण 'प्रथम' पुरुष में प्रयुक्त होता है। जैसे, किमाह भवान् 'आपने क्या कहा'।

९३—निर्देशक (Demonstrative) सर्वनाम इदम् और एतद् (this) के रूप 'उत्तम' (first) या 'प्रथम' (third) पुरुष के साथ 'यह' और 'यहां' (here) के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, एष तपस्वी तिष्ठति 'तपस्वी यहां है।' अयमस्मि 'मैं यहां हूं।' 'अयं जनः' (this person) प्रायः 'अहं' के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

९४—तद् प्रायः विख्यात (celebrated) या प्रसिद्ध (well-known) के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, सा रम्या नगरी 'वह प्रसिद्ध सुन्दर नगरी।'

(क) 'तद्' पूर्वोक्त (aforesaid) के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। जैसे, सोऽहम् 'मैं (जैसा पहिले कहा गया)।'

(ख) वही (very same) के अर्थ में। जैसे, तानीन्द्रियाणि तदेव नाम 'वे ही इन्द्रियां हैं वही नाम है।'

(ग) भिन्न (several) या नाना (various) के अर्थ में दो बार (तद् तद्) प्रयुक्त होता है। जैसे, तेषु तेषु स्थानेषु 'अनेक स्थानों में।' तासु तासु कलासु 'भिन्न भिन्न कलाओं में।'

९५—सम्बधवाचक (Relative) सर्वनाम जो कोई (what-ever) के अर्थ में दो बार प्रयुक्त होता है। जैसे, यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतः 'जिस जिसको तू देखता है उस उसके आगे।' प्रश्नवाचक सर्वनाम के साथ भी यह इसी अर्थ का बोधक होता

है। जैसे, यत्र कुत्रापि 'जहां कहीं भी।' यस्मै कस्मै 'जिस किसी को।'

९६—प्रश्नवाचक (Interrogative) सर्वनाम 'चित्', 'चन', 'अपि', 'स्विद्' के साथ 'अनिश्चयवाचक' (indefinite) सर्वनाम का अर्थ देते हैं। जैसे, कश्चिद् यत्तः 'कोई यत्त।' कदा-चित्-चन-अपि 'किसी समय।'

९७—'अन्य—अन्य' या 'पर—पर', 'एक—दूसरा' (one—other) के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, अन्यः करोति अन्यो भुङ्क्ते एक करता है दूसरा भोगता है।' मनस्यन्यद्वचस्यन्यत्कार्यमन्यद्दुरात्मनाम्।

(क) इसी अर्थ में 'एक—अपर, अन्य' प्रयुक्त होते हैं। जैसे, एको ययौ गृहमपरः पाठशालाम् 'एक घर को गया दूसरा पाठशाला को।'

(ख) बहुवचनात्मक 'एके' के स्थान में 'केचित्' (some) प्रयुक्त होता है। जैसे, इति केचित् मन्यन्ते 'ऐसा कुछ लोग मानते हैं।'

९८—कर्मकर्तृवाचक (Reflexive) सर्वनाम आत्मन् (self) है। यह सदैव 'पुँल्लिंग' और 'एक' वचन में प्रयुक्त होता है। जैसे, आत्मानं बहु मन्यामहे वयम् 'हम अपने आपको बड़ा समझते हैं'। का स्त्री आत्मानं विकत्थते 'कौन स्त्री अपनी शेखी मारती है।'

'स्व, स्वकीय, आत्मीय, निज' भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

Exercise 13.

आप झूठ कहते हैं। यह पुस्तक मेरी है। हे कृष्ण! इस घोर संग्राम में आप ही हमें विजय दिला सकते हैं। यह उसका और हमारा विवाद है, इसमें आप को हस्ताक्षेप करना उचित नहीं। आपने ही हमें कहा था कि आप के विना वहां के लोग दुःख पाते हैं। मैं भी आप से पूछता हूं कि आप (भवत्) इस विषय में क्या विचार रखते हैं। लीजिए यह आप का शिष्य आ गया है, अब मैं जाता हूं। आप कोई चिन्ता मत करें, यह दास सदैव आप की सेवा में रहेगा। वह सुप्रसिद्ध यज्ञ और वे विख्यात ब्राह्मण अब तक मेरे मन से नहीं भूलते। पंचवटी वहीं वन है जहां रामचन्द्र ने खर और दूषण के साथ युद्ध किया था। यह वही पुरुष है जिस को हमने कल सड़क पर देखा था। याज्ञवल्क्य ने अनेक शास्त्र पढ़े थे।

विद्यार्थियों से कह दो कि अपना अपना पाठ याद करें। जो जो अध्यापक लोग कहते हैं सो सो विद्यार्थी करते हैं। ऐसी सुन्दर वस्तु हर किसी को देनी नहीं चाहिए। कभी किसी राजकुमारी ने इस नदी के किनारे एक मन्दिर बनवाया था। दुष्ट जनों के मन में कुछ, वचन में कुछ तथा कर्म में कुछ और ही होता है। एक कहते हैं कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है दूसरे कहते हैं कि मनुष्य के मन का विकास है। कुछ ने (केचित्) उसकी बात को स्वीकार किया परन्तु दूसरों ने उसकी निन्दा की। मूढ़ लोग अपने आप को पंडित मान कर दूसरों को दुःख देते हैं। तुम सदा अपनी शेख़ी मारते हो (विकत्थ)।

चतुर्दशः पाठः

कृदन्त (Participles).

९९—'क्त्वान्त' (indeclinable) और 'तुमुन्नन्त' (infinitive) कृदन्तों के अतिरिक्त सब कृदन्त 'विशेषणों' की तरह प्रयुक्त होते हैं। कभी ये 'क्रिया' और 'विशेष्य' (noun) की भाँति भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे, तस्या गतम् 'उस (स्त्री) की चाल।'

शत्रन्त (Present Active Participles).

१००—यदि एक कार्य की दूसरे कार्य के साथ **समकालीनता** (contemporaneity) निर्दिष्ट हो तो 'शत्रन्त' प्रयुक्त होता है। जैसे, विचारयन् गच्छति 'विचारता हुआ जाता है।'

१०१—शत्रन्त किसी क्रिया के **लक्षण** (attribute) और **हेतु** (cause) को दर्शाने के लिए प्रयुक्त होता है।[1] जैसे, गच्छन् भक्षयति 'चलता हुआ खाता है।' हरिं पश्यन् मुच्यते 'हरि को देखने से (by reason of) मुक्त होता है।'

१०२—'आस्' (sit), 'स्था' (stand), 'भू' और 'अस्' के योग में 'शत्रन्त' क्रिया के **अविराम** (continuity) को दर्शाता है (*cf.*

---

१. लक्षणहेत्वोः क्रियायाः। ३. २. १२६।

English continuous sense)। जैसे, भक्षयन्नास्ते 'वह खाता रहता है।' सा यत्नेन रक्ष्यमाणा तिष्ठति 'उस (स्त्री) की यत्न से रक्षा की जा रही है।'

१०३—शील (habit), वयः (standard of age), शक्ति (ability) को दर्शाने के लिए शत्रन्त आत्मनेपद में प्रयुक्त होता है। जैसे भोगं भुञ्जानः 'भोग भोगते हुए'। कवचं बिभ्राणः 'कवच पहने हुए' (आयु)। शत्रुं निघ्नानः 'शत्रु को मारते हुए' (शक्ति)।

स्यदन्त (Future Active Participles)

१०४—भविष्यत् कृदन्त से उस कार्य का बोध होता है जो शीघ्र ही भविष्यत् में होने वाला हो। जैसे, करिष्यन् 'करने को।'

(क) भविष्यत्काल के अतिरिक्त यह इच्छा (intention) या हेतु (purpose) को भी दर्शाता है। जैसे, करिष्यमाणः सशरं शरासनम् 'धनुष पर तीर रखने की इच्छा करता हुआ।'

ऐसे वाक्यों का जैसे "चलने से 'पहिले' उसने कुछ पानी पिया" अनुवाद स्यदन्त को कर्ता का 'विशेषण' बना कर करना चाहिए। जैसे, प्रयाणं करिष्यन् स किञ्चिज्जलं पपौ।'

Exercise 14.

मैंने आज प्रातःकाल इन बालकों को पुस्तकें लिए हुए, आपस में बातें करते हुए और स्कूल को जाते हुए देखा था। पाठशाला से आते हुए मैंने एक विचित्र बात देखी। ऐसा दुष्ट कर्म करते हुए हर एक को लज्जा आती है। क्या तुम्हें निरपराधी को मारते हुए शरम नहीं आती है। माता अपने मृत-बालक को देखती हुई और उसकी प्यारी प्यारी बातों को याद करती हुई देर तक रोती रही (स्था)। बहुत से विद्यार्थी रात को पढ़ते हुए देर तक जागते रहते हैं। राजा ने अपने पुत्र को, जो शत्रुओं को मारने को शक्त था, युवराज बनाया। बारह वर्ष का क्षत्रिय कुमार शस्त्र धारण करने को शक्त था। राजा ने एक दिन

किसी को दो श्लोक **पढ़ते हुए** सुना। सुखों को **भोगते हुए** लोग विलासी होते हैं। घर में **जाते हुए** चोर को किसी ने न देखा। जब रामचन्द्र को युवराज **बनाया जाना था** (अभिसिच्) तब कैकेयी ने दशरथ को उसे बनवास देने के लिए मजबूर किया। उस पुरुष को **जानने की इच्छा करता हुआ** मैं उसके पीछे दौड़ा। जंगली जानवरों को **मारने के हेतु** लक्ष्मण वन को गया। प्रति दिन अपना कार्य **आरंभ करने से पहिले** ईश्वर की स्तुति और प्रार्थना करो। **मरने से पहिले** उसने अपने पुत्रों को बुलाया। **युद्ध में जाने से पूर्व** उसने अपनी माता को प्रणाम किया।

पञ्चदश· पाठः

क्तान्त—(Past passive participles).

१०५—'क्तान्त' विशेषणों और कर्मवाच्य (Passive) क्रिया की भाँति प्रयुक्त होते हैं। 'कर्तृवाच्य' (active voice) में 'क्तवत्वन्त' (Past active participles) का प्रयोग होता है। जैसे, तेन उक्तम्, स उक्तवान् 'उसने कहा।'

१०६—'गत्यर्थक' (implying motion) और 'अकर्मक' (intransitive) धातुओं के, और 'श्लिष्' (embrace) 'शी, स्था, आस्', (dwell), 'जन्', 'रुह्' और 'जॄ' (grow old) के क्तान्त **कर्तृवाच्य** (active) क्रिया की भाँति प्रयुक्त होते हैं।[1] जैसे, स तत्र गतः 'वह वहां गया।' स वैकुण्ठमधिष्ठितः 'वह वैकुण्ठ में रहा।' स वृक्षमारूढः 'वह वृक्ष पर चढ़ा।' तस्यां सुता जाता 'उस (स्त्री) के लड़की पैदा हुई।'

१०७—'क्तान्त' **भाववाच्य** (impersonal) क्रियाओं की भाँति भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे, मया तत्र चिरं स्थितम् 'मैं वहां देर तक खड़ा रहा।'

१०८—'क्तान्त' प्रायः भाववाचक संज्ञा (abstract noun) की

1. गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च । ३. ४. ७२ ।

भाँति नपुंसक लिंग में प्रयुक्त होते हैं।[1] जैसे, तस्या हसितम् 'उस (स्त्री) की हँसी।'

विधिकृदन्त (Potential or Future passive pt.)

१०६ – 'विधिकृदन्त' 'कर्मवाच्य' क्रिया की तरह प्रयुक्त होते हैं। जैसे, अजा ग्रामं नेतव्या 'बकरी को ग्राम ले जाना चाहिए।' हन्तव्योऽस्मि न ते राजन 'हे राजन्, आप को मुझे नहीं मारना चाहिए।'

(क) 'विधिकृदन्त' प्रायः साधारण भविष्यत् अर्थ में भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे, युवयोः पक्षबलेन मयापि सुखेन गन्तव्यम् 'आप (दो) के परों के बल से मैं भी सुख से चला जाऊँगा।'

११०—विधिकृदन्त 'भाववाच्य' क्रिया की तरह भी नपुंसक लिंग और एक वचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, मयावश्यं देशान्तरं गन्तव्यम् 'मुझे अवश्य दूसरे देश में जाना चाहिए।'

(क) भवितव्यम् और भाव्यम्, 'अवश्यकर्त्तव्यता' (necessity) या 'संभाव्यता' (probability) के अर्थ में भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं। इस अवस्था में 'विधेयात्मक विशेषण या विशेष्य की समता 'करणात्मक' कर्ता के साथ होती है। जैसे, तस्य प्राणिनो बलेन सुमहता भवितव्यम् 'उस जानवर का बल अवश्य महान् होना चाहिए।' तया सन्निहितया भवितव्यम् 'सम्भवतः वह (स्त्री) पास ही है।'

क्त्वान्त (Indeclinable past pt. or Gerund).

१११ जब 'एक ही कर्ता' (same agent) एक से अधिक काम 'क्रम' से करता हो तो अन्तिम क्रिया के अतिरिक्त सब क्रियाओं में 'क्त्वान्त' प्रयुक्त हो सकता है। जैसे, तं प्रणम्य स गतः 'उसको प्रणाम करके वह गया।'

---

१. नपुंसके भावे क्तः। ३. ३. ११४।

११२—किम्, अलम् या भाववाच्य क्रिया के साथ क्त्वान्त करण के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, किं तव गोपयित्वा 'छुपाने से तुम्हें क्या लाभ।' अलं वनं गत्वा 'वन को जाने से क्या लाभ (वन को मत जाओ)।' पशून् हत्वा यदि स्वर्गं गम्यते 'पशुओं को मार कर यदि कोई स्वर्ग में जाता है।'

Exercise 15.

गीदड़ ने कुपित होकर उसको कहा। मैंने तुम को इस काम से अनेक बार हटाया है। वह काशी को गया और एक मन्दिर में ठहरा। जिस समय बुद्ध पैदा हुआ, उसकी माता एक बाग में थी। सज्जन का प्रीति-पूर्वक भाषण चित्त को आनन्द देनेवाला होता है। तुम्हें मेरी ओर से राजा को ऐसा कहना चाहिए। जब पक्षी उड़ेंगे तो शिकारी भी अवश्य उनके पीछे जाएगा। मुझे अभी अपना पाठ याद करना है, अतः मैं आप के साथ खेलने नहीं जा सकता। इस संसार का कोई कर्त्ता सम्भवतः अवश्य होना चाहिए। उस जानवर का पराक्रम भी उसके शब्द के अनुरूप अवश्य हागा। नौकर को अपने मालिक के हित की बात बिना पूछे भी कह देनी चाहिए। इन गुणों से युक्त मुझे आप के सिवा और कौन मित्र मिलेगा। अतः मुझे आप के साथ अवश्य मित्रता करनी चाहिए। सारे पशुओं ने मिलकर सिंह से निवेदन किया। हे मृग! तुम अपने आप को मृतवत् दिखा कर, पेट को हवा से भर कर और अंगों को अकड़ा कर वहां लेट जाओ। आपको वहां जाने से कुछ भी लाभ न होगा। ऐसे विचार कर सारे पक्षी जाल को लेकर उड़ गए। यदि दूसरों को दुःख देखकर कोई दौलत पैदा करता है (use imperso-nal cons.) तो वह धन धर्म के नाश करने वाला होता है। यदि तुम्हारे मन में वैराग्य उत्पन्न नहीं हुआ तो वन में जाने से क्या लाभ (किम्)।

आप मुझे अन्यथा मत समझें, मैं हर समय आप की सेवा को उद्यत हूं।

षोडश: पाठ:

तुमुन्नन्त (Infinitive)

११३—यदि कोई कार्य किसी अन्य कार्य के निमित्त किया जाए तो उसमें 'तुमुन्नन्त' प्रयुक्त होता है। जैसे, जेतुं यतते 'जीतने का यत्न करता है।' यहां 'जेतुं'=जयाय, क्योंकि तुमुन्नन्त प्राय: सम्प्रदान अर्थ का बोधक होता है।

११४—'तुमुन्नन्त' संस्कृत में क्रिया के साथ कर्ता या कर्म के स्थान में प्रयुक्त नहीं हो सकता। साधारणतया वाक्य में किसी शब्द के साथ इसका सम्बन्ध नहीं होता। यदि हिन्दी में तुमुन्नन्त किसी क्रिया का 'कर्ता' वा 'कर्म' हो तो संस्कृत अनुवाद में उसके स्थान में उसी धातु की भाववाचक संज्ञा का प्रयोग करना चाहिए। जैसे, प्रात:काल उठना आरोग्यता देता है' प्रातरेव उत्थानं (not उत्थातुं) आरोग्यावहम्।

११५—यदि 'तुमुन्नन्त' और साधारण क्रिया का कर्ता 'एक' ही हो तो इच्छार्थक धातुओं के साथ 'तुमुन्नन्त' प्रयुक्त होता है।[1] जैसे, अत्तुं वाञ्छति 'खाना चाहता है।' पिनाकपाणिं पतिमाप्तुमिच्छति 'शिव को पति पाना चाहती है।'

(क) जिन धातुओं का अर्थ 'योग्य होना', 'जानना', 'शांत होना', 'सहना', 'आरम्भ करना', 'प्राप्त करना', 'होना' (शक्, धृष्, ज्ञा, ग्ला, घट्, रभ्, लभ्, सह्, अर्ह्, अस्) हो उनके साथ तुमुन्नन्त प्रयुक्त होता है।[2] जैसे, कर्तुं शक्नोमि 'मैं करने को समर्थ हूँ।' कर्त्तुमारेभे 'उसने करना आरम्भ किया।' जानासि देवीं विनोदयितुम् 'तुम रानी को खुश करना जानते हो।

(ख) 'काल, समय, वेला', (time) और इन के पर्य्यायवाचक

---

१ समानकर्तृकेषु तुमुन्। ३. ३. १५८। २. शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन्।

शब्दों के साथ, और 'प्रवीण, कुशल, पटु' (fit, capable) अर्थ वाले विशेषणों के साथ भी प्रयुक्त होता है।[1] जैसे, नायं कालो विलम्बितुम् 'यह देर करने का समय नहीं।' अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम् 'यह अपने आप को प्रकाशित करने का मौका है।' वक्तुं कुशलः 'बोलने में कुशल।'

११६—'प्रथम' और मध्यम' पुरुष के 'एक' वचन में अर्ह् (deserve) धातु के साथ लोट् लकार के विनय अर्थ (please) में तुमुन्नन्त प्रयुक्त होता है। जैसे भवान् श्रोतुमर्हति 'क्या आप कृपया सुनेंगे।' न मां परं संप्रतिपत्तुमर्हसि 'कृपया मुझे ग़ैर न समझिए।'

११७—'काम और 'मनस्' के साथ तुमुन्नन्त अन्तिम 'म्' के बिना प्रयुक्त होते हैं।[2] यह बहुव्रीहि समास होता है। जैसे, द्रष्टुकामः 'देखने की इच्छा वाला।' गन्तुमना 'जाने के मन वाला।'

Exercise 16.

ब्रह्मचारी पढ़ने के लिए पाठशाला को जाता है। इस संसार में दूसरों के धन लेने की इच्छा मत करो। सत्य बोलना मनुष्य को देवता बना देता है। लेने से देना अच्छा है। प्रत्येक मनुष्य अपने दुःख को निवारण करना जानता है। मैं इस कठिन काम को आरम्भ करने के समर्थ नहीं हूँ। ऐसे भी अनेक मनुष्य हैं जिन के पास खाने को अन्न भी नहीं है। मैं आप के पास इस काम के लिए प्रार्थना करने आया हूं, क्यों कि आप इसे कर सकते हैं। प्रत्येक प्राणी यश के प्राप्त करने की इच्छा करता है। कर्मों के फल को मिटाने के लिए कौन समर्थ है? ईश्वर में सब कुछ जानन की शक्ति है। नीच पुरुष दूसरों के काम को बिगाड़ना जानते हैं सँवारना नहीं। अर्जुन ने सोचा कि अपना बल वीर्य दिखाने के लिए यह ठीक अवसर है। अब दोपहर हो गया है, यह भोजन करने का समय है। हे राम! कृपया मुझे यहां अकेली मत छोड़िए (use अर्ह्)

१. कालसमयवेलासु तुमुन्। ३. ३. १६७। २. तुङ्कामनसोरपि। वा०।

क्योंकि आप के बिना मैं क्षण भर भी अपने प्राणों को धारण नहीं कर सकती। मुझे पराया (पर) जानना आप को उचित नहीं है।

सप्तदशः पाठः

TENSES AND MOODS.

वर्त्तमान 'Present'

११८—'वर्त्तमान' काल में जो क्रिया हो रही है उसे निर्दिष्ट करने के लिए 'लट्' लकार प्रयुक्त होता है। वह क्रिया के 'अविराम' (continuity) को भी दर्शाता है। 'सर्वकाल में सत्य रहने वाली वस्तु' को दर्शाने में भी प्रयुक्त होता है। जैसे जलं वहति 'जल ले जाता है।' सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् 'कहो, सत्संगति मनुष्य का क्या नहीं करती।'

११९—इस के अतिरिक्त लट् लकार अधोलिखित अर्थों में प्रयुक्त होता है:—

(क) वर्त्तमान के समीपवर्ती (immediate) 'भूत' या 'भविष्यत्' में 'लट्' लकार प्रयुक्त होता है।[1] जैसे, अयमागच्छामि 'मैं अभी आया हूं।' कदा गमिष्यसि—एष गच्छामि 'तू कब जाएगा ? मैं अभी जाऊँगा।'

(ख) कथाओं में (historical present) और स्वाभाविक क्रिया (habitual action) के दर्शाने में 'भूत काल' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, दमनकः पृच्छति कथमेतत् 'दमनक ने पूछा यह कैसे।' हिरण्यको भोजनं कृत्वा बिले स्वपिति 'हिरण्यक भोजन कर के बिल में सोया करता था।'

(ग) स्म उपपद (particle) के योग में लट् भूतार्थ में प्रयुक्त होता है।[2] जैसे, एकस्मिंश्चिद्वने भासुरको नाम सिंहः प्रतिवसति स्म 'किसी वन में भासुरक नाम का एक शेर रहता था।'

---

१. वर्त्तमानसामीप्ये वर्त्तमानवद्वा। ३. ३. १३१। २. लट् स्मे। ३. २. ११८।

१२०—प्रश्नवाचक शब्दों (interrogatives) के साथ जब विचार या इच्छा विवक्षित (implied) हो तो लट् भविष्यत् के अर्थ में प्रयुक्त होता है।[१] जैसे, किं करोमि क गच्छामि 'मैं क्या करूंगा, कहाँ जाऊंगा।' किं गच्छामि तपोवनम् 'क्या मैं तपोवन जाऊंगा।'

(क) पुरा और यावत् के साथ भविष्यत् काल और निश्चय का बोधक होता है।[२] जैसे, आलोके ते निपतति पुरा सा 'निश्चय वह तुम्हारी नज़र में पड़ेगी। यावच्छत्रुघ्नं प्रेषयामि 'मैं अभी शत्रुघ्न को भेजूंगा।'

Exercise 17.

ये सब विद्यार्थी इसी ओर आ रहे हैं। भले पुरुषों का संग पाप को दूर करता है, चित्त को प्रसन्न करता है, और कीर्त्ति को चारों ओर फैलाता है। नल ने दमयन्ती से पूछा 'क्या तुम वन के दुःखों को सहने के लिए उद्यत हो।' मैं अभी वहाँ जाऊँगा और आपके काम को करूँगा। मैं अभी उस नगर से आया हूँ, आप मेरी बात पर क्यों विश्वास नहीं करते। बिल्ले ने इस बात को सुन कर भूमि को छुआ। गिद्ध ने कहा 'हे बिल्ले! यहां से चला जा, नहीं मैं तुझे मार डालूंगा। गोविन्द प्रतिदिन भोजन कर के सैर को जाया करता था। किसी स्थान में सोमिलक नाम एक धोबी रहता था। हे नाथ! आप मुझे इस निर्जन वन में क्यों छोड़ते हो? अब मैं कहाँ जाऊँगी और अपनी रक्षा कैसे करूँगी। मैं अभी ऐसे दुष्ट का दमन करने के लिए अपने सेनापति को भेजता हूं (use यावत्)। क्या अब मैं पाठशाला जाऊँगा। लाहौर जाते हुए तुम्हारे रास्ते में अमृतसर अवश्य आएगा (use पुरा)। तुम कहाँ जाओगे? मैं लाहौर जाऊँगा। जो कोई धर्म-कार्य करेगा वह सुख पाएगा। मैं अभी आपको सब कुछ बता दूँगा। आओ अब घर चलें।

———

१. किंवृत्ते लिप्सायाम्। ३. ३. ६। २. यावत्पुरानिपातयोर्लट्। ३. ३.४। निपातावेतौ निश्चयं द्योतयतः। सि० कौ०।

अष्टादशः पाठः

भूत काल (Past Tenses).

१२१—हिन्दी, अँगरेज़ी आदि भाषाओं में केवल एक ही भूत काल है। परन्तु संस्कृत में तीन हैं। जिस समय संस्कृत साधारण बोली की भाषा थी तब इनके प्रयोगों में भेद था। परन्तु संस्कृत के साधारण बोली की भाषा न रहने से इनके प्रयोग में भी भेद न रहा।

१२२—लङ् (Imperfect) उस क्रिया को दर्शाता है जो आज के दिन से पहिले समाप्त हो चुकी हो (अनद्यतन)।[1] यह ऐतिहासिक भूतकाल (historical past) के लिए भी प्रयुक्त होता है।

(क) 'समीप-भूतकाल-अन्तर्गत' प्रश्न के पूछने में भी 'लङ्' प्रयुक्त होता है।[2] जैसे, अगच्छत् किं स ग्रामम् 'क्या वह ग्राम को चला गया है।' परन्तु यदि दूर का काल हो तो 'लिट्' (Perfect) प्रयुक्त होता है। जैसे, कंसं जघान किम् 'क्या उसने कंस को मारा।'

१२३—'लिट्' (perfect) उस दूर की भूत क्रिया को दर्शाता है जो आज से पहिले समाप्त हो चुकी हो और जिसको 'वक्ता ने न देखा हो' (परोक्षे)।[3] अतः इसमें 'उत्तम' (1st) और 'मध्यम' (2nd) पुरुषों का प्रयोग बहुत कम होता है। बभूव योगी किल कार्तवीर्यः 'कहते हैं कि कार्तवीर्य एक योगी था।'

१२४—'लुङ्' (Aorist) साधारण भूतार्थ में प्रयुक्त होता है।[4] आज से पहले की सब क्रिया 'लङ्' और 'लिट्' से निर्दिष्ट होती हैं, अतः 'लुङ्' निकटवर्त्ती क्रिया में, जो 'आज' के दिन (current day) में हुई हो, प्रयुक्त होता है, जैसा कि अँगरेज़ी में present perfect. यह संवाद में भी प्रयुक्त होता है। जैसे, अभूत्संपादितस्वादुफलो मे मनोरथः 'मेरे

---

१. अनद्यतने लङ्। ३. २. ३। २. प्रश्ने चासन्नकाले। ३. २. ११७। ३. परोक्षे लिट्। ३. २. ११५। ४. लुङ्। ३. २. ११०।

मनोरथ ने स्वादु फल को प्राप्त कर लिया है।' तुभ्यं मया राज्यमदायि 'मैं तुमको राज्य दे चुका हूं।'

१२५—'लुङ्' समीप भूतकाल के अतिरिक्त प्रबन्ध (continuousness) के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है।[1] 'लङ्' इस अर्थ में प्रयुक्त नहीं हो सकता। जैसे, ब्राह्मणेभ्यो यावज्जीवमन्नमदात् 'जीवन भर वह ब्राह्मणों को अन्न देता रहा।'

१२६—'मा' और 'मास्म' के साथ लुङ् 'आगम' (augment) बिना 'लोट्' के अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2] जैसे, मा गाः 'मत जाओ।' मा शुचः 'सोच मत करो।' मास्म प्रतीपं गमः 'विरुद्ध मत जाओ।'

Exercise 18.

रघु सन्तान की प्राप्ति के लिए वसिष्ठ के पास गया। अर्जुन ने उत्तरकुमार को कौरवों की सेना के कपड़े उतारने की आज्ञा दी। राम और लक्ष्मण सीता सहित कुछ दिन दंडक वन में रहे और फिर आगे चल दिए। नल ने अपना सारा राज्य जूए में हार दिया और दमयन्ती को साथ ले कर जंगल को चला गया। नल ने दमयन्ती को जंगल में अकेली छोड़ दिया। दिलीप ने अपना राज्य रघु को दिया और आप जंगल को चला गया। राम ने रावण को मार कर लंका का राज्य विभीषण को दे दिया। क्या आपको आपके नौकर ने नहीं बताया कि मैं कल आपको मिलने गया था। मैं बड़ा खुश हूं कि आपको इस काम में सफलता प्राप्त हुई है। अब सब सभासद् आ चुके हैं, अतः अब हमें कार्य आरंभ करना चाहिए। गोविन्द सारे दिन पढ़ता रहा। जीवन भर वह हर प्रकार से पीड़ितों के दुःख दूर करने का यत्न करता रहा। क्या तुम अपना पाठ याद कर चुके हो! नहीं, महाराज! अभी तक तो मैंने आरंभ भी नहीं किया। हे बालको! यद्यपि तुम्हारा अध्यापक तुम पर सख़्ती करे तो भी उसकी आज्ञा से बाहर मत जाओ। कष्ट आने पर घबराओ नहीं।

१. क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः। ३. ३. १३५। २. माङि लुङ्। स्मोत्तरे लङ् च। ३. ३. १७५-७६।

एकोनविंशः पाठः

भविष्यत् (Future).

१२७ - संस्कृत में भूत की भाँति भविष्यत् भी दो हैं। हिन्दी, अँगरेज़ी आदि में इनमें कोई भेद नहीं किया जाता। 'लुट्' (First future) उस भविष्य क्रिया का बोधक है जो वर्त्तमान (current day) में न हो (अनद्यतनभविष्यत्), अर्थात् इसके पश्चात् हो। और 'लृट्' (second or simple future) वर्त्तमान दिन की भविष्य क्रिया (अद्यतनभविष्यत्) तथा अन्य साधारण भविष्य क्रियाओं में प्रयुक्त होता है। 'लृट्' भविष्य प्रबन्ध (continuousness) में भी प्रयुक्त होता है।

जैसे, पञ्चभिरहोभिर्वयमेव तत्र गन्तारः 'पांच दिन में हम ही वहां जाएँगे।' यास्यत्यद्य शकुन्तला 'शकुन्तला आज जाएगी।' अथ कस्मिन् प्रदेशे विश्रमिष्ये 'मैं कहां विश्राम करूंगा।'

१२८—कभी 'लृट्' (Simple Future) 'लोट्' अर्थात् आज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, तदा मम पाशांश्छेत्स्यति 'पीछे मेरे बन्धनों को काटो।' पश्चात्सरः प्रति गमिष्यसि मानसं तत् 'मानसरोवर को पीछे जाइए।'

लृङ् (Conditional).

१२९ —'लृङ्' उन 'सांकेतिक, (conditional) वाक्यों में प्रयुक्त होता है जिनमें कोई 'भूत' वा 'भविष्यत्' कार्य किसी अन्य कार्य पर 'निर्भर' करता हो, परन्तु 'कारण' के न होने से 'कार्य' न हो सकता हो।' 'कारणद्योतक' (antecedent or protasis) और 'कार्यद्योतक' (consequent or apodosis) दोनों वाक्यों (clauses) में 'लृङ्' प्रयुक्त होता है। जैसे, सुवृष्टिश्चेदभविष्यद् दुर्भिक्षं नाभविष्यत् 'यदि अच्छी वर्षा हो जाती तो दुर्भिक्ष न होता।'

---

१ लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ । ३. ३. १३९ । हेतुहेतुमद्भावादि लिङ्निमित्तं तत्र भविष्यत्यर्थे लृङ् स्यात् क्रियाया अनिष्पत्तौ गम्यमानायाम्। सि० कौ०

(क) यदि 'कारणद्योतक' (antecedent) वाक्य में 'विधिलिङ्' (potential) प्रयुक्त हो तो 'कार्यद्योतक' (Consequent) वाक्यान्तर्गत लृङ् 'सांकेतिक वर्त्तमान' (hypothetical present) के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, यदि न प्रणयेद्राजा दण्डं उपपीडयिष्यन् दुर्बलान् बलवत्तराः 'यदि राजा दण्ड न दे (pot.) तो अधिक बल वाले दुर्बलों को दुःख दें (cond.)।'

Exercise 19.

मैं कुछ दिनों तक शिमले जाऊंगा और वहाँ पहाड़ों की शोभा को देखूंगा। हमारा मित्र हिरण्यक नाम चूहा इस वन में रहता है, वह हमारे बन्धनों को काटेगा और हमें मुक्त करेगा। हे राजन्! यदि राम को युवराज बनाया जाएगा (अभिसिच्) और उसको वन को न भेजा जाएगा, तो मैं ज़हर खाकर मर जाऊँगी। जो कुछ आपकी सहायता के लिए आवश्यक होगा वह सब मैं आपके बिना कहे ही कर दूंगा। हे भद्र पुरुष! अब तुम चले जाओगे, परन्तु पहिले तुम मेरी एक बात को सुनो। हे पथिक! पहिले मेरी सहायता करो पीछे अपना काम कीजिएगा। यदि कोई अग्नि में हाथ डालेगा तो अवश्य ही जल जाएगा। यदि गोपाल देवदत्त को गाली न देता तो लड़ाई न होती। यदि मनुष्य धर्म को छोड़ेगा तो दुःख पाएगा। हम वही काम करेंगे जो युधिष्ठिर को खुश करेगा। यदि दुर्योधन हठ न करता तो महाभारत का घोर युद्ध न होता। यदि तुम अपना प्रतिदिन का कार्य भली भाँति करते तो परीक्षा में फेल न होते। यदि अध्यापक अपने विद्यार्थियों को न ताड़ें तो वे सदैव शरारत करें।

विंशः पाठः

लोट् (Imperative).

१३०—'लोट्' 'मध्यम' पुरुष में आज्ञा, प्रार्थना और उपदेश के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, देहि मे प्रतिवचनम् 'मुझे उत्तर दीजिए।'

कुरु देवकार्यम् 'देवताओं का काम करो।' भज क्षमाम् 'क्षमा को धारण करो'।

(क) 'लोट्' 'कर्मवाच्य' 'प्रथम' पुरुष के एक वचन में प्रार्थना के अर्थ में ('कर्त्तृवाच्य' मध्यम पु० के स्थान में) प्रयुक्त होता है। जैसे, एतदासनमास्यताम् 'यह आसन है, आप पधारिए।' देव श्रूयताम् 'महाराज सुनिए।'

१३१—'लोट्' इच्छा और आशीर्वाद के अर्थ में 'विधिलिङ्' (optative) और 'आशीर्लिङ्' (benedictive) के स्थान में प्रयुक्त होता है। जैसे, चिरं जीव 'देर तक जीते रहो।' पुत्रं लभस्व 'आप को पुत्र प्राप्त हो।' काले वर्षतु पर्जन्यः 'समय पर बादल बरसे।'

(क) उत्तम पुरुष में लोट् प्रश्न (question), शक्ति (ability) और विधि (necesity) के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, किं करवाणि ते 'मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ।' करवामैतद्वयं देवि प्रियं तव 'हे देवि, हम आप की यह भलाई कर सकते हैं।' नहि दूतवधं करवाणि 'मुझे दूत का वध नहीं करना चाहिए।'

(ख) स्म के योग में लोट् प्रार्थना के अर्थ में और मा के योग में वर्तमान के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, बालमध्यापयस्व 'कृपया बालक को पढ़ाइए।' मा भवतु 'यह नहीं है।'

१३२—'लोट्' सम्भावना (possibility) या संशय (doubt) के अर्थ में विशेषतः 'प्रश्नवाचक' शब्दों (interrogatives) के योग में प्रयुक्त होता है। जैसे, प्रत्येतु कस्तद् भुवि '(सम्भवतः) पृथिवी पर उसका कौन विश्वास करेगा।' किमधुना करवाम 'अब हम क्या करें।'

आशीर्लिङ्—(Benedictive or Precative).

१३३—'आशीर्लिङ्' आशीर्वाद देने में प्रयुक्त होता है। 'उत्तम' पुरुष के साथ यह 'वक्ता' की इच्छा को दर्शाता है। जैसे, वीरप्रसवा भूयाः '(ईश्वर करे) तू वीर पुत्रों को उत्पन्न करने वाली हो।' कृतार्थो भूयासम्

'(ईश्वर करे) मैं कृतार्थ होऊँ।'

(क) कभी कभी यह 'लोट्' और 'विधिलिङ्' के अर्थों में प्रयुक्त होता है। जैसे, इदं वचो ब्रूयास्त 'तुम इस बात को कहो।'

Exercise 20.

हे बालको, सदैव अपने माता, पिता और गुरुओं की सेवा करो और उनकी आज्ञा को मानो। अपने नौकर को कहो कि मेरे लिए पानी लाए। देवदत्त ने यज्ञदत्त को कहा 'आओ हम सैर को चलें।' अब आप जा सकते हैं, ईश्वर आपके मार्ग को कल्याण-कारी करे, और आप अपने कार्य में सफलता प्राप्त करें। हे महाराज! मेरी अवस्था को भी सुनिए और मेरे दुःख को दूर कीजिए। कृपया बालक को पुस्तक दीजिए (स्म)। ईश्वर करे कि इस देश में वर्षा समय पर हो, पृथिवी धन धान्य वाली हो, प्रजा आनन्द में रहे, और ब्राह्मण निर्भय हों। आप कहें या न कहें वह स्वयं ही इस काम को कर लेगा। नीति के जानने वाले चाहे निन्दा करें या स्तुति, धीर पुरुष न्याय से पैर नहीं हटाते। पुरुषार्थ-हीन पुरुष की इस संसार में कौन रक्षा करे। ईश्वर करे तुम देर तक शासन करो और समस्त गुण-सम्पन्न पुत्रों को प्राप्त करो। मुझे अब जाना चाहिए। सुन्दर पवन चले और सब लोगों को आनन्द दे। हे विद्यार्थिओ! ईश्वर करे कि तुम विद्या पढ़ कर सूर्य के समान होओ, और भारतवर्ष से अविद्या के अन्धकार को दूर करो

एकविंशः पाठः

विधिलिङ् (Potential)

१३४—'विधिलिङ्' 'विधि' (command), 'निमन्त्रण' (inviting), 'आमन्त्रण' (permitting), 'अधीष्ट' (speaking of honorary duty), 'संप्रश्न' (questioning) और 'प्रार्थना' (prayer) के अर्थ में प्रयुक्त होता है।[1] जैसे, यजेत् 'यज्ञ करे' त्वं ग्रामं गच्छेः 'तुम ग्राम

---

1 विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्। ३. ३. १६१।

को जाओ।' भो भोजनं लभेये 'श्रीमन्, क्या मैं भोजन ले सकता हूँ।'

(क) विधिलिङ् प्रधान वाक्य में **सम्भावना** (possibility) या **संशय** (doubt) के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, कदाचिद् गोशब्देन बुध्येत 'शायद वह गौओं के शब्द से जाग उठे।' पश्येयुः क्षितिपतयश्चार-दृष्ट्या 'राजा लोग अपने जासूसों की दृष्टि के द्वारा देख सकते हैं।' एकं हन्यान्न वा हन्यादिषुर्मुक्तो धनुष्मता 'धनुष् वाले से चलाया हुआ तीर किसी को मारे या न मारे।'

भविष्यत् के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। जैसे, इयं कन्या नात्र तिष्ठेत् 'यह कन्या (सम्भवतः) यहां नहीं ठहरेगी।'

१३५—अधोलिखित 'अप्रधान' (subordinate) वाक्यों में विधि-लिङ' प्रयुक्त होता है:—

(क) 'सम्बन्धबोधक' (relative) वाक्यों में हेतु अर्थ में। जैसे, दोषन्तु मे कंचित् कथय येन स प्रतिविधीयेत् 'मुझे कोई दोष तो बताओ ताकि उसे ठीक किया जाए।'

(ख) जब काम (hope) निर्दिष्ट हो और 'कच्चित्' शब्द प्रयुक्त न हो तो साधारणतया 'विधिलिङ्' प्रयुक्त होता है।[1] जैसे, कामो मे भुञ्जीत भवान् 'मैं आशा करता हूं कि आप खाएँगे।'

(ग) **सम्भावना** (expectation) वचन (संभाव्य 'अपि' या 'अपि नाम') में जब यदि शब्द प्रयुक्त न हो तो 'विधिलिङ्' या 'लृट्' होता है।[2] जैसे अपि जीवेत् स ब्राह्मण-शिशुः 'क्या मैं सम्भावना करूं कि वह ब्राह्मण का लड़का जी जाएगा।

१३६—'विधिलिङ्' **संकेतार्थक** वाक्यों में भी प्रयुक्त होता है जहां पर एक वाक्य के अर्थ का दूसरे वाक्य के अर्थ के साथ हेतुहेतुमद्भाव[3]

---

१. कामप्रवेदनेऽकच्चिति। ३. ३. १५३। २. विभाषा धातोः संभावना-वचनेऽयदि। ३. ३. १५४। ३. हेतुहेतुमतोर्लिङ्। ३. ३. १५६।

(cause and effect) का सम्बन्ध हो। जैसे, यद्यत्र तातः सन्निहितो भवेत् ततः किं भवेत् 'यदि पिता जी यहां होते तो क्या होता।'

(क) प्रायः केवल 'कार्यद्योतक' (apodosis) वाक्य में 'विधि-लिङ्' प्रयुक्त होता है। जैसे, स भारो भर्तव्यो यो नरं नावसादयेत् 'वही बोझ उठाना चाहिए जो आदमी को थका न दे।'

Exercise 21.

क्या ही अच्छा होता यदि तुम सत्याचरण करते, क्योंकि सत्य ही मनुष्य की रक्षा करता है। शायद आप के उपदेश से उसको ज्ञान हो जाए, और वह सीधे रास्ते पर आ जाए। प्रत्येक पुरुष को पुरुषार्थ करना चाहिए क्यों कि यत्न-पूर्वक पीड़ने से रेत से भी तैल मिल सकता है। सफलता चाहे प्राप्त हो या न हो प्रत्येक मनुष्य को यत्न अवश्य करना चाहिए। अब आप का मित्र सम्भवतः नहीं आएगा, अतः आओ बाहर चलें। हे बालको! कोई काम जल्दी में मत करो क्योंकि इससे लाभ के स्थान में हानि होती है। आप मुझे उस स्थान का मार्ग बताइए ताकि मैं वहां जा सकूं। जो द्विज प्रातः और सायंकाल संध्या नहीं करता उस को शूद्रवत् सब द्विजों के कर्मों से बाहर निकाल देना चाहिए। मनुष्य को ऐसा काम करना चाहिए जिस से दूसरों को कष्ट न हो। यदि तुम को लाहौर जाने का अवसर मिले तो मेरे लिए अष्टाध्यायी लाना। आपने बड़ी देर के पीछे दर्शन दिए हैं, अतः मेरी इच्छा है (काम) कि आप कुछ काल तक मेरे पास रहें।

द्वाविंशः पाठः

समासप्रकरणम् (Compounds).

१३७--प्रायः बहुत सी भाषाओं में दो या अधिक शब्द मिल कर प्रयुक्त होते हैं। परन्तु समासों का जो बाहुल्य संस्कृत में है वह प्रायः अन्य किसी भाषा में नहीं मिलता।

अन्तिम पद के अतिरिक्त समस्त पद 'बिना विभक्ति' के प्रयुक्त होते हैं। विभक्ति केवल 'अन्तिम' पद में प्रयुक्त होती है। जैसे रामलक्ष्मणौ 'राम और लक्ष्मण।'

१३८—'द्वन्द्व' (co-ordinative) समास में दो या अधिक 'विशेष्य, विशेषण, क्तान्त, और क्रिया-विशेषण' 'च' से मिलाए जाते हैं।[1] 'वचन' सब का मिलकर होता है, और लिंग 'अन्तिम' पद का होता है जैसे, हस्त्यश्वाः 'हाथी और घोड़े।' सितासितः 'सफेद और काला।' जातप्रेतः 'पैदा होते ही मर गया।' सायंप्रातर् 'शाम और सवेरे।'

१३९—'तत्पुरुष (dependent determinative) ऐसे दो पदों में होता है जिन में से 'पहिला' पद 'दूसरे' पद की 'व्यवस्था' या 'निर्धारण' करता हो। प्रथम पद प्रथमा के अतिरिक्त सब कारकों के अर्थों में प्रयुक्त होता है। जैसे, जयप्रेप्सु 'जय का इच्छुक।' देवदत्त 'देवताओं से दिया हुआ' इत्यादि।

१४०—'कर्मधारय (Descriptive deter.) समास में 'पहिला' पद 'उत्तर' पद का वर्णन करता है। पहिले पद का उत्तर पद के साथ 'विधेय' का सम्बन्ध होता है। इस में[2] 'उपमान' और 'उपमेय' वाचक नाम[3] (समानाधिकरण), 'विशेषण और 'विशेष्य' और 'क्रिया-विशेषण' और 'विशेष्य' का समास होता है। जैसे, राजर्षिः। जलदश्यामः 'बादल-जैसा काला।' कृष्णसर्पः 'काला साँप।' यथाशक्ति 'शक्ति के अनुसार।'

१४१—जिन 'कर्मधारय' समासों में विशेषण 'संख्यावाचक' हो उनको 'द्विगु' (numeral) समास कहते हैं।[4] ये प्रायः नपुंसक या स्त्री लिंग में होते हैं। जैसे, त्रिलोकी (स्त्री०) त्रिभुवनम् (नपुं०)।

(क) 'क्रिया विशेषणों के साथ इस समास को 'अव्ययीभाव' कहते हैं। ये द्वितीया वि० और नपुं० में क्रिया विशेषणवत् प्रयुक्त होते हैं।

---

१ चार्थे द्वन्द्वः। २. २. २९। २. उपमानानि सामान्यवचनैः। २. १. ५५ ३. तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः। १. २. ४२। ४. संख्यापूर्वो द्विगुः। २. १. ५२।

१४२--यदि 'महत्' कर्मधारय समास का 'पहिला' पद हो तो इस को 'महा' आदेश होता है।[1] यदि राजन्, 'अहन्', 'सखि' और 'रात्रि' उत्तर पद हों तो इन को क्रमशः 'राज', 'अह', 'सख' और 'रात्र' (m. n.) आदेश होता है।[2] जैसे, महाजनः, महाराजः, पुण्याहम्, प्रियसखः, अर्धरात्रम्।

Exercise 22.

राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न आपस में बड़े प्रेम से रहते थे। उखाड़ कर लगाए हुए पौदे प्रायः बहुत बढ़ते हैं। दोपहर में नीले कमल बंद हो जाते हैं। खाने, सोने और डरने में मनुष्य पशुओं के समान हैं। तीन गुणों वाली प्रकृति तीनों लोक का अपादान कारण है। दिन और रात माता-पिता की सेवा में लगे रहो। नकुल जो कि घोड़ों के विषय में चतुर था, राजा विराट के घोड़ों को सिधाने पर नियत किया गया। दानों को धन देने वाले मनुष्य में विशेष तेज होता है। देवदत्त कलाकौशल के अध्ययन के लिए दूसरे देश को गया। वे मनुष्य जो कि पानी में चन्द्रमा के समान चपल हैं, संसार में सिद्धि को प्राप्त नहीं कर सकते। मार्ग में आज मैंने एक ऐसा काला साँप देखा कि पहिले कभी न देखा था। महाराज ने उस शुभ दिन बड़ा दान किया। कल आधी रात मेरे सिर में बड़ी पीड़ा हुई। मैंने अपने प्रिय सखा को विनय के साथ निवेदन किया कि यदि आप मेरी सहायता करेंगे तो आयु भर मैं आपका अनुगृहीत रहूंगा।

---

१. आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः। ६. ३. ४६. । २. राजाहःसखिभ्यष्टच्। ५. ४. ९१।

त्रयोविंशः पाठः

बहुव्रीहि समास (Possessive Cds).

१४३—बहुव्रीहि समास उन दो या अधिक पदों में होता है, जो मिल कर किसी अन्य नाम का विशेषण हो जाते हैं।[1] इनके 'विग्रह' (dissolution) में 'यत्' सर्वनाम की प्रथमा के अतिरिक्त कोई न कोई विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे, पीतम् अम्बरं यस्य स 'पीताम्बरः।'

(क) 'बहुव्रीहि' समास के 'पूर्वपद' में 'क्तान्त' प्रायः 'क्त्वान्त' या 'Locative absolute' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, त्यक्तनगरः 'शहर को छोकर' =नगरं त्यक्त्वा=नगरे त्यक्ते।'

(ख) यह उपमा के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। जैसे, चन्द्राननः 'चाँद जैसे मुख वाला।'

१४४—'कल्प' पुँ० (manner) और 'प्राय' पुँ० (chief) बहुव्रीहि समास के अन्त में 'बराबर' 'तकरीबन' (like, almost) के अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, अमृतकल्पः 'अमृत जैसा।' मृतप्रायः 'मरे के बराबर।'

(क) जब 'बहुव्रीहि' समास का 'अन्तिम' पद 'ऋकारान्त', 'ईकारान्त' आदि हो, तो 'क' प्रत्यय अन्त में लगता है। जैसे, सपत्नीकः 'पत्नी सहित।'

Exercise 23.

बड़े बाहुओं वाला और भयानक पराक्रम वाला अर्जुन उस समय चुप-चाप खड़ा था। चित्रग्रीव नाम वाला कबूतरों का राजा वहां रहता था। क्रोध से भरा हुआ गोविन्द सभा से बाहर चला गया। यह कन्या, जिसके धर्म के भावों को मैंने देख लिया है, मेरी सहायता कर सकती है। अर्जुन ने, जो अपने गाण्डीव धनुष को लिए हुए था, कौरवों को मार भगाया। बहुत नदियों वाला देश प्रायः उत्तम होता है।

---

१. अनेकमन्यपदार्थे २. २. २४।

कृष्ण ने शिशुपाल को, जो पैदाइश से ही उसका शत्रु था, सुदर्शन चक्र से मार गिराया। गोविन्द आदि हाथों में डंडे लिए हुए लड़ने को जा रहे हैं। इस बालक को, जिसकी माता चली गई है, अपने पास रक्खो। रात जब कि प्रातःकाल होने वाला था वर्षा होने लगी। ऋषियों के शब्द ही अमृत जैसे होते हैं।

चतुर्विंशः पाठः

विशेषण–तुलना (Degrees of comparision).

१४५—'दो पुरुष या पदार्थों' में यदि एक के गुण दूसरे की अपेक्षा 'न्यून' वा 'अधिक' हों तो वहां 'तुलनावाचक' विशेषण (comparative) का प्रयोग होता है। देखो ६४।

(क) 'दो से अधिक' पुरुष या पदार्थों में यदि एक के गुण सबकी अपेक्षा 'उत्तम' हों तो वहां 'अतिशयवाचक' विशेषणों (superlatives) का प्रयोग होता है। देखो ७६।

१४६—'गुणवाचक' विशेषणों (adjectives of quality) के अन्त में 'तुलना' में 'ईयस्' और 'अतिशय' में 'इष्ठ' लगाए जाते हैं। जैसे, गरीयस् और गरिष्ठ।[1]

Exercise 24.

यज्ञदत्त देवदत्त से अधिक विद्वान् है। ईश्वर छोटे से छोटा (अणु) और बड़े से बड़ा (महान्) है। स्मृति से श्रुति बड़ी (गुरु) है। यह स्थान सब से निकट (अन्तिक) है, और वह सब से दूर है। यह वस्त्र उससे अधिक साफ (शुचि) है। तिथियों में पूर्णिमा को सब से श्रेष्ठ माना जाता है। सिंध पंजाब के दरयाओं में सब से लंबा (दीर्घ) है, परन्तु गंगा इससे भी लंबी है। लक्ष्मण राम से छोटा (युवन्) था।

१. अजादी (ईयस्, इष्ठ) गुणवचनादेव। ५. ३. ५८।

गोपाल का छोटा भ्राता गोविन्द के सब भ्राताओं से बड़ा (वृद्ध) है। हिमालय दुनिया में सब से ऊंचा और बड़ा (पृथु) पहाड़ है। वेद संसार में सब से पुराना साहित्य है। इस तालाब का जल सब से साफ़ (शुचि) है। बंगाल में पंजाब की अपेक्षा वर्षा अधिक बहुतायत (बहुल) से होती है। कृष्ण सब से मोटा (पीवर) आदमी है। वह मनुष्य जिसको धर्म सब से प्यारा है इस संसार में सब से अधिक प्रशंसनीय है। यह काव्य सब से अच्छा (वर) है। झूठ बोलना सब से क्षुद्र स्वभाव है। यह मार्ग सब से छोटा (ह्रस्व) है।

पञ्चविंशः पाठः

प्रत्ययान्तधातवः—(Derivative verbs).

इच्छाद्योतक क्रिया (सन्नन्त) (Desideratives)

१४७—यदि किसी धातु के अपने साधारण अर्थ के साथ ही 'इच्छा' का अर्थ भी जाना जाए तो उसे 'इच्छाद्योतक' क्रिया कहते हैं। जैसे, पिपठिषति 'पढ़ने की इच्छा करता है।'

(क) प्रत्येक 'गणपठित' (primitive) और 'णिजन्त' (causative) धातु 'सन्नन्त में प्रयुक्त हो सकती है।

१४८—'सन्नन्त' धातुएँ उन्हीं पदों (परस्मै०, आत्मने०) में प्रयुक्त होती हैं जिनमें वे अपने साधारण रूप में प्रयुक्त होती हैं। 'ज्ञा, श्रु, स्मृ, दृश्', आदि धातुएँ 'सन्नन्त' में 'आत्मनेपद' में प्रयुक्त होती हैं।

१४९—**यङन्त क्रिया** (Intensives or Frequentatives)—यदि कोई कार्य बार बार (frequently) या 'अतिशय' (intensely) से किया जाए तो वहां पर 'यङन्त' क्रिया प्रयुक्त होती है।

(क) केवल एकाच् (monosyllabic) धातु जो कि 'व्यंजन' से आरम्भ हों 'यङन्त' क्रिया में प्रयुक्त होते हैं।[1] अतः 'यङन्त' क्रियाओं की संख्या बहुत कम है।

---

१. धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्। ३. १. २२।

१५०—नाम-धातु (Denominatives) नामों से प्रत्यय द्वारा 'इच्छा' (wish) 'आचरण' (performance), 'अभ्यास' (practising) आदि अर्थों में प्रयुक्त होते हैं।

(क) इन धातुओं के रूप भ्वादिगण की भाँति होते हैं।

Exercise 25.

यह बालक सोना चाहता है। जो मनुष्य मुक्त होने की इच्छा करता है उसे वेद पढ़ना चाहिए। यह प्यासा (पा des.) आदमी मरने वाला है, इसे पानी दो। धन प्राप्त करने का इच्छुक (लभ्) वह अन्य देश को व्यापार के लिए जाना चाहता है। अर्जुन अपने शत्रुओं को मारने की इच्छा करता हुआ (हन्) उनको देखने की इच्छा करने लगा। जो मनुष्य ईश्वर को देखने की इच्छा करेगा वह अवश्य उसे प्राप्त कर लेगा। ईश्वर इस संसार को बारंबार रचता है और बारंबार मिटाता है। मनुष्य बारंबार पैदा होता है और मरता है। यह योधा अर्जुन सा आचरण करता है। पानी से भाँप उठती है। अध्यापक अपने विद्यार्थियों को पुत्रवत् समझते हैं। धुएँ से मकान काला हो जाता है। वह मुझ से प्रश्न पूछता है। जहाँ कोई वृक्ष नहीं होता वहां एरण्ड ही वृक्ष बन जाता है। साधारण पुरुषों में जो सब से बलवान् होता वही राजा बन जाता है। वह अपने साथियों से लड़ाई करता है। जो लोग संसार के व्यवहार में अधिक फंसे हुए होते हैं वे सोते हुए भी बोलते हैं। सूर्य दक्षिण दिशा में मंद हो जाता है।

षड्विंशः पाठः

निपाताः (Indeclinable Particles.)

अपि, इति, इव, किम्, किल, खलु, च ।

१५१—अपि अधोलिखित अर्थों में प्रयुक्त होता है[1]:—

(१) वाक्य के दो भागों को मिलाने में **और** (likewise, and) के अर्थ में (यदि—अपि) (२) **भी** (though, also)। जैसे, एकाक्यपि 'अकेले भी।' (३) **केवल, सिरफ** (only, but) के अर्थ में 'समयवाचक' शब्दों के साथ। जैसे, मुहूर्त्तमपि 'सिरफ एक मुहूर्त।' (४) **सब** (all) 'संख्यावाचक' शब्दों के साथ। जैसे, चतुर्णामपि वर्णानाम् 'सब चारों वर्णों का।' इन चारों अर्थों में 'अपि' जिस शब्द के साथ प्रयुक्त होता है उसके 'पीछे' आता है। (५) **प्रश्न, इच्छा और आशा** के अर्थ में 'वि० लिङ्' के साथ वाक्य के 'आदि' में प्रयुक्त होता है।' जैसे, अपि तपो वर्धते 'क्या तुम्हारा तप बढ़ता है।' अपि प्राणानहं जह्यां न त्वाम् 'मैं अपने प्राणों को छोड़ दूंगा तुम्हें नहीं।'

१५२—इति—(१) किसी के कहे हुए शब्द, अकथित 'विचार' या 'ज्ञान' के उद्धृत करने में। जैसे, तवाज्ञां करिष्यामि इत्युवाच सः 'उसने कहा कि मैं तुम्हारी आज्ञा को करूंगा।' न धर्मशास्त्रं पठतीति कारणम् 'यह (ज्ञान) कारण नहीं है कि वह धर्मशास्त्र पढ़ता है।' (२) **अपेक्षा** (as regards) शीघ्रमिति सुकरं भवेत् 'जल्दी करने की अपेक्षा यह आसान होगा।'

१५३—इव जिस शब्द से सम्बन्ध रखता हो प्रायः उसके पीछे

---

1. गर्हासमुच्चयप्रश्नशंकासंभावनास्वपि ।
अपि संभावनाप्रश्नशंकागर्हासमुच्चये ।
तथायुक्तपदार्थेषु कामचारक्रियासु च ॥

अधोलिखित अर्थों में प्रयुक्त होता है:—

(१) सादृश्य; अयं चौर इवाभाति 'यह चोर जैसा प्रतीत होता है।' (२) किंचिद्; सरोषमिव 'कुछ क्रोध से।' (३) प्रायः,तकरीबन; मुहूर्त्तमिव 'तकरीबन एक घंटा।'

१५४—किम्—(१) प्रश्नवाचक; तत्रैव किं न चपले प्रलयं गतासि 'हे चपल तू वहीं क्यों न नष्ट हो गई थी।' (२) निन्दा; किं सखा (३) 'वा, उत, अहो' के 'साथ' या के अर्थ में; जैसे, किमेतदारण्यकं ग्राम्यं वा 'क्या यह जंगल का है या ग्राम का।' (४) 'उ, उत, पुनः' के साथ कितना अधिक (how much more), कितना न्यून (how much less) के अर्थ में; एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् 'एक एक ही अनर्थ के लिए काफ़ी है फिर चारों तो कितने अधिक होंगे।'

१५५—किल—(१) 'कहा जाता है' (वार्तायां) (historical sense); जघान कंसं किल वासुदेवः 'कहते हैं कि कृष्ण ने कंस को मारा।' (२) अलीक अर्थ (feigned action) में; प्रसह्य सिंहः किल गां चकर्ष '(ऐसा प्रतीत हुआ) मानो शेर ने ज़ोर से गौ को खींचा।' (३) संभावना (hope, expectation) के अर्थ में; पार्थः किल विजेष्यते कुरून् 'मैं आशा करता हूं कि अर्जुन कौरवों को जीत लेगा।'

१५६—खलु—(१) 'निश्चय'। (२) 'प्रार्थना' (Pray); देहि खलु मे प्रतिवचनम् 'कृपया मुझे उत्तर दीजिए।' (३) 'प्रश्न'; न खलु तामभिक्रुद्धो गुरुः 'क्या उस (स्त्री) पर गुरु जी रुष्ट तो नहीं हुए?' (४) 'क्त्वा' के साथ 'मत' के अर्थ में; खलु रुदित्वा 'मत रोओ।'

१५७—च—(१) 'और' 'भी' (and, also); गोविन्दो रामश्च 'राम और गोविन्द।' जब एक से अधिक शब्द हों तो प्रायः अन्तिम के साथ 'च' प्रयुक्त होता है। (२) च—च 'एक ओर—दूसरी ओर', तदपि'। (३) 'ज्यूं ही—त्यूं ही'।

Exercise 26.

हे बालको, अपने गुरु-जनों की सेवा करो और उनकी आज्ञा भी मानो (अपि-अपि)। सब ही (अपि) कौरवों के साथ युद्ध करने को केवल अर्जुन ही काफ़ी था। क्या (अपि) यह बोर्डिंग हाउस है ? मैं आशा करता हूँ (अपि) कि आप यहां आराम से रहते हैं। बलदेव ने मुझे कहा कि (इति) मैं अपनी पुस्तक तुम्हें पढ़ने को दे दूँगा। क्यों कि मै यहां पहिली बार आया हूं अतः (इति) आप से पूछता हूं कि (इति) स्कूल किधर है। उपदेशक के तौर पर (इति) वह प्रशंसा के योग्य है और अध्यापक के तौर पर (इति) वह निन्द्य है। इस समुद्र के समान (इव) संसार में अनेक जन्तु प्रतिदिन डूबते हैं। वह क्या (किं) मनुष्य है जो सदा दूसरों को दुःख देने में तत्पर है। जाओ और पूछ कर आओ कि (इति) आज स्कूल में छुट्टी है या (वा) नहीं। सत्य से ही (खलु) मनुष्य इतना उन्नत होता है तो फिर धर्म के सब अंगों से और कितना अधिक (किमुत) होगा। यह कहा जाता है (किल) कि सीता ने कुश और लव दो बालकों को बाल्मीकि की कुटी में जन्म दिया। मैं आशा करता हूँ (किल) कि (इति) तुम सब परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे। कृपया (खलु) आप इस हरिणी पर तीर मत चलाइए। क्या (खलु) आपने इस आदमी को कल सड़क पर नहीं देखा था ? अब शोक मत करो (खलु) जो होना था सो हो चुका। एक तो (च) पढ़ने में वह मूढ़ है, दूसरे (च) वह स्कूल में भी नियम पूर्वक नहीं आता।

सप्तविंशः पाठः

तावत्, ननु, नाम, यथा, यावत्, येन, वा, हि।

१५८—तावत् इन अर्थों में प्रयुक्त होता है:—(१) पहिले तुरन्त (First); इतस्तावदागम्यताम् '(कृपया) तुरन्त यहाँ आइए।' (२) इसी

अन्तर में (meanwhile); गच्छतु भवती, तावदहमपि तत्रभवते निवेदयामि 'तुम (स्त्री) जाओ, इसी अन्तर में मैं भी राजा को निवेदन करता हूं।' (३) अभी (just, now); गच्छ तावत् 'अभी जाओ।'

१५६–ननु—(१) निश्चय (Surely); नन्वहं ते प्रियः 'निश्चय मैं आप का प्यारा हूं।' (२) 'प्रश्नवाचक' सर्वनाम और लोट् (imperative) के साथ= कृपया (Pray) अर्थ में; ननु को भवान्। ननूच्यताम् 'कृपया कहिए।' (३) 'वितर्क' (argument) में भी प्रयुक्त होता है।

१६०—नाम—(१) निश्चय; मया नाम जितम् 'निश्चय मैंने जीता है।' (२) कदाचित् (Perhaps); दृष्टस्त्वया कश्चिद् धर्मज्ञो नाम 'तुम ने शायद किसी धर्मज्ञ पुरुष को देखा है।' (३) नाम वाला, नलो नाम 'नल नामवाला।' अपि नाम—वाक्य के आदि में 'विधिलिङ्' के साथ कदाचित् (Perhaps) के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

१६१—यथा—(१) जैसा (as), यथा आज्ञापयति देवः 'जैसे महाराज आज्ञा करते हैं।' (२) सदृश (=इव); राजते भैमी सौदामिनी यथा 'भीम की पुत्री विद्युत की भाँति शोभा देती है।' (३) कि (So that) अहं तथा करिष्ये यथा स वधं करिष्यति 'मैं ऐसा करूंगा कि वह उसे मार देगा।' (४) यथा—तथा, 'जैसा—तैसा' (so—as); यथा वृक्षस्तथा फलम् 'जैसा वृक्ष वैसा फल।'

१६२—यावत्—(१) 'पर्य्यन्त'। (२) अभी, अन्तर में; यावदिमां छायामाश्रित्य प्रतिपालयामि ताम् 'इस अन्तर में इस छाया में बैठ कर उस (स्त्री) की प्रतीक्षा करूंगा।'—यावत्—तावत् 'ज्यूं ही—त्यूं ही' के अर्थ में प्रयुक्त होता है; एकस्य दुःखस्य न यावदन्तं गच्छामि तावद् द्वितीयं समुपस्थितं मे 'अभी मैं एक दुःख से पार नहीं होता कि दूसरा आ जाता है।' (३) जब तक; सूत, तावद्रथं स्थापय यावदहमवतरामि 'हे सूत जब तक मैं उतरूँ तब तक रथ को ठहराओ।'

१६३—**येन**—(१) **कारण**; शृणु येन न दृश्यन्ते महीक्षितः 'सुनो, राजा लोग क्यों नहीं देखे जा सकते ।' (२) **इसलिए** (So that); उपायो दृष्टो येन दोषो न स्यात् 'उपाय मालूम हो गया है इस लिए कोई दोष न होगा ।' (३) **ताकि** (in order that) ; तस्य छात्रतां व्रजामि येन विश्वस्तो भवति 'मैं उसका शिष्य बनता हूँ ताकि उसे विश्वास हो जाए।'

१६४—**वा**—(१) या (अथवा) । (२) **सदृश** '=इव'; जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम् 'सरदी से मुरझाए हुए कमल के समान मैं उस (स्त्री०) को रूप में बदली हुई मानता हूं ।'

१६५—**हि**—कभी वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त नहीं होता है प्रत्युत पहिले शब्द के पश्चात् प्रयुक्त होता है। (१) **क्योंकि**। (२) **निश्चय**; त्वं हि तस्य प्रियवयस्यः 'तुम निश्चय उसके प्यारे मित्र हो ।' (३) 'प्रश्न-बोधक' शब्दों (interrogatives) या लोट् लकार के साथ **कृपया** (=Pray) के अर्थ में ; तद्धि दर्शय 'कृपया दिखलाइए ।'

Exercise 27.

मैं अभी जाना चाहता हूँ, अतः पहिले (तावत्) मेरे इस काम को कीजिए । कृपया (ननु) पढ़िए इस पत्र में क्या (किं) लिखा है । पाटलीपुत्र नाम नगर में बलभद्र नाम एक वणिक् रहता था । निश्चय (नाम) विद्यार्थी को गुरु के पास विनय-पूर्वक जाना चाहिए । तुम ने कदाचित् (नाम) उस हंसगामिनी को देखा है, अन्यथा यह चाल तुम ने कहां से चुराई है। मैं आशा करता हूं (अपि नाम) कि वह यहां कदाचित् आएगा। जैसा (यथा) उसने कहा वैसा (तथा) ही मैंने किया। जैसा (यथा) करोगे वैसा (तथा) भरोगे। हरिश्चन्द्र का नाम आज तक संसार में सूर्य की भाँति (यथा) चमक रहा है। आप बाज़ार जाएँ, मैं इस अन्तर में (यावत्) अपना सब काम कर लूंगा। अभी (यावत्) हम शहर से बाहर ही निकले थे जब (तावत्) वर्षा होने लगी। जब तक (यावत्) अपना काम न कर चुको तब तक (तावत्) मत खेलो। संसार में ऐसे रहना चाहिए कि जिससे

(येन) दूसरों को दुःख न हो। गुरु की सेवा करो ताकि (येन) विद्या प्राप्त कर सको। धर्म से च्युत मनुष्य को विद्वान् पशु के समान (वा) मानते हैं। क्या (अपि) तुम को गुरु ने घर जाने की आज्ञा दे दी है क्योंकि (हि) अब यह तुम्हारे गृहस्थ आश्रम का समय है। कृपया (हि) कहिए आप किस प्रयोजन से आए हैं।

अष्टाविंशः पाठः

Irregularities of the Present Stem.

भ्वादयः (Bhu class)

१६६—क्रम् 'step', आ-चम् 'sip', गुह् 'conceal', और ष्ठिव् 'spit' का 'अच्' (vowel) दीर्घ हो जाता है। जैसे, क्रामति, आचामति, गूहति और ष्ठीवति।

(क) मृज् 'cleanse' के अच् को वृद्धि हो जाती है और सद् 'sink' के 'अ' को 'ई' हो जाता है। जैसे, मार्जति, सीदति।

१६७—गम् 'go' और यम् 'restrain', को क्रमशः 'गच्छ्' और 'यच्छ्' आदेश हो जाता है। जैसे, गच्छति, यच्छति।

(क) दृश् 'see', ध्मा 'blow', और म्ना 'study' को क्रमशः 'पश्य' 'धम' और 'मन' आदेश हो जाता है। जैसे, पश्यति, धमति, मनति।

१६८—घ्रा 'smell', पा 'drink', स्था 'stand' को अभ्यास (reduplication) होता है और अभ्यास में 'अ' को 'इ' हो जाता है। जैसे, जिघ्रति, पिबति, तिष्ठति।

१६९—दंश् 'bite', मन्थ् 'churn', सञ्ज् 'adhere' में 'अनुनासिक' (nasal) का 'लोप' हो जाता है। जैसे, दशति, मथति, सजति।

दिवादयः (Div class)

१७०—शम् 'cease, be quiet', दम् 'pacify' श्रम् 'be weary', भ्रम 'roam', मद् 'rejoice', दिव् 'play' का अच् दीर्घ हो

जाता है। जैसे, शाम्यति, दाम्यति, श्राम्यति, भ्राम्यति, माद्यति, दीव्यति।

२७१—भ्रंश् 'fall' के 'अनुनासिक' का लोप हो जाता है। व्यध् 'pierce' को 'सम्प्रसारण' हो जाता है और जन् 'born' को 'जा' आदेश होता है। जैसे, भ्रश्यति, विध्यति, जायते।

तुदादयः (Tud class)

१७२—कृत् 'cut', मुच् 'loosen', लुप् 'break' लिप् 'paint', विद् 'find', सिच् 'sprinkle', के अन्तिम व्यंजन से पहिले 'अनुनासिक' का 'आगम' होता है। जैसे, कृन्तति, मुञ्चति, लुम्पति, लिम्पति, विन्दति, सिञ्चति।

१७३—इष् 'wish' के ष्' को 'छ' का 'आदेश' होता है। और ऋ 'go' को 'छ' का 'आगम' होता है। जैसे, इच्छति, ऋच्छति।

१७४—प्रच्छ् 'ask', भ्रस्ज् 'fry', व्रश्च् 'cut' को सम्प्रसारण हो जाता है। जैसे, पृच्छति, भृज्जति, वृश्चति।

Exercise 28.

मनुष्य अपने पापों को दूसरों से छुपाता है (गुह्) परन्तु सर्वव्यापक ईश्वर सब कुछ देखता है (दृश्)। नौकर बड़े कष्ट से बरतनों को साफ करता है (मृज्)। गोविन्द अपना भार उठाकर चला (गम्) परन्तु थोड़ी दूर जा कर भार से थक कर बैठ गया (सद्)। जब अर्जुन ने शंख बजाया (ध्मा) तो शत्रुओं ने भागना आरम्भ कर दिया। ब्रह्मचारी अपने आप को व्यसनों से हटाता है (यम्)। जब वह थक गया (श्रम) तो उसने दूध पिया (पा)। ये बालक वहां खेलते थे (दिव्) सो वहां ही शहद की मक्खियों ने इन्हें काटा है (दंश)। यह बेल जो कल इस वृक्ष से लिपटी हुई (सञ्ज्) थी अभी वायु से गिरी है (भ्रंश्) जब श्रवण नदी के किनारे फिर रहा था (भ्रम्) तो एक तीर ने उसकी टांग को बींध दिया (व्यध्)। जब मनुष्य अपनी इन्द्रियों का दमन करता है (दम्) तो उसका मन शान्त हो जाता है (शम्)। जो मनुष्य मुक्ति को प्राप्त नहीं करता (विद्) वह वृथा ही उत्पन्न होता है (जन्)।

हिरण्यक ने कबूतरों के बन्धनों को काट दिया (कृत्) और उनको मुक्त कर दिया (मुच्)। जो फल खाने की इच्छा करता है (इष्) वह वृक्ष को सींचता भी है (सिच्)। वह बाग में जाता है (ऋ) और बेलों को काटता है (व्रश्च्)।

नवविंशः पाठः

(CONTINUED)

अदादयः (Ad class)

१७५—यु 'join', और अन्य 'उकारान्त' धातुओं को हल (consonant) से आरम्भ होने वाले 'पित्' (strong) प्रत्यय के पूर्व गुण के स्थान में 'वृद्धि' होती है। जैसे, यौमि, परन्तु अयवम्।

(क) मृज् 'wipe', को भी गुण के स्थान में वृद्धि होती है। जैसे, मार्ष्टि (प्र० एक०) परन्तु मृजन्ति (प्र० बहु०)।

(ख) शी 'lie down' आ० को अपित् प्रत्ययों (weak terminations) से पूर्व 'गुण' होता है, और 'लट्', 'लोट्' और 'लङ्' के 'प्रथम' पुरुष के 'बहुवचन' में प्रत्यय से पहिले 'र्' का आगम होता है। जैसे, शेरते, शेरताम्, अशेरत (प्र० बहु०)।

१७६—साधारण नियम के प्रतिकूल वश् 'desire' को 'अपित्' प्रत्ययों से पूर्व 'सम्प्रसारण' होता है। जैसे, उशन्ति (प्र० बहु०), परन्तु वष्टि (प्र० एक०)।

(क) अस् 'be' के आदिवर्ण 'अ' का विधिलिङ् में, और 'लट्' और 'लोट्' में 'अपित्' प्रत्ययों से पूर्व लोप हो जाता है। जैसे, स्यात् (प्र० एक०), सन्ति (प्र० बहु० लट्)। लोट् में मध्यम पु० के एक वचन के प्रत्ययों से पूर्व ई' का आगम होता है। जैसे, आसीत्, आसीः।

(ख) हन् 'kill' 'परस्मै०' के 'अपित्' प्रत्ययों में 'त्' और 'थ्' से पूर्व 'न्' का लोप हो जाता है। जैसे, हथ (म० बहु०)। 'लट्' 'लोट्' और 'लङ्' में प्रथम पु० बहुवचन में 'ह्' के 'अ' का लोप हो कर इसे 'घ्' हो जाता

है। जैसे, घ्नन्ति; घ्नन्तु, अघ्नन्। लोट् के मध्यम पु० एक वचन में 'जहि' (घहि—झहि—जहि) बनता है।

१७७—रुद् 'weep', श्वस् 'breathe', स्वप् 'sleep', को 'य' के अतिरिक्त 'हल' से आरम्भ होने वाले प्रत्ययों से पूर्व 'इ' का 'आगम' होता है। परन्तु 'लङ्' के प्रथम और मध्यम पु० के एक० पर० के 'त्' और 'स्' के पूर्व 'ई' या 'अ' का आगम होता है। जैसे, रोदिमि, अरोदीत्' या 'अरोदत्' (प्र० एक० लङ्)

(क) ईश् 'rule' (आ०) को 'स्' और 'ध्' से आरम्भ होने वाले प्रत्ययों से पूर्व 'इ' का आगम होता है। जैसे, ईशिषे, ईशिध्वे; ईशिष्व, ईशिध्वम्।

(ख) ब्रू 'speak' को भी 'हल्' से आरंभ होने वाले 'पित्' प्रत्ययों के पूर्व 'ई' का आगम होता है। जैसे ब्रवीमि (परन्तु ब्रूमः), अब्रवीत्।

(ग) अधि-इ 'read' (आ०) के 'ई' को 'अचों' से परे 'लट्' में 'ईय्' और 'ऐ' (अ + ई) को 'ऐय्' आदेश होता है। जैसे, अधीये, अधीषे (लट् उ० म०); अध्यैयि, अध्यैथाः (लङ् एक, उ० म०)।

१७८—शास् 'rule' को 'हलों' से आरंभ होने वाले 'अपित्' प्रत्ययों से पूर्व 'शिष्' हो जाता है। जैसे, शिष्टः (लट्, म०, एक०)।

Exercise 29.

मैं ऐसे मित्र की जो बिछड़े हुओं को मिलाता है (यु) स्तुति करता हूं (स्तु)। गोपाल स्थान को साफ करता है (मृज्) क्यों कि वहां पर कांटे हैं (अस्)। पक्षी रात को वृक्षों पर अपने घोंसलों में सोते हैं (शी)। साधारण पुरुष संसार के सुखों की इच्छा करते हैं (वश्) परन्तु विद्वान् मोक्ष की इच्छा करता है (वश्)। योगी ने कहा—आज हम यहाँ हैं, कल हम पिछले गाँव में थे (अस्)। क्षत्रिय सब हिंसकों को मारते हैं (हन्), अतः हे राम ! तू भी इस राक्षसी को मार (हन्)। तू डर के कारण क्यों रोता था, तुम्हें देख कर यह लड़की भी रोती थी। जब गोविन्द सोता है (स्वप्) तो वह मुंह से सांस लेता है (श्वस्)। हे राजन्।

अपनी प्रजा पर धर्म से हकूमत कर (ईश्)। गीदड़ बोला 'महाराज! मैं सर्वथा सत्य कहता हूँ। मैं अपना पाठ पढ़ता हूँ (अधि-इ)। तुम क्यों वृथा फिरते हो, तुमने कल भी कुछ नहीं पढ़ा। हे भगवन्! कृपया आप मुझे यह बताइए (ब्रू) कि राजा युधिष्ठिर अपनी प्रजा पर कैसे शासन करते थे (शास्)।

त्रिंशः पाठः

जुहोत्यादयः (Hu class)

१७६—दा 'give', धा 'place' को 'अपित्' प्रत्ययों से पूर्व 'दद्' और 'दध्' आदेश होता है। 'त्' और 'थ्' से पूर्व दध् को 'धत्' हो जाता है। जैसे, दधामि, धत्थः। लोट् के मध्यम पु० के एक० पर० में 'देहि' और 'धेहि' होता है।

१८०—मा 'measure' हा 'depart' (आ०) को 'मिमी' और 'जिही' हो जाता है और अचों से पूर्व 'ई' का लोप हो जाता है। जैसे, जिहे, जिहीषे, जिहते; अजिहि, अजिहीथाः, अजिहत।

स्वादयः(Su class)

१८१—'अच्' अन्त वाली धातुओं के साथ 'उ' का व् या म् के पूर्व लोप हो जाता है। जैसे, सुन्वः या सुनुवः (परन्तु सुनोमि)।

(क) हलन्त धातुओं के साथ 'अचों' से पूर्व संयोगपूर्वक 'उ' को 'उव्' हो जाता है। जैसे, शक्नुवन्ति।

१८२—श्रु 'hear' और धू 'shake' को प्रत्ययों से पूर्व 'शृणु' और 'धुनु' हो जाता है। जैसे, शृणोति, धुनोति।

रुधादयः (Rudh class)

१८३—अञ्ज् 'anoint', भञ्ज् 'break', हिंस् 'injure' के 'अनुनासिक' का 'न' लगाने से पूर्व लोप हो जाता है। जैसे, अनज्मि, भनज्मि, हिनस्मि।

तनादय: (Tan class)

१८४—कृ 'do' 'पित्' प्रत्ययों के पूर्व 'करो' हो जाता है; और 'अपित्' प्रत्ययों से पूर्व 'कुरु' हो जाता है। इसके 'उ' का 'म्', 'य्', 'व्' के पूर्व लोप हो जाता है। जैसे, करोमि, कुरुथ:; परन्तु कुर्व:, कुर्म:; कुर्याम्।

स्वादि गण की भाँति इस गण की भी अन्य धातुओं का 'उ' 'व्' और 'म्' से पूर्व लुप्त हो सकता है।

१८५—क्र्यादय: (Kri class):—पू 'purify', लू 'cut' का 'अच्' ह्रस्व हो जाता है। जैसे, पुनामि, लुनामि।

१८६—ज्ञा 'know', ग्रह् 'seize', को 'जा' और 'गृह्' आदेश होता है। जैसे, जानामि, गृह्णामि।

१८७—बन्ध् 'bind', मन्थ् 'churn' के 'अनुनासिक' का लोप हो जाता है। जैसे, बध्नामि, मथ्नामि।

Exercise 30.

हे राजन्! तेरे पूर्वज ब्राह्मणों को अपना सर्वस्व भी दे देते थे, अत: तू भी अपने पुत्र को मेरी यज्ञ की रक्षा के लिए दे। बलभद्र ने अपने संदूक को जिस में उस ने अपना धन रक्खा था (नि-धा) छुपा दिया (पि or अपि-धा)। बलवान् शत्रु के साथ मित्रता कर (सम्-धा) ताकि तुझे कष्ट न हो। शास्त्र ब्रह्मचर्य का विधान करते हैं (वि-धा)। गोपाल ने शुद्ध वस्त्र पहने (परि-धा) और बाज़ार को गया (हा)। प्राचीन काल में आर्य लोग सोमलता से रस निकालते थे (सु)। मनुष्य वेद के ज्ञान द्वारा मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। (शक्)। हे बालक! सुन (श्रु), 'इन बेलों को मत हिलाओ (धू), ये टूट जाएँगी।' शत्रु का कभी तिरस्कार मत करो (तिरस्-कृ) क्योंकि वह कभी न कभी अवश्य दु:ख देगा। भद्र पुरुष संस्कृत वस्तुओं को सदैव स्वीकार करते हैं। जो जीवों को मारता है (हिंस्) ईश्वर उसको दण्ड देता है। जो मनुष्य प्रकृति और पुरुष के सम्बन्ध को जानता है वह अपने आत्मा को पवित्र करता है। उसने दौड़ते हुए घोड़े को पकड़ा (ग्रह्) और खम्भे से बांध दिया (बन्ध्)।

एकत्रिंशः पाठः

परस्मैपद और आत्मनेपद ।

१८८—संस्कृत में दो पद होते हैं । आत्मनेपद (voice for one's self) में क्रिया का फल 'कर्तृगामी' होता है और परस्मैपद (voice for another) में क्रिया का फल अन्य को होता है । वस्तुतः इन पदों में यही भेद है परन्तु व्यवहार में इस पर प्रायः कभी ध्यान नहीं दिया जाता ।

१८९—संस्कृत में प्रत्येक धातु का पद नियत होता है । परन्तु जब उनके साथ उपसर्ग (prepositions) प्रयुक्त होते हैं तो बदल भी जाता है । जैसे, गच्छति परन्तु संगच्छते (आ०) ।

१९०—आ के साथ क्रम् धातु किसी ज्योति (heavenly body) के उद्गमन (ascension) अर्थ में आत्म० में प्रयुक्त होता है । जैसे, आक्रमते सूर्यः 'सूरज निकलता है ।'

(क) प्र या उप के साथ आरम्भ (commencement) के अर्थ में भी क्रम् आत्म० में प्रयुक्त होता है ।[1] जैसे, प्र-उप-क्रमते भोक्तुं 'खाना आरम्भ करता है ।'

१९१—सम् पूर्वक गम् 'मिलना' (join) अर्थ में आत्म० में प्रयुक्त होता है ।[2] जैसे, सखीभिः संगच्छते 'सखियों से मिलती है ।'

१९२—वि और परा पूर्वक जि आत्म० में प्रयुक्त होता है ।[3] जैसे, विजयतां देवः 'महाराज की विजय हो ।' पराजयते शत्रुन् 'शत्रुओं को पराजित करता है ।'

१९३—उप पूर्वक नी आचार्यकरण (initiating into sacred rites) के अर्थ में आत्म० में प्रयुक्त होता है । जैसे, माणवकमुपनयते 'माणवक का उपनयन संस्कार करता है ।'

---

१. आङ उद्गमने (क्रमः) । १. ३. ४० । २. समो गम्यृच्छिभ्याम् । १. ३. २९ । ३. विपराभ्यां जेः । १. ३. १९ ।

(क) वि पूर्वक नी शिक्षा (teaching) और सिधाने (taming) के अर्थ में परस्मै० होता है। जैसे, गुरवो रघुं विनिन्युः 'गुरुओं ने रघु को शिक्षा दी। दुष्टसत्वान् विनयति 'दुष्ट जानवरों को सिधाता है।'

१६४ उप पूर्वक यम् विवाह करने के अर्थ में आत्म० है।[1] जैसे, उपयच्छते कन्याम् 'कन्या से विवाह करता है।'

१६५—अप पूर्वक वद् आत्म० है।[2] जैसे, अपवदते अन्यान् 'दूसरों को बुरा कहता है।'

१६६—उद् पूर्वक स्था आत्म० होता है, परन्तु उत्थान (rising) के अर्थ में परस्मै० होता है।[3] जैसे, मुक्तौ उत्तिष्ठते 'मुक्ति की उत्कण्ठा करता है।' आसनादुत्तिष्ठति 'आसन से उठता है।'

१६७ — देवपूजा (worshipping), 'संगतिकरण' (union, joining) 'मित्रकरण' (making friendship with) के अर्थों में उप पूर्वक स्था आत्म० होता है[4]। जैसे, सूर्यमुपतिष्ठते 'सूर्य की उपासना करता है।' गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते 'गंगा यमुना से मिलती है।' साधुमुपतिष्ठते साधुः 'भद्र पुरुष भद्र पुरुष से मित्रता करता है।'

Exercise 31.

जब तक सूर्य उदय नहीं होता (आ-क्रम्) तब तक अरुण ही अंधेरे को दूर करता है। जब स्कूल की घंटी बजती है तो लड़के पढ़ना आरंभ करते हैं (प्र-उप-क्रम्)। यज्ञदत्त जुआरियों से मिल गया (सं-गम्) और सारा धन हार गया। रघु ने अपने शत्रुओं को पराजित किया (परा-जि) और सारे भारतवर्ष को जीत लिया। वाल्मीकि ने लव और कुश का विधिपूर्वक उपनयन किया (उप-नी) और उनको

---

१. उपाद्यमः स्वकरणे। १. ३. ५६। २. अपाद्वदः। १. ३. ७३।

३. उदोऽनूर्ध्वकर्मणि। १. ३. २४।

४. उपान्मन्त्रकरणे। १. ३. २४। उपाद्देवपूजासंगतिकरणमित्रकरणपथिष्विति वाच्यम्।

वेद पढ़ाए (वि-नी) । नकुल अश्व-विद्या में इतना निपुण था कि अत्यन्त दुष्ट घोड़े को भी शीघ्र ही सिधा देता था (वि-नी) । राम ने शिव-धनुष को तोड़ कर सीता से विवाह किया (उप-यम्) । जब विश्वामित्र राजसभा में आए तो दशरथ सिंहासन से खड़े हो गए (उद्-स्था) । जो लोग राम की उपासना करते हैं (उप-स्था) और माता पिता की पूजा नहीं करते (उप-स्था) उन्होंने राम के महत्त्व को नहीं जाना है। प्राचीनकाल में जहां सरस्वती सिन्धु से मिलती थी (उप-स्था), उस स्थान का अब पता नहीं लगता । जो दुर्जनों की संगत करता है (उप-स्था) वह भी दुर्जन हो जाता है ।

द्वात्रिंशः पाठः

परस्मैपद और आत्मनेपद (Continued).

१९८—सम् पूर्वक विद् पहचानने के अर्थ में आत्म० होता है। जैसे, पितरावपि न मां प्रति संविदाते 'मेरे माता-पिता भी मुझे नहीं पहचान सकते ।'

१९९—आ पूर्वक शास् आशीर्वाद (blessing) के अर्थ में आत्म० होता है । जैसे, आशास्ते शिष्यम् '(गुरु) शिष्य को आशीर्वाद देता है ।'

२००—आ पूर्वक दा (उभय०), लेने के अर्थ में आत्म० होता है । जैसे, 'विद्यामादत्ते 'विद्या ग्रहण करता है ।'

२०१—आ पूर्वक प्रच्छ् जाने की आज्ञा लेने (bidding adieu to) के अर्थ में आत्म० होता है। जैसे, आपृच्छस्व प्रियसखममुम् 'उस अपने प्यारे मित्र से जाने की आज्ञा लो ।'

२०२—अप पूर्वक कृ उभय० होता है ।

(क) अनु और परा पूर्वक कृ परस्मै० होता है[1]। जैसे, अनुकरोति भगवतो नारायणस्य 'भगवान् नारायण का अनुकरण करता है।' पराकरोति दानम् 'दान को छोड़ता है।'

२०३—परि, वि, और अव पूर्वक क्री (buy) आत्म० होता है। जैसे, परिक्रीणीते, विक्रीणीते।

अप पूर्वक ज्ञा अपह्नुत (denying, concealing) के अर्थ में आत्म० होता है[2]। जैसे, शतमपजानीते 'सौ (रुपए) से इनकार करता है।'

(क) 'अनु' पूर्वक 'ज्ञा' उभय होता है।

२०५—आ पूर्वक मन्त्र् जाने की आज्ञा लेने के अर्थ में आत्म० है। जैसे, आमन्त्रयस्व सहचरम् 'अपने साथी से जाने की आज्ञा ले।'

Exercise 32.

यज्ञदत्त इतना दुर्बल हो गया था कि उसके मित्र भी उसको पहचानते नहीं थे (सं-विद्)। अनुसूया ने प्रसन्न हो कर सीता को आशीर्वाद दिया (आ-शास्) कि 'तू चिरकाल तक अपने पति को सुख देने वाली हो।' सुख देने के लिए ही राजा अपनी प्रजा से कर लेता है (आ-दा)। लक्ष्मण ने वन जाने के लिए अपनी माता से आज्ञा ली (आ-प्रच्छ्)। जो मनुष्य दूसरों का अपकार करता है (अप-कृ) लोग उसका तिरस्कार करते हैं। जो अवगुणों को छोड़ता है (परा-कृ) वह भद्र पुरुषों का अनुकरण करता है (अनु-कृ)। यज्ञदत्त ने अपने मित्र की रक्षा की और उसे उपकार का बदला दिया (परि-क्री)। जो घोड़ा गोपाल के पिता ने खरीदा था वह गोपाल ने बेच दिया (वि-क्री)। अब मुझे जाने की आज्ञा दीजिए (अनु-ज्ञा) क्यों कि आप अपनी ही कही हुई बातों से इनकार करते हैं (अप-ज्ञा)। युद्ध का वृत्तान्त जानने की इच्छा करते हुए कुमार ने अपने मित्रों से आज्ञा ली (आ-मन्त्र्) और युद्धक्षेत्र की ओर चल दिया।

---

१. अनुपराभ्यां कृञः। १. ३. ७६। २. अपह्नवे ज्ञः। १. ३. ४४।

Miscellaneous Exercises.

Exercise 33.

एक जंगल में कर्पूरतिलक नाम हाथी रहता था। सब गीदड़ों ने उसे देख कर सोचा कि यदि यह किसी उपाय से मरे तो इस के देह से हमारा चार महीने का भोजन हो सकता है। उन में से एक बूढ़े गीदड़ ने कहा "मैं अपनी बुद्धि के प्रभाव से इस को मार डालूंगा।' फिर वह हाथी के पास गया और दंडवत् प्रणाम कर के बोला 'हे देव! वन के रहने वाले सब पशुओं ने मिल कर मुझे आप के पास भेजा है कि विना राजा के रहना अच्छा नहीं। सो राजा के सब गुणों से युक्त आप को राज-तिलक के लिए नियत किया है। अतः आप शीघ्र चलिए ताकि लग्न का समय न टल जाए।' यह कह कर गीदड़ चल दिया। हाथी भी राज्य के लोभ में फंसा हुआ गीदड़ के पीछे चल पड़ा और एक बड़े कीच में फंस गया। तब हाथी ने कहा "हे मित्र! मैं अब क्या करूं कीच में फंसा हुआ मरा जाता हूं।" गीदड़ ने हंस कर कहा "महाराज! मेरी पूंछ का सहारा लेकर बाहर निकल आइए। आपने विना सोचे मेरी बात का विश्वास किया सो आप दुःख भोगें।" फिर उस कीच में फंसे हाथी को गीदड़ों ने खा लिया।

Exercise 34.

हस्तिनापुर में एक धोबी रहता था, उसका गधा बहुत बोझ उठाने से दुर्बल होकर मरने वाला हो गया। एक दिन धोबी ने उसे चीते की खाल उढ़ा कर वन के समीप अन्न के खेत में छोड़ दिया। खेत के मालिक उसे दूर से देख कर और व्याघ्र समझ कर भाग गए और गधे ने खूब पेट भर कर नाज खाया। ऐसे वह नित चीते की खाल ओढ़े आता और खेत चरा करता था। थोड़े ही दिनों में वह गधा खूब मोटा हो गया। इसके पीछे एक दिन एक खेत के रखवाले ने, जो चीते को मारना चाहता था, धनुष् और तीर को लिया। और अपनी रक्षा के लिए धूसर कम्बल ओढ़ कर शरीर को झुका कर खेत के कोने में खड़ा हो गया। गधे ने जब

उसे देखा तो वह उसे अन्य गधा जान कर ऊँचा शब्द करता हुआ उसकी ओर दौड़ा। अन्न के रक्षक ने चीत्कार शब्द से निश्चय करके कि यह गधा है सहज ही में उसको डंडों से मार डाला। अतः हे बालको, बिना सोचे समझे कोई बात मत करो। गधे को सोच समझ कर रेंकना था। चतुर लोग सोच समझ कर बातें करते हैं।

Exercise 35.

शिष्टाचार के साथ विद्या का कोई गहरा सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि कितने ही अनपढ़ लोग भी शिष्टाचारी होते देखे गए हैं। जो विद्वान् दुर्जन हैं वे सभा-समाज में निन्द्य समझे जाते हैं। किन्तु जो मूर्ख होकर भी सुजन है वह समाज में आदरणीय समझा जाता है। सब से पहले लोगों का स्वभाव ही देखा जाता है। स्वभाव की उत्तमता और नीचता पर लोगों की बड़ाई और छोटाई निर्भर है। विद्या की परख सब काल में नहीं होती किन्तु स्वभाव सभी काल में परखा जाता है। संसार में केवल विद्या पढ़ने ही से कोई शिष्ट या सुजन नहीं बन सकता। विद्या पढ़ कर भी शिष्टाचार के द्वारा ही सुशील और सत्पात्र बन कर कोई लोगों का श्रद्धास्पद हो सकता है। विद्यार्थी सुशील होने पर शिक्षकों का प्यारा होता है, संन्तान सुशील होने पर मां-बाप और गुरुजनों के प्यारे होते हैं। ग्रामवासी लोगों की शिष्टता से गांव स्वर्ग सा हो जाता है। देशवासियों की साधुता विदेशियों की श्रद्धा और प्रीति प्राप्त करती है। सुशील शिक्षकों पर विद्यार्थियों की भक्ति और श्रद्धा बढ़ती है। मालिक यदि अपने नौकरों के साथ अच्छा बर्ताव करे तो नौकर हृदय से उसके बाध्य और भक्त होते हैं। इस प्रकार परस्पर अच्छा व्यवहार करने से लोग बड़े आनन्द के साथ समय बिता सकते हैं।

Exercise 36.

अहंकार का ठीक उलटा विनय है। अहंकार दोष है, विनय गुण है। मनुष्यमात्र गुण के पक्षपाती हैं अतः वे अहंकार नहीं देख सकते और विनय को देख कर हृदय से प्रसन्न होते हैं। विनय जैसे अपने गुण

से शत्रु को मित्र बना सकती है वैसे अहंकार भी मित्र को शत्रु बनाता है और शत्रुओं की संख्या बढ़ाता है। सौजन्य, विनय और मधुर भाषण परस्पर जैसे मिले जुले हैं वैसे ही अशिष्टता, कठोर भाषण और अहंकार भी परस्पर सहानुभूति रखते हैं। विनयी किसी काम में सफलता प्राप्त करता है और अविनयी निष्फलता। विनयी लोगों की अधीनता आप से आप लोग स्वीकार करते हैं। किन्तु अहंकार से रुष्ट हो कर कोसों दूर भागते हैं। यदि तुम सीधे उपाय से अपना सुयश संसार में फैलाना चाहो तो विनयी, मिठ-बोले और निरभिमान बनो। जो लोग सच्चे साधु महात्मा हैं वे साधारण लोगों की अपेक्षा अधिक विनयी होते हैं। जो शिक्षक जितने ही अधिक विनयी होते हैं उन के शिष्य गण उन के प्रति उतनी ही अधिक भक्ति और विनय का व्यवहार दिखलाते हैं। क्यों कि 'बलवान् पुरुषों के निकट जो दुर्बल व्यक्ति नम्रता दिखलाता है उसे भक्ति नहीं कह सकते। किसी की श्रेष्ठता पर जो स्वतः सद्भाव उत्पन्न होता है उसी का नाम भक्ति है।

Exercise 37.

जब रावण ने मेघनाद का मरना सुना तो उसे मूर्च्छा आ गई। थोड़ी देर में जब उसे होश आई तो उस ने अपनी सेना को तय्यार होने की आज्ञा दी और रथ में सवार हो युद्ध क्षेत्र में पहुँचा। अब राम और रावण का घोर युद्ध होने लगा। रावण बड़ा बलवान् था। वह अपने सामने देवताओं को भी कुछ नहीं समझता था फिर वानर आदि का तो कहना ही क्या। रावण ने ऐसे विकट तीर रामचन्द्र को मारे कि उनको एक बार मूर्च्छा भी आ गई। राम रावण की ऐसी भयानक लड़ाई हुई कि ऐसी कभी किसी की नहीं हुई। लड़ाई होते होते आखिर रावण मारा गया। रावण के मरते ही सारी लंका में शोक छा गया। बंदर मारे खुशी के नाचने लगे। जब उस दुष्ट राक्षस के मरने की खबर वन में मुनियों ने सुनी तो वे बड़े प्रसन्न हुए। सब रामचन्द्र को आशीर्वाद और धन्य-वाद देने लगे। युद्ध के समाप्त होने पर रामचन्द्र ने लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान आदि को विभीषण को राज्यतिलक करने के लिए लंका में भेजा।

उन्होंने विधिपूर्वक विभीषण को राज्यतिलक किया। युद्ध से बाकी रहे हुए सब राक्षसों ने विभीषण को अपना राजा मंज़ूर किया।

Exercise 38.

प्रत्येक देश की उन्नति उस के नवयुवकों पर निर्भर है। जापान के नवयुवक अपनी जन्मभूमि के लिए सर्वदा प्राण तक देने को तय्यार रहते हैं। यद्यपि योरोपनिवासियों के संसर्ग से उन में पश्चात्य सभ्यता फैल चुकी है और वह उत्तरोत्तर वृद्धि पा रही है, परन्तु उन्होंने अपने सामाजिक भावों को अक्षुण्ण रखने का सदैव प्रयत्न किया है। अब भी उनके सामाजिक भाव वैसे ही हैं। वे यद्यपि घर से बाहर योरोपियन वेशभूषा से सज्जित रहते हैं, परन्तु घर में अपने प्राचीन गौरव को स्थायी बनाए रखते हैं। जापान में दो धर्म प्रचलित हैं एक 'बौद्ध' दूसरा 'शिन्टो'। यह जापानियों का पुराना धर्म है। बौद्ध धर्म प्रचलित होने से पूर्व सब इसी के अनुयायी थे। उस धर्म में विशेष नियम आदि नहीं हैं। जापान भी हिंदुओं की भाँति अनेक देवी देवताओं का उपासक है। १५ वीं सदी में यहाँ इसाई धर्म का प्रचार हुआ, और लाखों जापानियों ने इसाई धर्म को अपना लिया।

Exercise 39.

दुर्योधन ने यज्ञ के पश्चात् द्रोणाचार्य से कहा—'महाराज, आप भी कुछ दक्षिणा लीजिए।' आचार्य ने उत्तर दिया--'हे दुर्योधन! पांडवों को उनका आधा राज्य दे। यही मेरी दक्षिणा होगी।' दुर्योधन ने शकुनि आदि के साथ सलाह कर के आचार्य को कहा कि 'यदि पांच दिन के अंदर अंदर आप पांडवों का पता ला दें तो मैं उन को आधा राज्य दे दूंगा। इसी समय त्रिगर्तराज का विराटराज से युद्ध में हारने का समस्त वृत्तान्त जासूस ने द्रोण और भीष्म को आ सुनाया। उन्होंने इस घटना से पांडवों की विराट-देश में स्थिति सम्भव जानकर अपने मनोरथ की सिद्धि को निकट समझा। अतः उन्होंने दुर्योधन से कहा कि विराटराज से हमारा पुराना वैर है, अतः हम उस पर चढ़ाई करना चाहते हैं। कौरवों की सेना ने विराटराज की गौवों को पकड़ लिया। उस समय

विराटराज राजधानी में न था अतः उत्तर कुमार अर्जुन को जो कि बृहन्नला के रूप में महलों में गाना-नाचना सिखाता था, सारथी बनाकर युद्ध-क्षेत्र में आया। परन्तु कौरवों के महारथियों को देख कर भयभीत हो भागने लगा। तब अर्जुन ने उसे सारथी बना और स्वयं युद्ध करके कौरवों को परास्त किया। इस प्रकार अर्जुन तथा पांडवों का पांच दिन के भीतर पता लगने पर द्रोण ने दुर्योधन को अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने को कहा। परन्तु दुर्योधन ने यह कह कर कि 'अर्जुन प्रतिज्ञा किए गए तेरह वर्ष समाप्त होने से पूर्व ही पहचाना गया है', अपनी प्रतिज्ञा को पूरा न किया।

Exercise 40.

थोड़ी दूर जाकर क्या देखते हैं कि एक मनुष्य जिस डाल पर बैठा है उसी को काट रहा है। उसे महामूर्ख समझ कर पंडितों ने उसे बड़े आदर से नीचे बुलाया और कहा कि हमारे साथ चलो। हम तुम्हारा विवाह राजा की पुत्री से करादेंगे। परन्तु वहां जाकर तुम मुँह से न बोलना। जो कुछ बात करनी हो सब संकेतों द्वारा करना। इस प्रकार की पट्टी पढ़ा कर वे उसे सभा में ले गए। पंडितों ने उसका बड़ा आदर किया, उसे उन्होंने सब से ऊँचे आसन पर बैठाया। जब वह बैठ गया तब राजकुमारी से निवेदन किया कि ये बृहस्पति के समान बुद्धिमान् और विद्वान् हमारे गुरु महाराज आपके साथ विवाह करने आए हैं, परन्तु आजकल ये मौनव्रत धारण किए हुए हैं। जो कुछ शास्त्रार्थ करना हो सब संकेतों द्वारा कीजिए। राजकुमारी ने इस अभिप्राय से कि ईश्वर एक है, एक उंगली उठाई। उस मूर्ख ने समझा कि राजकुमारी एक उंगली उठा कर मेरी एक आंख फोड़ना चाहती है, उसने इस विचार से कि मैं तेरी दोनों आंखें फोड़ दूंगा अपनी दो उंगलियां दिखाईं। परन्तु पंडितों ने उन दोनों उंगलियों से ऐसे-ऐसे अर्थ निकाले, ऐसे-ऐसे गूढ़ भाव प्रकट किए कि राजकुमारी को हार माननी पड़ी। फिर क्या था, दोनों का विवाह होगया।

Exercise 41.

हल्दीघाटी की लड़ाई के पीछे उदयपुर भी प्रतापसिंह के हाथ से निकल गया। इसी समय से प्रतापसिंह को दुर्भाग्य ने सब ओर से घेर

लिया। तब से उनको एक क्षण भी सुख नहीं मिला। अपनी स्त्री और सन्तान को साथ लिए हुए एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर, दूसरे से तीसरे पर, और तीसरे से चौथे पर जाकर, उनको अपनी और अपने कुटुम्ब की प्राण-रक्षा करनी पड़ी। आज यहां, कल वहां, और परसों कहीं दूसरे स्थान में। इसी प्रकार वे बराबर घूमते और नाना प्रकार के कष्ट सहते रहे। जंगली फल उनका भोजन था; घास-फूस उनका बिछौना था; और खाने-पीने के समय पेड़ों के पत्ते उनके बरतन थे। उनका पता लगाने के लिए मुग़लों के दूत पर्वतों और घाटियों में घूमा करते थे; और उनके सरदार सदा उनका पीछा किया करते थे। कभी-कभी वे ऐसी विपत्ति में फंस जाते थे कि अपनी स्त्री, पुत्र आदि को विश्वासपात्र भीलों के यहां छोड़ कर उन्हें कहीं-न-कहीं चला जाना पड़ता था। कभी-कभी उन्हें फल तक खाने को नहीं मिलते थे। ऐसी दशा में घास के बीजों की रोटियां खाकर वे अपने दिन काटते थे। एक बार, सन्ध्या को उनकी लड़की के खाने के लिए एक रोटी रखी थी। उसे एक बन-बिलाव उठा ले गया। यह देखकर लड़की चिल्ला उठी और बिलख बिलख कर रोने लगी। अपनी सन्तान की ऐसी दुर्दशा देख कर प्रतापसिंह का वज्र-सम हृदय पिघल उठा।

Exercise 42.

हमारा जीवन पहले जैसा सरल, साधारण तथा सादा नहीं रहा। हमें अपने ही देश नहीं, किंतु दूसरे देशों के मालों की आवश्यकता होती है। हम कपड़ा जो पहनते हैं, वह लंकाशायर और जापान का बना होता है। भारत के कोने कोने—छोटे छोटे गांवों तक में—विलायती और जापानी कपड़े पहुँच गए हैं। इन दिनों स्वदेशी आन्दोलन के कारण हमारा ध्यान स्वदेशी चीज़ों की ओर आकर्षित हुआ है। किंतु इन स्वदेशी वस्तुओं को बनाने वाली मशीनें दूसरे देशों से ही मंगाई जाती हैं। तात्पर्य यह कि हमारा जीवन अन्य देशों पर अवलंबित है जैसा कि पहले कभी नहीं था। सूई, पैंसिल, कलम, निब आदि छोटी छोटी चीजें दूसरे देशों से हमारी आवश्यकता पूरी करने के लिए आती हैं। हमारे बच्चों के लिए टीन और रबड़ के छोटे छोटे खिलौने तक बाहर से आते हैं। हमें जिस वस्तु की जब

ज़रूरत पड़ती है तभी मिल जाती है। चाहे वह वस्तु देश की हो या विदेश की, उसके लिए हमें इंतज़ार नहीं करना पड़ता। हमारे पास यदि पैसे हैं, तो हम संसार के एक कोने में बनी हुई चीज़ संसार के दूसरे कोने में खरीद सकते हैं। अनेक प्रकार के ससते तथा सुंदर माल तैयार हो रहे हैं। जिस तादाद में तथा जितने प्रकार के माल आज तैयार हो रहे हैं, उतने पहले कभी भी तैयार नहीं होते थे।

बड़ी मिलों और कारखानों में हज़ारों आदमी काम कर रहे हैं। उन्हें अच्छी मज़दूरी मिलती है। उनकी आर्थिक दशा पहले से बहुत अच्छी है। अमेरिका में मज़दूरों तक की मोटर-गाड़ियां हैं। शान से अपनी मोटरों में सैर करते हैं। वे शिक्षित हैं। वे अपने समय का ख्याल रखते हैं। उनकी आंखें खुल गई हैं। अपने देश की राज-नीति और शासन में परोक्ष रूप से भाग लेते हैं। थोड़े में, इन सब बातों का श्रेय पूंजीवाद को है। आश्चर्य यह है कि इस आर्थिक संगठन का न कोई नियामक और न अनुशासक है। इसके सभी काम स्वतः हो रहे हैं।

Exercise 43.

धोबी तो प्रतिदिन की भांति घाट पर गया हुआ था, उस दिन मालकिन भी घर के काम-काज से निपट कर लापता हो गई। शायद बाज़ार गई थी। इधर मैंने भी रस्सी काटनी आरंभ की। थोड़ी ही देर में मेरे पैने दांतों ने उसकी लड़ें करदीं और एक झटके में ही मैं स्वतन्त्र हो गया। बड़े उत्साह से मैं आंगन में आया, पर बाहर का दरवाज़ा भिड़ा हुआ था। मैंने भी कहा कि यह कौन बड़ी बात है, पर मेरे हज़ार यत्न करने पर भी वह न खुला। मालूम हुआ कि बाहर से ताला लगा हुआ है। पहले तो जी में आया कि दीवार फांद चलूँ, पर बाद को यह सोचकर कि भले आदमी यूं नहीं आते जाते मैं रुक गया। हाँ, दीवार की ऊँचाई भी मेरे रुक रहने का एक कारण थी।

आखिर लाचार हो मैं घर के अंदर ही टहलने लगा। वाह रे भाग्य! गर्मागर्म खाना रखा था। मैंने पहले रोटियों पर ही हाथ साफ किया क्योंकि वे कुछ कुछ ठंडी हो चुकी थीं। दाल का बर्तन तो अभी तक

चूल्हे पर ही रखा था; इससे उसका खाना असंभव था। पास ही एक कड़ाही में किसी प्रकार की तरकारी रखी थी। इसके एक दो कौर तो बड़े स्वादिष्ट लगे, पर तीसरा कौर खाते ही जीभ अकड़ गई। न जाने इसमें कौनसी अत्यन्त कड़वी वस्तु पड़ी थी। मैं तो घबरा गया। पता नहीं मनुष्यों को ऐसी कड़वी वस्तु कैसे अच्छी लगती है। फिर तो मैंने उसे सूँघा भी नहीं।

Exercise 44.

इस विजय से शिवाजी की शक्ति और इलाका दोनों बहुत बढ़ गए। औरंगज़ेब ने मरहठा राजा को दबाना चाहा। उसका दमन करने के लिए शाइस्ताखां सेनापति भेजा। शिवाजी फिर पहाड़ों में घुस गया। शाइस्ताखां खाली किलों को सर करता हुआ पूना के महलों में आकर ठहरा। यह वह स्थान था जहां की तिल-तिल धरती से शिवाजी परिचित था। वह एक बरात के साथ अपने कुछ मित्रों सहित पूना में पहुँच महल में घुस गया। सब सोए हुए थे कि अकस्मात लोग चिल्लाए और पुकार उठे—"मरहठे आ गए।" शाइस्ताखां का बेटा मारा गया और वह स्वयं एक खिड़की से कूद कर भागा; उसकी दो अंगुलियां कट गईं। शिवाजी मार काट करके निकल गया। उसने अपने दुर्ग में पहुँच कर दीपमालाएं जलाईं, जो कोसों से दिखाई देती थीं।

अन्त में शिवाजी की औरंगज़ेब से संधि हो गई। वह बादशाह के बुलाने पर दिल्ली पहुँचा। यदि उस समय अकबर दिल्ली का बादशाह होता तो वह अवश्य ही इस वीर राजा को अपना मित्र बना लेता, परन्तु औरंगज़ेब ने उसे उलटा बंधन में कर लिया। शिवाजी कब बंधन में रहने वाला था। वह दान करने के लिए प्रतिदिन मिठाई के बड़े-बड़े टोकरे मंगवाने लगा। एक दिन जब पहरेवाले असावधान थे, शिवाजी एक टोकरे में बैठकर बाहर निकल गया। वहाँ घोड़े तैयार खड़े थे; उन पर चढ़ कर उसने दक्षिण की राह ली और वहाँ पहुँच कर प्रलय मचा दी।

Exercise 45

सायंकाल का समय था। आकाश में बादल छाए हुए थे। बूंदें

पड़ रही थीं। हवा कुछ ठंडी हो चली थी। काम करने वाले जल्दी से अपना काम पूरा करके घरों को चल दिए। रास्ते में कीचड़ था जिससे आसानी से कोई निकल न सकता था। उसी समय एक लड़का "गाड़ी रोको गाड़ी रोको" चिल्लाता हुआ गाड़ी के पीछे भाग रहा था। गाड़ी में एक आदमी बैठा था। उसने पीछे झांक कर देखा और गाड़ी रुकवाई। जब वह लड़का पास आ गया तब उसने पूछा—कहो भाई, क्या काम है? लड़के ने कहा—तीन दिन हुए आपके कोचवान ने गाड़ी की लालटैन जलाने के लिए एक पैसे की दियासिलाई मुझसे मोल ली थी, पर पैसे की जगह आप मुझे एक अठन्नी दे गए थे। मैंने उस समय अन्धेरे में नहीं देखा, अब आप अपनी अठन्नी लीजिए, और मेरी दियासिलाई का एक पैसा मुझे दीजिए।

आदमी को लड़के की बात पर बड़ा अचंभा हुआ। उसने कहा—अठन्नी से तुम्हारा कुछ न कुछ भला ही होता, उसे मुझे क्यों लौटाते हो।

लड़का बोला—अठन्नी जब मेरी नहीं है, तो मैं उसे क्यों रखूं?

वह आदमी बोला—तुम ने अठन्नी चुरा कर तो नहीं ली थी?

लड़के ने कहा—इस प्रकार दूसरे की वस्तु का प्रयोग करना भी तो चोरी है। आदमी को सदा अपनी कमाई पर भरोसा रखना चाहिए।

लड़के की बात सुन कर रईस दंग रह गया। उसने चुपचाप अठन्नी वापिस ले ली और दिल में लड़के की प्रशंसा करता हुआ गाड़ी बढ़ा कर ले गया।

Exercise 46

आज दीवाली है। सब के मुखों पर उत्साह की झलक दिखाई पड़ती है। लड़के सवेरे से ही प्रसन्न-मुख इधर-उधर दौड़ रहे हैं। घर वालों की घर की सफाई में पूर्ण सहायता कर रहे हैं। घर वाले भी उनकी मांग पूरी कर रहे हैं। पैसा पाकर कोई दौड़ा हुआ मिठाई के खिलौने लाने जा रहा है। कोई अपनी माँ से जुआ खेलने को कुछ और पैसे मांग रहा है। माँ जुआ खेलने के लिए पैसे नहीं देती। इस पर वह कहता है—

"माँ, अच्छा जुआ न खेलेंगे, मिठाई लेंगे।" माँ कहती है—"मिठाई तो घर में इतनी रखी हुई है। तेरी नानी के यहाँ से आई है; खाते क्यों नहीं?"

सन्ध्या होते ही रात्रि के अन्धकार पर चढ़ाई हो गई। जो स्थान सदा अन्धकार में पड़े रहते थे, वे भी आज प्रकाश से जगमगा रहे हैं। मकानों की छतों पर, छज्जों पर, मुंडेरों पर एक साथ दीपकों की पंक्तियां जल उठीं। नगरों और कस्बों में चारों ओर प्रकाश की टेढ़ी-सीधी रेखाओं का जाल-सा फैल गया है। सड़कों और गलियों में भीड़ के मारे पैर रखने को जगह नहीं। सब लोग जगमगाती छटा को देखने के लिए घरों से निकल पड़े हैं। दुकानों की सजावट का क्या कहना! तरह-तरह के झाड़ों और शीशों से रंग-विरंग की रोशनी निकल कर मन मोहित कर रही है। बरतनों की दुकानों की चमक दमक सब से निराली है। नीचे-ऊपर या पंक्तियों में सजाए हुए बरतन ऐसे झलक रहे हैं कि ग्राहक उनमें अपना मुख देख सकते हैं। किसी दुकान पर बड़े-बड़े खिलौनों की अनूठी सज-धज के बीच ग्रामोफोन या रेडियो बज रहा है। वहाँ से लोगों की भीड़ हटती ही नहीं।

Exercise 47

जहाज़ दूसरे बंदरों पर ठहरे बिना नेटाल पहुँचने वाला था। इस लिए सिरफ १८ दिन की यात्रा थी। मानो हमारे पहुँचते ही, भारी तूफ़ान की चेतावनी देने के लिए, हमारे पहुँचने से ३-४ दिन पहिले, समुद्र में भारी तूफान उठा। इस दक्षिण-प्रदेश में दिसम्बर मास गरमी और बरसात का होता है। अतः दक्षिण समुद्र में इन दिनों छोटे-बड़े तूफ़ान प्रायः उठा करते हैं। तूफ़ान इतने ज़ोर का था और इतने दिन रहा कि मुसाफिर घबरा गए।

यह दृश्य भव्य था। दुःख में सब एक हो गए। भेद-भाव भूल गए। ईश्वर को सच्चे हृदय से स्मरण करने लगे। हिन्दु मुसलमान सब साथ मिलकर प्रभु को याद करने लगे। कितनों ने मानताएँ मानीं।

कप्तान भी यात्रियों में आकर आश्वासन देने लगा कि यद्यपि तूफ़ान ज़ोर का है, इससे बड़े-बड़े तूफ़ानों का अनुभव मुझे है। जहाज़ यदि मज़बूत हो तो यकायक डूबता नहीं। इस प्रकार उसने मुसाफिरों को बहुत समझाया, पर उन्हें किसी प्रकार तसल्ली न हुई। जहाज़ में आवाज़ें ऐसी-ऐसी निकलतीं, मानों जहाज़ अभी कहीं न-कहीं से टूट पड़ता है—अभी कहीं छेद होता है। झोले इतने खाता कि जानप ड़ता, अभी उलट जाएगा। डेक पर खड़ा रहना कठिन था। "ईश्वर जो करे सो सही" के अतिरिक्त दूसरी बात किसी के मुख से न निकलती थी। इस प्रकार २४ घंटे बीत गए अन्त को बादल बिखरे, सूर्य भगवान ने दर्शन दिए। कप्तान ने कहा— "अब तूफ़ान जाता रहा।"

Exercise 48.

१५ जनवरी १९३४ का तीसरा पहर था। इलाहाबाद में अपने मकान के बरामदे में खड़ा किसानों के एक गिरोह को मैं कुछ बातें बतला रहा था। माघ का मेला आरंभ हो गया था और सारे दिन हमारे यहां मिलने जुलने वालों का तांता लगा रहता था। यकायक मेरे पांव लड़खड़ाने लगे और सम्हालना कठिन हो गया। मैंने पास के एक खंभे का सहारा ले लिया। दरवाज़ों के किवाड़ भड़भड़ाने लगे और बराबर के स्वराज्य भवन से, जिसके खपरे छत से नीचे खिसक रहे थे, एक गड़गड़ाहट की आवाज़ आने लगी। मुझे भूकंपों का कुछ अनुभव नहीं था। इसलिए पहले तो मैं यह न समझ सका कि क्या हो रहा है परन्तु मैंने शीघ्र ही जान लिया। इस अनोखे अनुभव से मुझे कुछ विनोद और दिलचस्पी हुई। मैंने किसानों से बात-चीत जारी रखी और उन्हें भूकंपों के बारे में बतलाने लगा। मेरी बूढ़ी मौसी ने कुछ दूर से चिल्लाकर मुझे मकान के बाहर दौड़ आने के लिए कहा। यह विचार मुझे बिल्कुल बेहूदा मालूम हुआ। मैंने भूकम्प को कोई गंभीर बात नहीं समझा, और कुछ भी हो, मैं ऊपर की मंजिल में अपनी माता को खाट पर पड़ी हुई, और वहीं अपनी पत्नी को, जो शायद सामान बांध रही थी, छोड़ जाने और अपनी रक्षा का प्रबन्ध करने के लिए कभी तैयार न था। ऐसा प्रतीत हुआ कि

भूचाल के धक्के काफी देर तक जारी रहे और बाद में बंद हो गए । उन्होंने चन्द मिंटों की बातचीत के लिए मसाला पैदा कर दिया और लोग उन्हें जल्दी ही भूल-से गए । उस समय हम नहीं जानते थे, और न अनुमान ही कर सकते थे, कि ये २-३ मिनट बिहार और अन्य स्थानों के लाखों पुरुषों के लिए कितने घातक प्रमाणित होंगे ।

Exercise 49.

हम सुखी रहें, हमारा जीवन सुख से व्यतीत हो, यही सब की इच्छा रहती है, परन्तु हम में से बहुत थोड़े मनुष्य हैं जो सुखी रहना जानते हैं । सुख, धन और अधिकार एवं विषय भोग में नहीं है । यह संयम और सुनियम के साथ जीवन निर्वाह करने में है । मनुष्य को चाहे सांसारिक कार्य्यों में सफलता प्राप्त हो और वह इस सफलता से थोड़े समय के लिए भले ही प्रसन्न हो जाए, परन्तु उसको अपने जीवन भर चिन्ता और शंका बनी ही रहती है । यदि किसी मनुष्य में आनन्दित रहने का गुण नहीं है तो संसार की कोई सामग्री उसको सुखी नहीं कर सकती । सारा संसार उसको दुःख रूप भान होता है । सुख और शान्ति का सामान मनुष्य के अंदर है ।

मनुष्य का जीवन एक बहुमूल्य वस्तु है । हम जैसे जैसे समझदार होते हैं इस बात का विचार करते हैं कि हमारे जीवन का मुख्योद्देश्य क्या होना चाहिए । अधिक से अधिक मनुष्यसंख्या की भलाई करना मनुष्य जीवन का एक साधारण उद्देश्य समझा जाता है । परन्तु जो लोग इस सिद्धान्त को भी सर्वथा ठीक नहीं मानते, वह भी कम से कम यह अवश्य स्वीकार करते हैं कि हमें दूसरों की प्रसन्नता के लिए उतना प्रयत्न ज़रूर करना चाहिए, जितना कि हम कर सकें । पर ऐसे मनुष्य बहुत हैं, जिन्हें इस विषय में संदेह होता है कि क्या यह भी हमारा कर्तव्य है कि हम अपने आप प्रसन्न रहने का प्रयत्न करें । यह ठीक है कि अपनी ही प्रसन्नता प्राप्त करना हमारा मुख्योद्देश नहीं होना चाहिए और न वह हमें कभी प्राप्त ही हो सकती है, यदि हम स्वार्थी बन कर उसे प्राप्त करना भी चाहें । परन्तु

यदि हमारा जीवन।सुखमय जीवन हो तो वह कोई अनुचित बात न होगी। हमें केवल सुखों के वश में न हो जाना चाहिए, नहीं तो हम उनके कारण उलटे दुःख में पड़ जाएंगे।

Exercise 50.

वह क्या देखता है, बस्ता खुला है। उसमें की पुस्तकें नहीं हैं! एक तो कपड़े ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उसको देरी हो गई थी, दूसरे बस्तेमें किताबें नहीं थीं; फिर देर से पाठशाला में उपस्थित होने वाले बालकों की क्या दशा होती है, यह भी वह जानता था; इसलिए वह बहुत घबड़ाया। लड़का धैर्य धारण न कर सका। वह रोता हुआ माँ के पास गया और पूछने लगा—माता, मेरी किताबें कहाँ हैं? माता ने कहा—मैं नहीं जानती और ऐसा कह वह अपने काम-काज में लग गई। कदाचित् पिता जानते हों, ऐसा सोच लड़का बैठकख़ाने की ओर दौड़ता हुआ गया, परन्तु उसका पिता वहाँ नहीं था, वह अपने काम पर चला गया था। लाचार हो वह अपनी माता के पास आकर रोने लगा। अपने पुत्र को रोता देख माता का जी भर आया और उसने स्वयं सामान ढूंढ़ने में सहायता दी। माता की सहायता से कुछ परिश्रम करने के पश्चात् पढ़ने के सब सामान मिल गए। मोहन उन्हें बस्ते में जैसे-तैसे सँभाल पाठशाला की ओर जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाए जाने लगा। वह रास्ते में सोचता जाता था कि आज गुरु जी मुझे क्या कहेंगे? मैं उन्हें क्या उत्तर दूँगा? बस, आज मुझे सज़ा अवश्य मिलेगी, इत्यादि। चलते-चलते पाठशाला पास आ गई। लड़का डरता हुआ भीतर गया और अपने गुरु जी को प्रणाम कर अपनी जगह पर बैठ गया। शिक्षक ने मोहन को देख उससे देर होने का कारण पूछा। लड़के ने सब हाल सच्चा-सच्चा बतला दिया। शिक्षक महाशय ने उसे सामान सावधानी से न रखने के अपराध में दो बेत की सज़ा दी। छुट्टी होने पर लड़का घर आया। जब उसका पिता बाहर से आया, तब लड़का कहने लगा—पिता जी! न जाने आज किसने मेरे पढ़ने के सामान तथा कपड़े छिपा दिए थे, जिसके ढूँढ़ने में मुझे पाठशाला जाने में बहुत देर हो गई

और गुरु जी ने मुझे दो बेत की सज़ा दी। पिता ने पूछा कि मार खाने का तुम्हें बहुत दुःख तो नहीं है ? लड़के ने उत्तर दिया कि मुझे मार खाने का दुःख तो है ही, पर उस सामान के छिपाने वाले के ऊपर बहुत क्रोध आता है। पिता ने कहा—यदि तुम्हारा सामान छिपाने वाला आदमी मिल जाय तो उसको क्या करोगे ? लड़के ने कहा—मैं बिना सज़ा दिए न रहूँगा। पिता ने कहा—तो तुम्हीं बताओ कि उस अलमारी की किताबें बखेरने वाले को कौनसी सज़ा होनी चाहिए। यह सुन लड़का बहुत लज्जित हुआ। तब पिता ने समझाया कि देखो, हमें दूसरों के जिन कामों से दुःख होता है, वैसे ही दूसरों को भी हमारे उन्हीं कामों से दुःख मिलता है। यदि तुम अलमारी की किताबें न बखेरते, तो न तुम्हारे बस्ते की किताबें जहाँ-तहाँ रक्खी जातीं न पाठशाला जाने में तुम्हें देर होती, और न तुम्हें बेतों की सज़ा मिलती। मोहन ने अपने पिता की बातें सुनकर निश्चय किया कि मैं आज से ऐसा काम नहीं करूँगा, जिससे किसी दूसरे को दुःख पहुँचे, और उस दिन से उसने उपद्रव करना छोड़ दिया।

Exercise 51.

मगर धोका देना भी तो हमें प्रकृति ही सिखाती है। छिपकली जब अपना शिकार पकड़ने जाती है तब छिपकर और एक-दम झपट कर वार करती है। शेर या चीता भी लुक-छिप कर ही दबे पाँव शिकार के पास तक पहुँचता है तब फिर हमने ही कौन-सा पाप किया है जो छिपकर दूसरे जानवर को गोली मार दी ? शायद कुदरत ने ताक़त इसी वास्ते दी है कि कमज़ोर पर आज़माई जाए। 'कमज़ोर मार खाने की निशानी' की मसल बहुत पुरानी है, धोखा, छल या फ़रेब भी तो एक प्रकार का बल ही है।

यदि जानवर एक दूसरे को केवल पेट भरने को मारा करते तो भी शायद यह कहा जा सकता कि पेट भरने को मारना हिंसा नहीं। किन्तु प्रकृति ने ही एक को दूसरे का शत्रु बनाया है। न्योला यदि सांप को देख पाए तो वार किए बग़ैर नहीं छोड़ता; सिंह और हाथी का वैर स्वाभाविक है; कुत्ता और बिल्ली की दुश्मनी कुदरती है। यह सब या और भी कितने

ही जानवर एक दूसरे को मार भले ही डालें, किन्तु खाते नहीं। केवल एक दूसरे पर विजय पाकर उसे मार या ज़ख़मी कर चले जाते हैं। न उसके दुःख, न दर्द की परवा होती है, न मरहम-पट्टी की। किन्तु जैसा हमने ऊपर कहा है, आदमी की शत्रुता सारे ही जानवरों से स्वाभाविक-सी हो गई है, क्योंकि उसका वही मनोरंजन है।

वास्तव में आदमी कहे चाहे जो भी, कितनी ही अहिंसा की दोहाई क्यों न दे, वह सबसे बड़ा हिंसक जानवर है, यहां तक कि आपस में भी वह हिंसा का प्रयोग करता है। उसके दिल में हिंसा का भाव कूट कूट कर भरा है। उसने जत्थे बना रक्खे हैं, जिनके द्वारा उस दूसरे को काफ़ी दुःख या पीड़ा पहुँचा सके जिसे अकेले में वह नहीं पहुँचा सकता।

शायद जब आदमी भी जानवरों की तरह 'असभ्य' था और जंगलों में अकेला घूमता फिरता था तब प्रत्येक व्यक्ति ख़ाली पेट भरने को हिंसक हो जाता हो। किन्तु जब से वह समाज में रहता है तभी से समाज के बन्धनों में और अत्याचारों को उसने हिंसा समझना ही छोड़ रक्खा है और एक समाज का दूसरे समाज पर अत्याचार ही धर्म समझा जाने लगा है। उसी धर्म के नाम पर एक दूसरे को घृणा से देखा जाना, एक दूसरे को छुरी भोंकना, एक दूसरे को अछूत और चाण्डाल बनाना, एक दूसरे को भूखा मारना या फाँसी पर चढ़ाना उसके वास्ते अहिंसा ही हो गई है।

कुछ लोग कहते हैं कि दुष्ट को मारना या दबाना या नीचा दिखाना ज़रूरी है, जिससे वह अधिक लोगों को पीड़ा न पहुँचा सके। यह मानना ही अहिंसा की दीवार को ढहा देना है। दुष्ट के साथ दुष्टता करना अगर अहिंसा मान ली जाए तो फिर प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है कि जिसे चाहे दुष्ट क़रार देकर उसके साथ दुष्टता करे और उसके बदले में वह दूसरा उसके साथ वैसा ही बर्ताव करे, फिर इस चक्र का अन्त नहीं होगा। अगर अहिंसा धर्म है तो चाहे दूसरा कैसा ही व्यक्ति क्यों न हो, उसके साथ भी वही बर्त्तना चाहिए। परन्तु देखने में तो यही आया है कि अपने या अपने जत्थे के लाभ के वास्ते आदमी दूसरे जत्थे को हानि या पीड़ा

पहुँचाना हिंसा नहीं समझता, यहां तक कि महात्मा गांधी तक ने विदेशी कपड़ों के बेचनेवालों की दुकानों पर धरना देने का आदेश दिया था। क्या उससे उन लोगों को और उनके द्वारा विदेशी पूँजीपतियों को दुःख और पीड़ा नहीं पहुँची ?

Idioms and Proverbs.

'अन्धों में काना सरदार', यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि।

'अनेक रोगों में फंसा हुआ', अनेकव्याध्युपसृष्टः।

'अपनी झोंपड़ी भी महल है', प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्मभूमिः परा प्रिया।

'अपने हाथों अपने पाओं पर कुल्हाड़ा मारना', स्वहस्तेनांगाराकर्षणम्।

'आंसू फूट पड़े', सहसा प्रावर्तताश्रुधारा।

'अपमान से मौत भली', वरं मृत्युः न पुनरपमानः।

'आई को कौन हटाए', अपि धन्वन्तरिर्वैद्यः किं करोति गतायुषि।

'आपका क्या हाल है', कथं भवान् वर्तते ?

'आप क्या काम करते हैं ?' कां वृत्तिमुपजीवत्यार्यः ?

'ईश्वर उनकी सहायता करता है, जो अपनी आप सहायता करते हैं', विना पुरुषकारेण दैवमपि न सिध्यति।

'उसकी जान खतरे में थी', स महति जीवितसंशये अवर्तत।

'उसकी बेल मंढे चढ़ी', सर्वेऽस्य प्रयत्नाः सफलतां ययुः।

'उसका दिल मत तोड़ो', तस्योत्साहभंगं मा कृथाः !

'उसका दिल बैठा जाता है', सीदति तस्या हृदयम्।

'एक करेला दूसरे नीम चढ़ा', अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः।

'एक नकद दो उधार', अध्रुवाद् ध्रुवं वरम्, वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः।

'ऐसा सौदा हो गया', इति समयः कृतः।

'ऐसा सुनते हैं', इति कर्णपरम्परया श्रुतमस्माभिः।

'करुणा ने शका पर गलवा पालिया', करुणा आशंकामभ्यभवत्।

'कसूर सारा उसी का है', सर्वथा स एवात्र दोषभाक्।

'किसमत पर छोड़ दिया', दैवाधीनः कृतः।

'कहने से करना अच्छा है', शासनात् करणं श्रेयः, वाचः कर्मातिरिच्यते।

'किसी के सदा एक से दिन नहीं रहते', नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण, चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः।

'कुत्ते की पूँछ बीस बरस नलकी में रक्खो, जब निकली तो बाँकी', स्वभावो दुरतिक्रमः, सुतप्तमपि पानीयं शमयत्येव पावकम्।

'खाते खाते कुबेर का भी खजाना खाली हो जाता है', भक्ष्यमाणो निरुद्यः सुमेरुरपि हीयते।

'खुशी से फूले न समाना', आनन्देन विगतचेतन इव भू।

'गुण की शोभा विनय है', गुणा विनयेन शोभन्ते।

'गुणों की सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है', पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते।

'गुस्से में दांत पीस कर', रोषात् दन्तैर्दन्तान्निष्पिष्य।

'जाता देखे जब सारे को आधा दीजे बाँट', सर्वनाशे समुत्पन्नेऽर्धं त्यजति पण्डितः।

'जितना गुड़ डालोगे, उतना मीठा होगा', अधिकस्याधिकं फलम्।

'जितने मुँह उतनी बातें', नवा वाणी मुखे मुखे।

'जिसकी लाठी उसकी भैंस', अश्वा यस्य जयस्तस्य ।

जुवे की हार जीत दोनों बुरी', उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्।

'जैसा राजा वैसी प्रजा', प्रभुचित्तमेव हि जनोऽनुवर्तते।

'चना चटखेगा तो क्या भाड़ को फोड़ देगा', नहि तापयितुं शक्यं सागराम्भस्तृणोल्कया।

'चार दिन की चाँदनी', कतिपयदिवसस्थायिनी यौवनश्रीः ।

'चांद पर थूका मुँह में ही पड़ता है', पङ्को हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्धनि ।

'जान जोखों में डालकर', प्राणव्ययेनापि ।

'ज्यादा खाना ज्यादा बोलना सदा हानिकारक है', अतिभुक्तिरतीवोक्तिः सद्यः प्राणापहारिणी ।

ज़िद्दी बुराई की परवाह नहीं करता', न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते ।

'थोथा चना बाजे घना', अल्पविद्यो महागर्वी ।

'दिल में घर कर गया', तस्य हृदयमर्मास्पृशत् ।

'दिन दिन कमजोर होते जाते हो', अनुदिवसं प्रतिहीयसेऽङ्गैः ।

'दुनिया के धंदे सदा रहेंगे', अविश्रामो लोकतन्त्राधिकारः ।

दूसरों के काम में दखल देता है', अव्यापारेषु व्यापारं करोति ।

'दूध का जला छाछ को फूंक फूंक पीता है', पाणौ पयसा दग्धे तक्रं फूत्कृत्य पिबति पामरः ।

'धन आफत का घर है', सम्पदः पदमापदाम् ।

'फलदार वृक्ष ही सदा झुकते हैं', भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः ।

'बीमार की हालत नाजुक है', आतुरो जीवितसंशये वर्तते ।

'बुरे का सिर पैरों तले', शाम्येत प्रत्युपकारेण नोपकारेण दुर्जनः ।

'बहुत से गुणों में एक दोष छुप जाता है', एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जति ।

'बूंद बूंद घट भर जाय', जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।

'मन के लड्डू फीके क्यों', मनोरथानामगतिर्न विद्यते ।

'मनुष्य अपने भाग्य को आप बनाता है', लोके गुरुत्वं विपरीततां वा स्वचेष्टतान्येव नरं नयन्ति ।

'मित्रों की कसौटी मुसीबत है', मित्राणां तत्त्वनिकषग्रावा विपत् ।

'मित्र वह है जो मुसीबत में काम आए', स सुहृद् व्यसने यः स्यात् ।

'मूर्खों में चुप रहना भला है', दर्दुरा यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभनम् ।

'मूसलाधार वारिश हुई', **धारासारैर्महती वृष्टिर्बभूव ।**

'मेरी कमजोरी का लाभ उठाकर', **मम छिद्रेण लब्धावकाशः ।**

'मेरी नमस्ते कहिए', **मदीयो नमस्कारो वाच्यः ।**

'मेरी बात काटकर', **मद्वचनमाक्षिप्य ।**

'मैं आज कुछ अच्छा हूं', **अस्ति मे विशेषोऽद्य ।**

'मौके के मुताविक', **प्रस्तावसदृशम्, कालोचितम् ।**

'यहाँ अपने घर की तरह रहिए', **स्वगृहनिर्विशेषमत्र वस ।**

'राई को पहाड़ बनाना', **तिले तालं दृश्** 1P.; **अणुं पर्वतीकृ** 8U.

'मेरी प्रार्थना को पीछे न डालिए', **नार्हसि मे प्रणयं विहन्तुम् ।**

'रास्ता भूल गया', **मार्गाद् भ्रष्टः ।**

'शिकार के समय कुतिया हगाना ठीक नहीं', **न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।**

'सिर दर्द का बहाना करके', **शिरःशूलस्पर्शनमपदिशन् ।**

'सीख न दीजे बांदरा जो बैये का घर जाय', **उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।**

'हवा में किले बनाना', **गगन-कुसुमानि चि** 5U.; **मनोराज्यविजृम्भणं-कृ** 8U.

'होनहार बिरवे के चिकने चिकने पात', **आवेदयन्ति प्रत्यासन्नमानन्दमग्रजातानि शुभानि निमित्तानि, आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति ।**

— —

हिन्दी-संस्कृत कोश।

s.=substantive, adj.=edjective, adv.=adverb, v.t.=verb transitive, v.i.=verb intransitive, c.=causative, p.=parasmaipada, a.=atmanepada, u.=ubhayapada, m.=masculine, f.=faminine, n.=neuter, numerical figures denote conjugation of roots.

अ

अकड़ाना, v. t. स्तब्धी-कृ 8 U.
अंगूठा, s. अङ्गुष्ठः।
अचूक a अमोघ।
अचानक adv. सहसा।
अजनबी, s आगन्तुकः, वैदेशिकः।
अड़चन, s, विघ्नः, बाधा, अन्तरायः।
अडियल, a अवश्य, स्वैरिन्, दुर्दम।
अधमुआ, a मृतप्राय।
अधूरा, a अपूर्ण।
अनाड़ी, s अज्ञः, मूर्खः।
अपनाना v. t. स्वी-कृ, प्रति-ग्रह्।
अपील s पुनर्विचार-प्रार्थना,
० v. i. पुनर्विचारं प्रार्थ्, प्रमाणी-कृ।
अपनी ओर मिलाना, v. स्वपक्षे ग्रह् c.
अपने आप को पण्डित मानना, v. स्वयं पण्डित मन् 4 A.
अरण्ड, s. एरण्डः।
अबेर, s. विलम्ब—० करना, v.t. विलम्ब् 1 A; चिर् 10 P.
आंधी, s. वात्या f, जवानिलः।

आ

आंसू s अश्रु n.
आंख s अक्षि n.
आज्ञा से बाहर जाना, v. t. आज्ञां उद्-लंघ् 1 A 10.
आम, s. आम्रं, आम्रफलम्।
आराम करना, v. i. वि+श्रम् 4 P.
आलसी, a. मन्द, अलस।
आहिस्ता आहिस्ता, adv. मन्दं मन्दम्।

उ

उखाड़ कर लगाया हुआ, a. उत्खात-प्रतिरोपित ।

उगाहना, v. t. आ-दा ।

उतारना, v. t. अव-तृ-रुह् c.

उधार, s. ऋणम् ।

उडनखटोला, s. वायुयानम् ।

उपाय सोचना, v. i. उपायं चिन्त् ।

उलटा, s. विपर्ययः, वैपरीत्यं; —a. विपरीत, विरुद्ध; —adv. विपर्ययेण ।

उलाहना, s. उपालम्भः ।

क

कंजूस, a. कृपणः ।

कड़ुवा, a. कटु ।

कमान, s. चापः, धनुः ।

कपड़ा, s. वस्त्रम् n.

करोड़पति, s. कोटीश्वरः, लक्षाधीशः ।

कलेजा, s. यकृत् n, हृदयं, हृद् n.

काटना, v. t. छिद् 1P.

कान, s. कर्णः m.

कान लगाकर सुनना, v. t. कर्णं दत्त्वा श्रु 5 P,-अवधा 3 U.

काम करना, v. t. सेव् 1 A; श्रु desi.; विनि-युज् 7 U.

कांपना, v. i. प्र-वेप् 1 A, कम्प् 1 A.

किनारा, s. धारा, कोटि f. सीमा, अंचलः, तीरं, तटं ।

किला, s. दुर्गं, कोटः ।

किसान, s. कृषकः ।

कीच, s. पङ्कः, कर्दमः ।

कीमत, s. मूल्यम् ।

कुबड़ी, s. कुब्जा ।

कुल्हाड़ा, s. परशुः ।

कूदना, s. प्लवः, उत्पतनं;—v. i. उत्प्लु, उत्पत् 1 P.

कैद, s. बन्धनं, अवरोधः; -होना, v. i. कारारुद्ध a भू 1 P.

—करना, v. t. कारावासं दण्ड् 10 P. कारागृहे पत् c.

कैसे, adv. कथम् ।

कोड़ा, s. कशा f.

कोयल, s. पिकः ।

कोस, s. क्रोशः

ख

खटमल, s. मत्कुणः m.

खबर, s. समाचारः, प्रवृत्तिः ।

खरगोश, s. शशकः ।

खरीदना, v. t. क्री 9 U.

खांसी, s. कासः, क्षवथुः ।

खांसना, v. i. कास् 1 A. क्षु 2 P.

खाट, s. खट्वा, मंचः ।

खिलौना, s. क्रीडनकः ।

खुलंखुला, adv. प्रकाशं, व्यक्तम् ।

खुश करना, v. t. प्र-मुद् c. आ-राध् c.

खुशामद, s. चाटूक्ति f, अनुनयः;—करना, v. i. उप लल्, उप-छन्द 10 P.

खेत, s. क्षेत्रम्।

खेती, s, शस्यं;—करना v. i. कृषिं कृ 8 U.

खोदना, v.t. खन् 1 P.

ग

गंठकतरा, s. ग्रन्थिच्छेदकः, चौरः।

गंवार, adj ग्रामीण।

गंजा, a. विकेश, मुंड।

गडरया, s. अविपालः, मेषपालः।

गड़गड़ाना, v. i. गर्ज् 1 P.

गड़गड़ाहट, s. मेघगर्जनम्।

ग़दर, s. राजाभिद्रोहः, प्रकृतिकोपः।

गद्दर, a. पाकोन्मुखः।

गधा, s. रासभः, गर्दभः।

गरदन, s. ग्रीवा f.।

गवाह, s. साक्षिन् m.

गाजार, s. गृंजनम् m.

गाड़ीवान, s. सारथिः।

गहरा, a. गभीर।

गाना, s. गानं, गीतिः f.;—v. i. गै (गाय्) 1 P.

गाली, s. अपशब्दः, कटुवाक्यं, —देना v. i. अपशब्दान् प्रयुज्, अप-भाष् 1 A., अधि-क्षिप् 6 P. भर्त्स 10 A.

गुणों को पहचानना, v. t. गुणान् ज्ञा 9 U.

गुफा, s. गुहा, गह्वरं।

गेहूँ, s. गोधूमः।

गेंद, s. कंदुकः।

घ

घटना, v. i. परि-क्षि 1 P. ह्रस् 1P.—s. क्षयः; ह्रासः।

घड़ा, s. घटः।

घबराना, v. i. क्षुभ् 4 P. व्याकुलीभू 1 P.

घबराहट, s. मोहः, व्याकुलत्वम्।

घास, s. घासः, शस्यम्।

घुटना, s. जानुः m.

घूस, s. उत्कोचः।

घूंस देना, v. t. उत्कोचं दा 3 U.

घूंस लेना, v. t. उत्कोचं ग्रह् 9U.

घोंसला, s. नीडः, पक्षिवासः।

च

चटनी, s. व्यंजनम्।

चटाई, s. कटः।

चढ़ाई, s. आक्रमणम्;—करना, v.i. आ-क्रम् 1 A.

चढ़ावा, s. उपहारः, बलिः, दानम्।

चपड़ासी, s. भृत्यः, प्रतिहारः।

चपेड़, s. चपेटः

चरखा, s. तन्तुकरण-यन्त्रम् ।
चरखा कातना, v. t. (तन्तून्) तन्, कृ 8. U.
चरखा कातने वाली s. सूत्रकर्तिका ।
चांदी, s. रजतम् ।
चाँदनी, s. चन्द्रिका, कौमुदी f.
चारपाई, s. खट्वा f., पर्य्यंकः ।
चितकबरा, adj. कर्बुर ।
चीख, s. चीत्कारः ।
चोंच s. चञ्चू f.

छ

छलांग लगाना, v. i. उत् पत् 1 P., स्कंद् 1 P.
छाता, s. आतपत्रम् ।
छाया, s. प्रतिबिम्बम् ।
छावनी, s. शिबरम् ।
छाछ, s. दधिमंडं, मस्तु n.
छिड़काव, s. सिंचनम् ।
छुट्टी, s. अनध्यायः, अनध्यायदिवसः; अनुज्ञा ; अवकाशः ।
छुपाना, v. i. गुह् 1 U., अप-वृ 8 U. पि-धा 3 U.

ज

जत्था, s. गणः, संघः, समुदायः ।
जबरदस्ती, adv. बलात् ।
जलूस्, s. यात्रा, जनयात्रा ।
जवान होना, v.i. यौवनपदवीम् आ-रुह्, यौवन-दशाम् आपद् ।
ज़हर, s. विषः-षम् ।
जहाज़, s. पोतः, नौ ।
जागना, v.i. जागृ 2 P. प्र-बुध् 4A.
जाल, s. जालम्, पाशः ।
जासूस, s. चारः, चरः, प्रणिधिः ।
जुलाहा, s. तन्तुवायः ।
जूता, s. उपानह् f.
जिसने-धर्म-के-भावों-को-देख-लिया-है, a. दृष्टधर्मप्रचार ।
जेल, s. कारागारः, वन्दी-गृहम् ।
जैसा करोगे वैसा भरोगे, यो यद्वपति हि सोपि तल्लभते फलम् ।

झ

झंडा, s. ध्वजः, ध्वजा ।
झगड़ा, s. विवादः, कलहः ।
झड़ी, s. वर्षा ।
झरना, s निर्झरः ।
झाग, s. फेनः ।
झाड़ना, v. t. मृज् 2 P.
झिड़कना, v. t. निर्-भर्त्स् 10 A. गर्ह् 1,10 A.
झूला, s. दोला f.

ट

टकसाल, s. टंकशाला ।
टकोर s. प्रस्वेदनं, उत्तेजनम् ।
टकोर करना, v. t. स्विद् c. लिप् 6 P.
टलना, v. i. प्र-वि-चल् ; अति-वृत् 1 A.
टालना, v. t. वि-लम्ब c., व्यपदेशं कृ 8 U.
टूटना, v. i. त्रुट् 4 P. वि-भज Pass.

ठ

ठोस, adj. घन, स्थूल ।

डगमगाना, v. i. कम्प् 1 A.
डरना, v. i. भी 3 P., उद्-विज् 6 A, सं-त्रस् 1 P.
डरपोक adj. भीरु।
डाल देना, v. t. प्र-मुच् 6 P., वि-सृज् 6 P.
डूबना, v. i. नि-मस्ज् 6 P. अव-गाह् 1 A.
डण्डा, s. दण्डः, यष्टिः f.

ढ

ढांक (प) ना, v. t. आ-च्छद् 10. U आ-वृ 8 U. पि-धा 3. U.
ढूंढ़ना, v. i.—अन्विष् 4 P., अनु-सं-धा 3 P.

त

तकिया, s. उपधानम्।
तकिया लगाना, v. t. उप-धा, उपधानी-कृ।
तखान, s. तक्षन् m.
तड़पना, v. t. व्याकुली-भू।
तनखाह, s. वेतनम्।
तालाब, s. तडागः।
तोड़ना, v. t. अव-चि 5 P.
तो, adv. तदा ;—भी adv. तथापि।
त्योहार, s. उत्सवः।

थ

थकना, v. i. श्रम् 4 P.
थोड़ा, a. अल्प, न्यून ;—बहुत, adv. किञ्चित्, किमपि।
थोथा, adj. रिक्त, शून्यगर्भ।
थम्भ, s. स्तंभः।

द

दंगई, adj. दुष्ट, पाप।
दरजी, s. सौत्रिकः।
दलाल, s. निरूपितमूल्येन कार्य-निर्वाहकः।
दलाली, s. कार्यनिर्वाहनार्थं दत्तं द्रव्यम्।
दवाई, s. औषधी f.
दस्तकारी, s. शिल्पम् n.
दावात, s. मसीपात्रम्।
दाहिना, a. दक्षिण, सव्य।
दिखलाना, v. t. दृश् c. अव-लोक् c.
दिलाना, v. t. दा c.
दुःख पाना, v. t. दुःखं अनु-भू 1 P.
दुहना, v. t. दुह् 2 P.
देर, s. विलम्बः,—adv. चिरं, चिरेण, चिरात् ;—करना वि-लम्ब् 10 P.
दौलत पैदा करना, v.t. श्रीं उत्पद् c.

ध

धंधा, s. कार्य, व्यवसायः, व्यवहारः, व्यापारः।
धड़ा, s. पक्षः।
धड़ाबंदी, s. पक्ष-पातः।
धब्बा, s कलंकः, दोषः।
धरोहर, s. न्यासः, निक्षेपः,—रखना v. t. नि-अस् 4 P. नि-क्षिप् 6 P.

धर्म के नाश करने वाला धन, धर्मस्य विनाशिनी श्रीः ।

धूल, s. धूलि f, रजस् n.

धोका, s कपटं, छलं;—देना, करना v. t. वञ्च् 10 A.

धोना, v. t. प्र-क्षल् 10, प्र-मृज् 2 P.

धोबी, s. रजकः ।

न

नमक, s. लवणम् ।

नाच, s. नृत्यम् ।

नायन, s. नापिता, नापितस्त्री f.

निन्दा करना, v. t. निन्द् 1 P., उपा-लभ् 1 A. गर्ह् 1,10 A.

नियत करना (कार्ये), v. t. नि-युज् 7. U.

नुक़सान उठाना, v.t. हानिं सह् 1 A.

नेवला, s. नकुलः ।

नौकर, s. किंकरः ।

प

पंखा, s. व्यजनम् ।

पकड़ना, v. t. धृ 1.P., ग्रह्. 9 P.

पछताना, v. i. अनु-शुच् 1 P. अनु-तप् 4 P. पश्चात्ताप कृ 8 U.

पड़ोसी, s. प्रतिवेशिन् m.

पनीर, s. दधिजं, मथजम् ।

पढ़ाना, v. t. पठ् c., अधि-इ c.

पहचानना, v. t. अभि-ज्ञा 9 U. सं-विद् 2 A.

पहचाना जाना, v., c. of पहचानना ।

पहनना, v. t. परि-धा 3 P., धृ 10 P.

पहराना, v. t., c. of पहनना ।

पहलवान, s. मल्लः ।

पहलासा, adv. पूर्ववत् ।

परे हटना, v. i. प्र-वि-चल् 1 P.

पाना, v. t. अधि-गम् 1 P., प्र-आप् 5 P. लभ् 1 P.

पानी में चन्द्रमा के समान चपल, a. सलिलचन्द्रचपल ।

पाहुना, s. अतिथिः, आगन्तुकः ।

पालना, v. t. सं-वृध् c , परि-पा c.

पीपल, s. अश्वत्थः, पिप्पलः ।

पुकारना, v. t. ह्वे 1 P. आ-क्रुश् 1 P.

पुल, s. सेतुः m.

पेट, s. उदरम् ।

पैदल, s. पदातयः, पदातिबलं ।

पोंछना, v. t. प्र-मृज् 2 P. प्र-क्षल् 10 U.

प्याज़, s. पलांडु m.

प्यास, s. पिपासा f.

फ

फंसना, v. t. नि-मस्ज् 6 P.

फंसना (विषयों में), v. i. आ-सञ्ज् 4 P.

फंसना, v. t. पाशे पत् 1 P. पाशेन बन्ध् pass.

फुलवाड़ी, s. उपवनम्, कुसुमोद्यानम् ।

फेंकना, v. t. प्र-क्षिप् 6 P. अस् 4 P.

फेल, a. अनुत्तीर्ण, अकृतार्थ ।
फैलना, v. i. वि-स्तृ, वि-तन् pass.
फैलाना, v. t. वि-तन् 8 U.

ब

बंजर, s. खिलभूमि f, मरुभूमिः ।
बकरी, s. अजा f.
बगला, s. बकः ।
बच्चा, s. वत्सः, शिशुः ।
बछड़ा, s. वत्सः ।
बटेर, s. लावः ।
बढ़ना, v. i, वृध् 1 A. उप-चि pass. वृद्धिं प्राप् 5 P.
बदलनेवाला, a. अनित्य, नैक-भावाश्रय ।
बनवाना, v. t. निर्-मा c., प्र-क्लृप् c
बनिया, s. वनिक् m.
बढ़कर होना, v. t. अति-रिच् pass., अति-शी 2 A.
बढ़ना, v. i. उपचि pass. वृद्धिं या-इ 2 P.
बरफ, s. तुषारः, हिमम् ।
बहकाना, v. t. भ्रान्तिम् उत्-पद् c. मुह् c., वञ्च् 10 P.
बहलाना, v. t. वि-नुद् c. रम् c. नन्द् c.
बहाना, s. छलम्, अपदेशः, व्यपदेशः
बांस, s. वेणुः m.
बाज़, s. श्येनः ।
बाज़ार, s. आपणः-णं, हट्टः ।
बादल, s. जलदः, मेघः ।
बारी, s. वारः, क्रमः ।
बाल, s. कचः, कुन्तलः ।
बिगड़ना, v. t. दुष् c., मलिनी-कृ 8 U.
(बिजली) चमकना, v. i. वि-लस् 1 P. स्फुर् 6 P.
बिच्छू, s. वृश्चिकः ।
बिठाना, v. t. आसनं-ग्रह् c; प्रतिष्ठा c., नि-विश् c.
बिताना, v. t. व्यति-इ P. अति-वह् c.
बिना सोचे, adv. सहसा ।
बिलाप करना, v. i. वि-लप् 1 P., आक्रन्द् 1 P.
बीमारी, s. व्याधिः, रोगः ।
बींधना, v. t. विध् 4 P. छिद् 10 P.
बुला भेजना, v. t. आह्वे 1 P. आ-गम् c.
बेचना, v. t. वि-क्री 9 P.
बेर, s. बदरीफलम्, कर्कन्धुः ।
बोझ लादना, v. t. भारं आ-रुह् c.

भगादेना, v. t. पलाय c क्रम् c.
भजन करना, v. t. भज् 1 U. आ-राध् c. उपास् 2 A.
भात, s. ओदनम् ।
भिखारी, s. भिक्षुकः ।

भीख, s. भिक्षा ।
भीगना, v. i. क्लिद् 4 P.
भूलना, v. t. भ्रम् 1, 4 P. मुह्., प्र-मद् 4 P.
भेजना, v. t. सं-प्रेष् c. वि-सृज् 6 P.
भेड़, s. अविः ।
भेड़िया, s. वृकः ।
भोर, s. प्रातःकालम् ।

म

मक्खन, s. नवनीतम् ।
मच्छर, s. मशकः ।
मछली, s. मत्स्यः ।
मजबूर करना, v. t. बलात् कृ c. प्रेर c.
मरनेवाला, a. मुमूर्षु ।
महीना, s. मासः ।
मायका, s. मातृग्रहः ।
मिटाना, v. t. सं-हृ 1 P. नश् c.
मिलना, v. t. सं-गम् 1 A.
मिलने जाना, v. t. दर्शनाय गम् 1 P.
मुक़ाबिला, s. सामुख्यं, विपर्यासः ।
मुरझाना, v. i. ग्लै, म्लै, 1 P.
मुशकिल, a. कठिन, दुःसाध्य, दुष्कार्य ।
मेहनत, s. परिश्रमः ।
मोची, s. चर्मकारः ।
मोती, s. मौक्तिकम् ।
मोरः, s. मयूरः ।

य

यतीम, s. अनाथः ।
याद करना, v. t. स्मृ 1 P. निरन्तरम् अभ्यस् 4 P. v.i. अनु-बुध् 4 A. अनु-स्मृ 1 P
युवराज बनाना, v. t. (राज्ये) अभिषिच् 6 U.

र

रखना, v. t. नि-आ-धा 3 U.
रसोइया, s. सूदः ।
रस्सी, s. रज्जुः ।
रीछ, s. ऋक्षः ।
रोकना, v. i. अव-रुध् c. नि-वृ c.
रंग, s. वर्णः, रागः ।
रंगरूप, s. आकारः, आकृतिः f.
रंगढंग s. रीतिः f, दशा f.
रंगबरंग, a. विविध, विचित्र ।

ल

लखपति, s. लक्षपतिः m. लक्षाधीशः ।
लंगड़ा, adj. खञ्ज ।
लगातार, adv. सततं, निरन्तरम् ।
लहर, s. ऊर्मिः f.
लाचार होना, v. i. निरुत्तर a. भू 1 U.
लाज, s. लज्जा f.
लिपटना, v. t. आ-सं-सज् 1 P, सं-लग् 1 P. श्लिष् 4 P.
लिए, adv. अर्थम्, अर्थे in comp.
लुभाना, v. t. वि-प्र लुभ् c.
लोथ, s. शवः ।

व

वापिस करना, v. t. प्रति-दा 3 U. प्रति-ऋ c.

श

शक्कर, s. शर्करा f.
शरम आना, v. i. लज्ज् I A.
शर्त, s. समयः, संकेतः, प्रतिज्ञा ।
शरारत, s. दुष्टता, दुराचारता ।
शिकार खेलना, v. t. मृगयां कृ 8 U.
शिकारी, s. व्याधः ।
शीशा, s. दर्पणम् ।
शेखी मारना v. i. वि-कत्थ् 1 A. दृप 4 P.
शोर, s. निनादः, शब्दः ।
शौक़, s. कामः, अभिरुचिः f, आसक्तिः f.

स

सगाई, s. वाग्दानम्,-करना, v. t. (वाचा) दा, पति-श्रु 5 P.
सजाना, v. t. मण्ड् 10 P. अलं-कृ 8 U.
सड़क, s. राजमार्गः, रथ्या f.
सताना, v. t. पीड् 10 P. सं-तप् c, बाध् 1 A.
सपना, s. स्वप्नम् ।
सबका हित चाहनेवाला, a. सर्व-हितैषिन् ।
समझाना, v.t. अव-गम् 1 P. ज्ञा 9 U.
सलाह करना, v i. मन्त्र् 10 U.
सवार, s. अश्वारोहाः, तुरगबलम् ।
सस्ता, adj. अल्पमूल्य । adv. सुलभम् ।
सहज ही में, adv. लीलया ।
सहना, v. t. सह्, क्षम् I A.
सहारा लेना v. i. अव-लम्ब् I A.
संवारना, v. t. सं वि-धा 3 P.
सिधाना (घोड़े आदि), v. t. वि-नी 1 P.
सिरदर्द, s. शिरोवेदना f.
सींचना, v. t. सिच् 6 P.
सीखना. v. t. शिक्ष् I A. पठ् 1 P. अधि-इ 2 P.
सीधे रास्ते पर आना, v. i सदाचारिन् भू 1 P. सं-शुध् Pass.
सीना, v. i. सिव् I P.
सुध न होना, v. i. विगतचेतन a. or लुप्तसंज्ञ a. भू I P.
सुनाना, v. t. श्रु c.
सुहावना, a. रम्य, सुन्दर, रमणीय ।
सूई, s. सूचि f.
सेवा करना, v. t. सेव् I A. उप चर् 1 P.
सैर को जाना, v. i. वायुसेवनाय गम् I P.
सोचना, v. t. चिन्त् 10 P.
सौंपना, v. t ऋ c., न्यस् 4 P. नि-क्षिप् 6 P. न्यासी-कृ 8 U.

ह

हटना v i. अप-सृ 1 P. प्र-वि-चल् 1 P.

हरा, a. हरित ।

हलदी, s. हरिद्रा f.

हस्ताक्षेप करना, v. t. अव्यापारेषु व्यापारं कृ 8. U.

हार देना (जूवे में) v. t. द्यूते नश् c.

होश आना, v. i. संज्ञा, चेतनां-लभ् 1 A. प्रकृतिम् आ-पद् 1 P.

Sanskrit Synonyms of Common Hindi or English words.

Names of Fruits & Trees.

हिन्दी	अंग्रेजी	संस्कृत
अंगूर	Grape	द्राक्षा, द्राक्षा-फलम्
अनार	Pomegranate	दाडिमम्, दाडिमः (tree).
अखरोट	Walnut	अक्षोटम्, अक्षोटः (tree)
आम	Mango.	आम्रम्, आम्रः (tree)
आलूचा	Plum.	कर्कन्धू-फलम्, कर्कन्धूः (tree)
अंजीर	Fig	अंजीरम्, उदंबरम्, अंजीरः, उदंबर (tree)
केला	Banana.	कदली-फलम्, कदलिः (tree)
खजूर	Date.	खर्जूरम्, खर्जूरः-री (tree)
खरबूज़ा (तरबूज़)	Melon.	तरंबुजम्, स्फुटिफलम्
किशमिश मुनक्का	Raisin.	शुष्कद्राक्षा
ज़ैतून	Olive.	जितवृक्षः
जामन	Jambu.	जम्बु
नारियल	Cocoanut.	नारिकेल-फलम्, नारिकेलः(tree)
बादाम	Almond.	बातामफलम्
बेर	Berry.	गुली, गुटिका
शहतूत	Mulberry.	तूदम्, तूद-फलं, तूदः (tree)
सेब	Apple.	आताफलम्, आता-वृक्षः (tree)

संगतरा	Orange.	नारंग-फलम्, नारंगः (tree)
लीमूं	Lemon.	जंबीरम, जंबीरः (tree)

Vegetables.

आलू	Potato.	गोलालुः
कद्दू	Pumpkin.	कूष्मांडः
खीरा या ककड़ी	Cucumber.	कर्कटी
गाजर	Carrot.	गृञ्जनम्
गोभी, बंद	Cabbage.	शाकं, हरितकम्
मूली	Radish.	मूलकः, मूलकम्
मटर	Peas.	कलाथः, रेणुकः
शलगम	Turnip.	शिखामूलम्

Condiments. उपदंशाः

अदरक या सोंठ	Ginger.	आद्रकं, शुंठी
इमली	Tamarind.	अम्लिका, चिंचा
इलायची	Cardamom.	एला
कालीमिर्च	Pepper.	मरीचं, कालकम्
जायफल	Nutmeg	जातिफलम्
ज़ीरा	Cumin.	जीरकः
	Black-cumim.	कारवी, काला
दारचीनी	Cinnamon.	दारुसिता, सगंधित्वच् f.
धनिया	Coriander.	धानी, धानेयः
पयाज़	Onion.	पलांडुः
लसन	Garlic.	लशुनम्
लालमिर्च	Chilly.	रक्तमरीचम्
लौंग	Clove.	लवंगम्, लवंग-वृक्षः
सिरका	Vinegar.	शुक्तं, शौक्तिकम्
सुपारी	Betelnut.	पूगं, तांबूलम्
	(tree)	तांबूली, पुन्नागवल्ली

Kitchen पाकशाला (महानसम्)

चूल्हा	Fireplace, hearth.	चुल्लि-ल्ली
चिमटा	Pair of tongs.	कंकमुखम्
चटनी	Sauce.	सूप:
अचार	Pickle.	संधितं, संधितद्रव्यम्
आटा	Flour.	गोधूमचूर्णं; पिष्टम
कड़छी	Spoon, ladle.	दर्वि-र्वी
गूंधना	Knead.	मृद् ; पीड् ; मर्दनं, पीडनम्
देगची	Kettle.	स्थाली ; कुण्डम्
गूंधा हुआ आटा	Dough.	गुंडिका
तनूर	Oven.	कंदु m. f. चुल्लि-ल्ली
बेलना	Rolling pin.	वेल्लनं-नी

Birds,

अक़ाब	Eagle.	श्येन:
उल्लू	Owl.	उलूक: ; कौशिक:
कौआ	Crow.	काक: ; वायस:
कबूतर	Pigeon.	कपोत:
कोयल	Cuckoo.	कोकिल: ; परभृत:
गिद्ध	Vulture.	गृध्र:
चील	Kite.	चिल्ल:-ल्ला
चिड़िया	Sparrow.	चटक:-का
नीलकंठ	Roller or Bluejay.	गरुत्मत् m.
तोता	Parrot.	शुक:
तीतर	Partridge.	तित्तिर: ; चकोर:
मोर	Peacock.	मयूर: ; शिखण्डिन्
पपीहा	Cuckoo.	चातक:
हंस	Swan.	हंस:

Animals.

ऊँट	Camel.	उष्ट्रः
कुत्ता	Dog.	श्वन् ; कुक्कुरः
खरगोश	Hare.	शशकः
गाय	Cow	गो ; धेनु
गधा	Ass, Donkey.	गर्दभः ; खरः
गीदड़	Jackal.	शृगालः
गिलहरी	Squirrel.	चमरपुच्छः, वृक्षशायिका
गैंडा	Rhinoceros.	गंडः
घोड़ा	Horse.	अश्वः ; वाजिन् m.
घोड़ा (दरयाई)	Hippopotamus.	करियादस् n.
चीता	Leopard.	चित्रकः
चूहा	Rat, Mouse.	मूषकः
छपकली	Lizard.	सरटः ; प्रतिसूर्यकः
रीछ	Bear.	ऋक्षः ; भल्लूकः
लंगूर	Baboon.	वानरः, कपिः
लगड़बगड़	Hyena.	तरक्षुः-क्षः
बनमानुष	Ape.	वानरः, कपिः
बछड़ा	Colt.	वत्सः
बारासिंगा	Antelope.	कृष्णसारः ; मृगः
बिल्ली	Cat.	मार्जारः, बिडालः
बैल	Ox, Bullock.	वृषभः, अनडुह् m.
भेड़िया	Wolf.	वृकः
भैंस	Buffalo.	महिषी
न्योला	Mungoose.	नकुलः
लोमड़ी	Fox.	शृगालः
शेर बबर	Lion.	सिंहः ; मृगराजः

शेर का बच्चा	Cub.	कलभः ; सिंहशावः
सांड	Bull.	वृषभः ; उक्षन् m.
सांडनी	Dromedary.	क्रमेलः, एककुकद् m.
सेह	Porcupine.	शल्यः, श्वाविध् m.
हिरन	Deer.	हरिणः, मृगः
हाथी	Elephant.	हस्तिन्, गजः

Tools.

कमान	Bow.	धनुस् n. चापः-पम्
कस्सी, कही	Spade.	खनित्रम्
करनी कांडी	Trowel.	कर्णी
खड्डी	Loom.	वेमन् m. वेमः
खंजर	Dagger.	कृपाणः, छुरिका
खुरपा	Hoe.	खनित्रम्
कोल्हु	Oilsmill.	तैलपेषणी
गोला	Shell.	कोशः-पः
गोली	Shot.	गुलिका
चरखा	Spinning wheel.	वापयन्त्रम्
चक्की	Millstone.	पेषणी, पेषणचक्रम्
चाकू	Knife.	छुरिका, कृपाणिका
छैनी	Chisel.	तक्षणी, टंकः
ढाल	Shield.	चर्मन् n. , फलकः-कम्
तलवार	Sword.	असिः, खड्गः, कृपाणः
तलवार का मयान	Scabbard.	कोशः-षः, आधारः
तरकश	Quiver.	निषंगः, तूणीरः
तेसा, बसोला	Adze.	टंकः, तक्षणी
तोप	Cannon.	गुलिप्रक्षेपणी, लोहनाडी
तोप का गोला	Cannon-ball.	रणगुलि, आग्नेयास्त्रम्
नाल	Shuttle.	मल्लिकः, सूत्रवेष्टनम्

बरछी	Spear.	शूलः-लं, शल्यम्
तकली	Spindle.	तर्कु, तर्कुटी
तीर	Arrow.	शरः, बाणः
बंदूक	Gun.	लोहसुषि, गुलिकाप्रक्षेपिणी
धौंकनी	Bellows.	भस्त्रा-ी, दृति f.
सान	Whetstone.	शाणः-णी
संगीन	Bayonet.	निस्त्रिंशः, छुरिका
दरांती	Scythe.	दात्रं, लवित्रम्
हथौड़ा	Hammer.	मुद्गरः, घनः

Parts of the Body.

पेट	Abdomen.	उदरम्
नाफ	Navel.	नाभि-भी
आंख	Eye.	नेत्रं, नयनम्, अक्षि n.
आंख की पुतली	Pupil of the eye.	तारा, कनीनिका
आंख का कोना	Corner of the eye.	अपांगः-गम्
अंतड़ियां	Intestines.	अंत्रं, नाड़ी
कलाई	Wrist.	मणिबंधः, प्रकोष्ठः
कनपटी	Temple.	कपोलः
गला	Throat.	कण्ठः, गलः
गर्दन	Neck.	कण्ठः, ग्रीवा
चोटी	plait.	वेणि-णी
चूतड़	Buttocks.	नितम्बः, श्रोणि-णी
छाती	Chest.	वक्षस् n. उरस् n.
जबड़ा	Jaw.	हनु m. f.
जिगर	Liver.	यकृत् n.
ठोड़ी	Chin.	चिबुकं, हनु m. f.
तिल्ली	Spleen.	प्लीहन् m., गुल्मः

तला (पाओं)	Sole.	पादतलम्
नब्ज़	Pulse.	नाडि-डी
नाक	Nose.	नासिका
पसली	Rib.	पर्शुका, पार्श्वकम्
बगल, कांछ	Armpit.	कक्षा, भुजकोटरः
भौं	Eyebrow.	भ्रूः, भ्रूलता
मसूढ़ा	Gum.	दंतमांसं-मूलम्
मस्सा	Mole.	तिलकः, जडुलः
रीढ़ की हड्डी	Spine.	पृष्ठास्थि n. कशेरु m. n.
रगें	Veins.	नाडि-डी, धमनी
सिर	Head.	शिरस् n. मूर्धन् m.
सिर के बाल	Hair.	केशः, बालः, शिरोरुहः
हाथ	Hand.	करः, हस्तः, पाणिः
हथेली	Palm.	करतलः

Diseases.

आंख का आना	Sore eyes.	सरुजनेत्रम् n.
काफूर	Camphor.	कर्पूरः-रं, घनसारः
क़ै	Vomit.	[illegible] n. उद्वमनम्
क़ब्ज़	Constipation.	मलावरोधः
(काली)खांसी	Whooping Cough	कासः, क्षवथुः
खाज	Itch.	कण्डु-डू f.
गरमी की बेहोशी	Sun-stroke	आतप-लंघन
गठिया	Gout.	वातरक्तम्
गोली	Pill.	वटिका, गुलिका
चेचक	Small-pox.	शीतला, मसूरिका
जरक़ान	Jaundice.	पांडुरोगः

जुलाब	Purgative.	विरेचनं-कम्
जुकाम	Bad cold.	शीतं, शैत्यं, प्रतिश्यायः
ज़याबतीस	Diabetes.	मधुमेहः, प्रमेहः
बांधने की पट्टी	Sling.	पट्टिका
दांत निकलना	Teething.	दंतोद्गमः, दंतोद्भेदः
दरद पेट	Colic pain.	उदरशूलम्, उदरव्यथा
दस्त, जुलाब	Motions.	रेचनं-ना
दमा	Asthma.	श्वासः, श्वासरोगः
दवाईखाना	Dispensary.	औषधशाला
दवाई की खुराक	Dose.	मात्रा
दांत का दरद	Tooth-ache.	दंतवेदना
दांत भरवाना	Stuffing.	दंतपूरणम्
दस्त आना	Diarrhea.	अतिसारः, प्रवाहिका
दिल बंद होना	Heart failure.	हृदयरोधः
नमोनिया	Pneumonia.	क्लोमपाकः, कर्कट-सन्निपातः
नबज़ देखना	Feel one's pulse.	नाडीपरीक्षा, v. नाडीं दृश् or परीक्ष्
पेचिश	Dysentry.	संग्रहणी, अतिसारः
पीप	Pus.	पूयः-यं
पेशाब	Urine.	मूत्रम्
फोड़े	Boils.	व्रणः-णं, पिटकः, स्फोटः
फुनसियां	Pimples.	पिटिका, स्फोटः
फटकड़ी	Alum.	स्फटी, तुवरी
बुखार-तेज़	High fever.	दाहज्वरः
बुखार-पुराना	Chronic fever.	कालिकज्वरः, जीर्णज्वरः
बुखार मौसमी	Malaria.	विषमज्वरः, दुर्वातः

बुखार मियादि	Typhoid fever.	मन्थरज्वरः
बुखार दिक़	Consumption	क्षयरोगः
बलगम	Phelgm.	कफः, श्लेष्मन् m.
बदहज़मी	Indigestion.	अजीर्णम्
बदन का जलना	Burningsensation.	दाहकवेदनं-ना
बवासीर	Piles.	अर्शस् n.
बीमार	Patient.	रुग्णः, रोगिन्
मरहम	Ointment.	विलेपः-पनम्
मोच	Sprain.	संध्यभिघातः
राल	Saliva.	लाला, सृणिका
शीशी	Phial.	लघुकूपी, काचकूपी
सिल	Pthisis.	रक्तपित्तः
सूजन	Inflammation.	तापनं, दाहनं, तापः
हैज़ा	Cholera.	विपूचिका

Jewellery.

अनन्त	Armlet.	केयूरः-रम्
कड़ा	Bracelet.	कंकणम्
कांसी	Bronze.	पित्तलं, आरकूटः-टम्
क्लिप-साडी	Brooch.	वक्षोभूषणम्
चूडी	Bangle,	वलयः-यं, कंकणम्
जडाऊ गहने	Ornaments studded.	रत्नखचितम् आभरणम्
जस्त	Zinc.	दस्ता
ज़मुर्रद	Emeralds.	मरकतम्
जवाहर	Gem.	रत्नं, मणि m. f.
नीलम	Sapphire.	इन्द्रनीलः, नीलोपलः

नथा	Nose ring.	नासाभरणम्
पन्ना	Emarald.	मरकतं, हरिन्मणिः
पाज़ेब	Anklet.	नूपुरः-रम्
पीतल	Brass.	पित्तलम्, आरकूटः-टम्
पारा	Mercury.	पारदः
पुखराज	Topaz.	पुष्परागः
पहुंची	Wristlet.	वलयः-यं, कंकणम्
बाली	Ear-ring.	कर्णावतंस
चंबुक	Magnet.	चुंबकः, अयस्कान्तः
मूंगा	Coral.	विद्रुमः, प्रवालः
मोती	Pearl.	मुक्ता, मौक्तिकम्
लाल	Ruby.	माणिक्यं, पद्मरागः
संधूर	Vermilion.	सिन्दूरम्
सीसा	Lead.	सीसम्
सफेद्कीमतीपत्थर	Opal.	विमलकः, पुलकः
हरा कीमतीपत्थर	Chrysolite.	चन्द्रकान्तः
हीरा	Diamond.	हीरं, हीरकः
हार	Necklace.	कण्ठहारः, कण्ठमाला
फिरोजा	Beryl.	

Games.

कुशती	Wrestling.	मल्लयुद्धम्
चौसर	Gammon.	शारिक्रीडा
लट्टू	Top.	भ्रमरम्
पतंग	Kite	चिल्लः-ला, चिल्लासदृशं क्रीडनकं
शतरंज	Chess.	चतुरंगम्

Weaving.

अटियां	Skeins, reels.	पंजि-जी-जिका
कातने वाली	Spinster	सूत्रकर्तिका

काता हुआ सूत	Spun yarn.	सूत्रम्
तकला	Spindle.	तर्कु, तर्कुटी
तागा	Thread.	सूत्रं f., तन्तु:
ताना	Warp.	तंत्र:
धुनना	Carding.	ऊर्णा संमृज्
धुनिया	Carder.	ऊर्णामार्जक:
नली	Shuttle.	मल्लिक:, सूत्रवेष्टनम्
वाना	Woof.	प्रतितंत्र:, वाणि-णी
बेलना	Ginning.	वर्तनयन्त्रं-चक्रम्
मंठे	Bobbins.	तंतुकील:

Names of Relations.

दादा	Grandfather	पितामह:
दादी	Grandmother.	पितामही
नाना	Maternal Grandfather.	मातामह:
नानी	Maternal Grand-mother.	मातामही
पिता	Father.	पितृ, जनक:
माता	Mother.	मातृ, जननी, अंबा
चाचा	Uncle.	पितृव्य:
चाची	Aunt.	पितृव्या
मामा	Maternal uncle.	मातुल:
मामी	Maternal Aunt.	मातुलानी
भाई	Brother.	भ्रातृ, सहोदर:
बहिन	Sister.	स्वसृ, भगिनी
पति	Husband.	भर्तृ, पति
पत्नी	Wife.	पत्नी, भार्य्या, जाया
पुत्र	Son.	पुत्र:, सुत:, तनय:

कन्या	Daughter.	पुत्री, दुहितृ
देवर	Husband's brother.	देवरः
ननद	Husband's sister.	ननांदृ
देवरानी	Husband's Brother's wife.	यातृ
साला	Wife's brother.	श्यालः
साली	Sister-in-law (Wife's sister).	यातृ, ननांदृ, श्याली
भाई की स्त्री	Brother's wife.	भ्रातृजाया
बहिन का पति	Sister's husband.	आवुत्तः, श्यालः
वधू	Son's wife or Daughter-in law.	स्नुषा, वधूः
दामाद	Son-in-law.	जामातृ
पोता	Grand-son.	पौत्रः
पोती	Grand-daughter.	पौत्री
ससुर	Father-in-law.	श्वशुरः
सास	Mother-in-law.	श्वश्रू
पति-पत्नी	Husband and wife.	दंपती, जायापती
सौतीली माता	Stepmother.	विमाता, सपत्नीमाता
सौत	Cowife.	सपत्नी
सौतेला पिता	Stepfather.	विमातुः पतिः
सौतेला पुत्र	Stepson.	सपत्नीसुतः
सौतेला भाई	Stepbrother.	वैमात्रः, अन्योदर्यः
भांजा	Sister's son.	भागिनेयः
भांजी	Sister's daughter.	भागिनेयी
चचेरा भाई	Cousin.	पितृव्यपुत्रः-त्री

Wars and Battles.

मुहासरा	Siege.	उपरोधः, परिवेष्टनम्
रणभूमि	Battle-field.	रण-समर-भूमिः
फ़ौज का दस्ता	Garrison.	दुर्गसैन्यं बलम्
खाई	Ditch.	गर्तः-र्ता, परिखा
बारूदखाना	Magazine.	आयुधागारम्
बारूद	Gun-powder.	आग्नेयचूर्णम्
मुहिम	Compaign.	आक्रमणम्
घुड़सवार	Cavalry.	तुरगबलं, अश्वारोहाः
पैदलसेना	Infantry.	पदातिबलं, पदातयः
हाथियों की सेना	Elephantry.	गजारोहाः
तोपखाना	Artillery.	अग्न्यस्त्राणि
तोप का गोला	Cannon-Ball	रणगुलि, आग्नेयास्त्रम्
सन्धि	Treaty.	संधिः, संधानं
जरावखतर	Armour.	वर्मन्, कवचः-चम्
सैनिक की टोपी	Helmet.	शिरस्त्राणं, शिरस्त्रम्
विद्रोह	Mutiny.	सैन्यद्रोहः
विद्रोही	Rebels.	राजद्रोहिन् m.
तावान	Indemnity.	क्षतिपूरणं, क्षतिनिष्कृतिः
लड़ाई का महाज़	War front.	रणशिरः
झंडा	Standard.	ध्वजः, पताका
लड़नेवाला	Combatant.	योधः, भटः
युद्धनीति	Strategy.	युद्धकौशलं, व्यूहरचनानैपुण्यम्
सेना की खूराक	Provisions.	सामग्री, संभारः
सेनापति	Commandr-in-chief	सेनापतिः
समुद्री सेना	Navy.	नौसमूहः-साधनम्
गोला	Bullet.	सीसकगुलिका
क़त्ल	Slaughter.	विशसनं, प्रमाथः, घातनम्

घरेलू लड़ाई	Civil-war.	जनप्रकोपः प्रकृतिक्षोभः

Canveyances.

असबाबकी गाड़ी	Waggon.	शकटः-टं, प्रवहणम्
घोड़े का साज़	Harness.	अश्वसज्जा, परिच्छदः
(जंगी) जहाज़	(Battle) ship.	पोतः, यानम्
डोली	Liner	शिबिका, याप्ययान
पैहियों की गाड़ी	Vehicle.	यानं, प्रवहणं, रथः
माल का जहाज़	Cargo-boat.	पोतः, यानम्
बैठने का स्थान	Seats.	स्थानम्, आसनम्
यात्रियों का कमरा	Cabin.	नौकाभ्यंतरे कोष्ठः
रकाब	Stirrup.	पादग्रहणी-धारणी
रस्सियां	Riggings.	सज्जा, परिच्छदः
सौदागरी का जहाज़	Merchant ship.	वाणिज्ययानम्
सबमेरीन	Submarine.	समुद्रस्थनौ, वडवा

Buildings.

अखाड़ा	Arena.	मल्लभूः, व्यायामशाला
कड़ियां	Rafters.	दीर्घदारु-काष्ठम्
गोदाम	Store room.	कोशः-षः
गली	Lane.	संकट-पथः-मार्गः
घर की कुरसी	Plinth.	स्तंभमूलं, प्राकारमूलम्
चुंगी खाना	Octroi-post.	कर-गृहः
चौक	Crossing.	चतुष्पथम्
छत	Ceiling.	वितानं, पटलम्
ज़ीना	Stair-case.	सोपानपथः-मार्गः
दहलीज़	Threshold.	देहली, द्वारपिंडी
नींव	Foundation.	प्रतिष्ठापनं, मूलम्

बंद गली	Blind alley.	रुद्धवीथिका
नाली	Gutter, drain.	प्रणालः-ली
शहतीर	Beam.	तुला, स्थूणा
सीढ़ी	Ladder.	निश्रेणि-णी, सोपानपथः
सड़क	Road.	मार्गः, पथिन्

Time and distanc.

पूर्णमाशी	Full Moon.	पूर्णिमा
अमावस	New Moon.	अमावस्या
शुक्लपक्ष	Bright Fortnight	शुक्लपक्षः
कृष्णपक्ष	Dark Fortnight	कृष्णपक्षः
शताब्दी	Century.	शताब्दी, वर्षशतम्
दिन	Day.	दिनं, दिवसः
रात	Night.	रात्रि-त्री, क्षपा
प्रातःकाल	Morning.	विप्रभातम्, उषस्
दोपहर	Noon.	मध्याह्नः
सायंकाल	Evening.	अपराह्ण :, संध्या
दिनरात	Day and Night.	अहर्निशम्

Housohold.

अंगारा	Cinder.	अंगारः-रम्
ईंधन	Fuel.	इंधनं, एधस् n.
कम्बल	Blanket.	कंबलः,उर्णायुः
कालीन	Carpet.	कुथः-था, आस्तरणम्
कड़छी	Ladle.	दर्वि-र्वी
काला छाता	Umbrella.	आतपत्रं, छत्रम्
गद्दा	Mattress.	आस्तरणं, तूलिका
गिलास	Tumbler.	काचपात्रम्
चटाई	Matting.	कटः, त्रि.लिंजम्, आस्तरणम्

चिमटा	Tongs.	कंकमुखम्, संदंशः
जाला	Cob-web.	जालं, सूत्रजालं
झाड़न	Duster.	मार्जनपटः, नक्तकः
झाड़ू	Broom.	संमार्जनी, शोधनी
झूला	Swing.	दोला-ली
ढकना	Lid.	पिधानम्, आवरणाम्
तकिया	Pillow.	उपधानम्
तकिया का गलाफ़	Pillow-case.	उपधानकोशः
तसवीरका चौखटा	Photo frame.	कोशः, आधारः, आवेष्टनम्
देगची	Saucepan.	उखा, पिठरः
पायदान	Door-mat.	पाद्पाशी
नारियल का तेल	Cocoanut oil.	नारिकेलतैलम्
फूलदान	Flower-vase.	पुष्पभानजम्
मालिश का तेल	Lubricating-oil	अभ्यञ्जनतैलं
राख	Ash.	भस्मन् n, भूति, पांशु
शीशा देखनेवाला	Mirror.	दर्पणः, आदर्शः
शीशा	Window-panes.	काचफलकः
रज़ाई	Quilt.	तूला, तूलिका

Miscellaneous.

सुरङ्ग	Tunnel.	सुरंगा, कुल्या
अखाड़ा	Arena.	व्यायामशाला
नाश्ता	Breakfast.	प्रातराशः
सरसों	Mustard.	सर्षपः
मज़ेदार	Delicious.	स्वादु, रुचिकर
ग्रास	Morsel.	कवलः, ग्रासः
मुरब्बा	Jam.	मिष्टान्नं, सधितम्
शराब	Wine.	मद्यं, आसवः, सुरा
ऐब	Vice.	व्यसनं, दोषः

गुण	Virtue.	धर्मः, गुणः, पुण्यम्
सुलूक	Behaviour.	आचारः, व्यवहारः
बुज़दिली	Cowardice.	भीरुता, कापुरुषत्वम्
मनुष्यत्व	Manliness.	पुरुषकारः, पौरुषम्
मेहमाननवाज़ी	Hospitality.	आतिथ्यम्, अतिथिसेवा
ईर्ष्या	Envy.	असूया, ईर्ष्या
हौसला	Perseverance.	धैर्यम्, उद्योगः
नुक्स, कमज़ोरी	Defect.	विकारः, दोषः, न्यूनता
देशप्रेम	Patriotism.	स्वदेश-प्रीति-अनुराग
हलीमी	Humility.	विनयः, नम्रता
ज़िद	Obstinacy.	आग्रहः
निराशावाद	Pessimism.	निराशावादः
आशावाद	Optimism.	आशावादः
श्मशान	Cemetery.	श्मशानः
गुलामी	Slavery.	दास्यं, दासत्वम्
सुगन्ध	Fragrance.	सुगंधः, सौरभं, परिमलः
स्वाद	Flavour.	रसः, स्वादः
नम्रता	Modesty.	विनीत, शालीन
जेबकतरा	Pick-Pocket.	ग्रन्थिभेदकः
सुरमा	Collyrium.	अंजनं, कज्जलम्
खुदाई	Excavation.	विदारणम् , उत्खननम्
चुनाव	Election.	वरणं, नियोजनं
मूसल	Pestle.	मुसलः-लम्
दुमदार सितारा	Comet.	उल्का, धूमकेतुः
अपराधी	Culprit.	अपराधिन्
दण्ड, सज़ा	Punishment.	दण्डः, निग्रहः
न्यायः	Justice.	न्यायः, नयः
अलटीमेटम	Ultimatum.	अंत्यप्रतिज्ञा, चरमाभिसंधिः
दही	Curds.	दधि n.